CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Gīta Govinda
(commentary in-
Brajabhāṣā)

Folio : 80

Pages : 167

INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS

RECORD NO. 55	LANGUAGE Sanskrit + Vrajabhāṣā
ROLL NO. 5 Date of Filming -30-11-95	
ACC NO. 4645	SCRIPT Devanagri
CAT No. 5872	
Bundle No.	
DEC NO. /R. NO.	MATERIAL Paper
DESCRITIVE CATALOGUE/TRIENNIAL CATALOGUE VOLUME : II	
AUTHOR JAYADEVA	NO OF FOLIOS ~~PAGES~~ 80
TITLE GĪTAGOVINDA	COMPLETE/~~INCOMPLETE~~
	Date V.S. 1839
WITH OR WITHOUT COMMENTARY With commentary	REMARKS commentary in Brajabhāṣā verses.
SUBJECT Laghukāvya	LOCATION Vrindaban Research Institute VRINDABAN

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

श्रीगीतगोविंद ग्रंथके आदिमें जयदेवजी श्रीकृष्णजी को स्मरण करि मंगल करत है श्रीराधामाधवजी की एकांतकेलि अति अधिक जमुना के तट शोभित है सु कैसे है राधामाधवजी इहिं भांति वन विषे कुंजप्रति चले है श्रीनंदजी की आज्ञा तैसों कैसी है नंदजी की आज्ञा श्रीनंदजी कहत भए अहो राधा आकाश मेघन करि छायो है अरु वनकी भूमि तेतमालवृक्षनि करि स्याम भई है अरु ये कृष्ण रात्रि विषे कायर है डरपत है तातें तुमहीं इन हरिं ह लेजाऊ एसी

मेघैर्मेदुरमंबरं वनभुवः श्यामास्तमालद्रुमैर्नक्तं भीरुरयं त्वमेव तदिमं राधे गृहं प्रापय इत्थं नंदनिदेशतश्चलितयोः प्रत्यध्वकुंजद्रुमं राधामाधवयोर्जयंति यमुनाकूले रहःकेलयः १ वाग्देवताचरितचित्रितचित्तसद्मा पद्मावतीचरणचारणचक्रवर्ती श्रीवासुदेवरतिकेलिकथासमेतमेतं करोति जयदेवकविः प्रबंधः २

भांति श्रीनंदजी राधाजी सों कहत भए १ श्रीजयदेव नामक कवि या गीतगोविंद नाम प्रबंधहि करत है सो कैसो है प्रबंध श्रीराधाकृष्णजी की जु एकांत क्रीडा ता करि जुक्त मिल्यो है कैसो है जयदेव कवि वाग्देवता जु सरस्वती ताके चरित्र तिन करि चित्रित है मन जिनको पुनि कैसो है जयदेव कवि पद्मावती जो लक्ष्मी तिनकी चरणसेवा तें चक्रवर्त्ती राजा है अर्थ कहा जु सरस्वती लक्ष्मी एकत्र है २

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कवि अपने आपने ग्रंथको प्रयोजन कार्य कहत है। अहो सज्जन ज्यो हरिजू के स्मरण विषै तुम्हारो मन सरस है। अरु श्रीहरि-
जूकी ज्यो विलास कला तिनहि जानिबेकी ईछा है जो जयदेवकी वाणी सुनहु। सो कैसी है वाणी सरस है अर्थ जाको कोमल
है पद जा वाणी मे। ताहीतैं मन हि हरति है ॥३॥ अब कवि और शृंगार ग्रंथनि मै आपने ग्रंथमे बहुत गुण प्रगट करत है सो
ईक हतु है। उमापति धरनाम जु कवि ते वचन विस्तार बहुत करत हैं। परि और शृंगारके गुण कछु नही जानत। अरु जो

यदि हरिस्मरणे सरसं मनो। यदि विलासकलासु कुतूहलं। मधुरकोमलकांतिपदावलीं। शृणु तदा जयदेवसर-
स्वतीं ॥३॥ वाचः पल्लवयत्युमापतिधरः संदर्भशुद्धिं गिरां। जानीते जयदेव एव शरणं श्लाघ्यो दुरूहद्रुते ॥ शृं-
गारोत्तरसत्प्रमेयरचनैराचार्यगोवर्द्धनः स्पर्द्धी कोपि न विश्रुतः श्रुतिधरः धोयीकविक्ष्मापतिः ॥४॥

वर्द्धनाचार्य नाम जो कवि ते शृंगार करत है। परंतु जिनकी बराबरि कोऊ सुनियत नाही। परि मेरे ग्रंथमें शृंगार और पुनि
गुण है तातै गोवर्द्धनाचार्य के ग्रंथमे मेरे ग्रंथकों पूजवत नाहि मैं। अरु धोयी कवि नाम जो कवि ते श्रुतिधर कहियत है। ज्यो
सुनही सुनरू लहिं। अरु बडे कवि है। परि अर्थ उनपे नाही। तातै अर्थकी शब्दकी बात हो ही जानहो। अरु ग्रंथका रूप अनेक
होजाइ ताको मैं वेगि कहत हो। तातै सब कविनको शरण मेरो ई ग्रंथ है। या भांति श्रीजयदेवजी आपने ग्रंथके गुण प्रगट करत भए।४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गी०टी०

अहो केशव तुम वेद उधारिवेकौं धर्यो है मीनरूप जिन ऐसे अहो जगदीश भक्तिनि के दुःख हरणहार तुम्हारो जय होउ
२ अ कैसे हो तुम प्रलयकालको जो समुद्र ता विषे मैं होत ज्यो हैं वेद तिन्हें हि विनाही कष्ट उधरत जहो सो कैसे प्रलयसमुद्र
विषे वेदनि उधारिवेकौं जिहाज के चरित्र हि करत हो सु कहा जैसे और समुद्र मैं बूडै ताकौं जिहाज शरण होइ तैसे
प्रलयसमुद्र महि वेदनको शरण भए १ अहो केशव धर्यो है कछपरूप जिन ऐसे अहो जगदीश तुम्ह जय जु करो ज

प्रलयपयोधिजले धृतवानसि वेदं विहितवहित्रचरित्रमखेदं केशव धृतमीनशरीर
जय जगदीश हरे १ क्षितिरतिविपुलतरे तव तिष्ठति पृष्ठे धरणिधरणकिणचक्रगरिष्ठे केशव धृतकछपरूप
जय० २ वसति दशनशिखरे धरणी तव लग्ना शशिनि कलंककलेव निमग्ना केशव धृतशूकररूप जय जगदीश
हरे ३

तुम कैसे है जिनकी अति विशाल पीठ है तापरि भूमि रहति है सो वह पीठि कैसी है सर्वदा भूमिको जो धरिबो ताते भ
एजु घारे तिन करि कठोर है २ अहो केशव धृत धर्यो है शूकररूप वाराहरूप जिनि ऐसे ज्यों हो तुम तिनकी दाढ विषे ४ स २
भूमि लगी शोभित है सो भूमि कैसी दिषियत है चंद्रमा विषे जैसी कलंककी रेषा ऐसे अहो जगदीश संसार के स्वामी तुम ज

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धृतधर्‍यो है नरसिंघरूप जिन ऐसे केशवजी तुम्हारे हस्तकमलविषे भृंगसमान अद्भुतनख शोभे तिननखनिकरि
फार्‍यौं है हरिनकशिपकौ हृदय जिनकरि ऐसे जगदीश तुम जयजुक्त होऊ ४ धृतधर्‍यो है अद्भुतवामनरूप जिन
ऐसे केशवजी संसारस्व तुम कौ जयजुक्त होऊ सौ कैसे हो तुम चरननिकी जो राशि ताति नकरि छल्यो है वलिराज ।
जिन अरु ततीयचरनकरिके ब्रह्मांड भेदिकरि परमपवित्र गंगाजी तिन्हें हि प्रगट करि उमस्यो है त्रैलोक जिन ५

नवकरकमलवरे नखमद्भुतशृंगं दलितहिरण्यकशिपतनुभृंगं केशवधृतनरहरिरूपजय० ४ छलयसि
विक्रमणे वलिमद्भुतवामन पदनखनीरजनितजनपावन केशवधृतवामनरूप० ५ क्षत्रियरुधिरमये जगद
पगतपापं स्नपयसि पयसि शमितभवतापं केशवधृतभृगुपतिरूपजय० ६ वितरसि दिक्षु रणे दिक्पतिक
मनीयं दशमुखमौलिवलिं रमणीयं केशवधृतरामशरीरजय ७

धृतधर्‍यो है भृगुपतिरूप कहे परसरामरूप जिन ऐसे केशवजू तुम क्षत्रियनकौं रुधिर जो जलता विषे सकलविस्व
हि स्नानकरावत हो अरु पापरहित करत हो अरु संसारजनित संताप दूरि करत हो ऐसे जगदीश तुम्ह कौ जयजु
क्त होउ ६ धृतधर्‍यो रामचंद्ररूप जिन ऐसे केशवजू संग्रामविषे दूं दशदिशिपालनकौं तुम्ह कल्याणवांछत हो अरु रावण
के जो दशमस्तक तिन्हकरि दशऊ दिशानकौं वलि देत भए ऐसे जो जगदीशजी ते जयजुक्त होऊ ७ श्रीमद्राधागोविंद

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गी० टी० २

धृतधर्‍यो है बालभद्ररूप जिन ऐसे प्रभु तुम्ह उज्जल शरीर विषे वस्त्र हि धरत हो। सो वस्त्र कैसो है। मेघसमान वर्न जाको। व
हरि कैसे है हल के भय तें श्रम भई जो जमुना ता समान नील है ऐसे जो हलधररूप जगदीश तुम्हारी जय हो ७। ऐसे हो बुद्धअ-
वतार परम दयाल हो। अंतःकरण जिनको ऐसे जो तुम्ह जग्य की विधि ता महि ऐसो जो वेद ताहि निंदत हो। सो कैसो जग्य विधा
न जामहि पशु को घात होत है। ऐसे बुद्धरूप जगदीश जी तुम्हारी जय होऊ ९ धृत धर्‍यो है कलकी रूप जिन ऐसे तुम्ह म्लेछ

वहसि वपुषि विशदे वसनं जलदाभं हलहतिभीतिमिलितयमुनाभं केशवधृतहलधररूप ज
यजगदीसहरे ८ निंदसियज्ञविधेरहह श्रुतिजातं सदयहृदयदर्शितपशुघातं केशवधृतबु
द्धशरीरजयजगदीशहरे ९ म्लेछनिवहनिधने कलयसि करवालं धूमकेतुमिव किमपि करालं
केशवधृतकल्किशरीर १० श्रीजयदेवकवेरिदमुदितमुदारं शृणुसुखदंशुभदंभवसारं केशवधृ

निको जो समूह ताहि मारिवे को खड्ग धर्‍यो है सो खड्ग कैसो है धूमकेतु जो है अग्नि ता समान भयानक है सो कहा जो अग्नि
की नाई म्लेछनि को भस्म करत है ऐसे कल्की रूप जगदीश ते जय युक्त होऊ १० धृत धर्‍यो है दशप्रकार रूप जिन ऐसे तुम्ह
जय युक्त होऊ श्री जयदेव कवि कहत है यह जो मेरो ग्रंथ ताहि भक्ति सुं सुनु सो ग्रंथ कैसो है मनोहर है अरु सुख दायक है

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अवपांछिली अष्टपदी कौ अर्थ या श्लोक करि कहत हैं ऐसे जु श्रीकृष्णजी तिन्हकौं मेरी नमस्कार सो कैसे हैं मीनरूप धरिक
रिजिन्ह वेद उद्धरे वहुरि कूर्मरूप करि जगत संसार हि धरत हैं वहुरि वाराहरूप धरि भूमि कौ उद्धार करत हैं वहुरि नृसिं
घरूप धरि वलि कौं छलत हैं वहुरि परसरामरूप धरि क्षत्रियन्ह कौ नाश करत भए वहुरि रामचंद्ररूप धरि रावण कौ व
ध करत भए वहुरि वलभद्ररूप धरि हल आयुध जिन्ह धर्यो वहुरि वुद्धरूप धरि दया विस्तारत भए वहुरि कल्कीरूप ध

वेदानुद्धरते जगन्निवहते भूगोलमुद्बिभ्रते दैत्यं दारयते वलिं छलयते क्षत्रक्षयं कुर्वते पौलस्त्यं जयते हलं कलय
ते ते कारुण्यमातन्वते म्लेच्छान्मूर्छयते दशाकृतिकृते कृष्णाय तुभ्यं नमः श्रितकमलाकुचमंडल धृतकुंडल ए
कलितललितवनमाल जयजयदेव हरे १ दिनमणिमंडलमंडन भवखंडन ए मुनिजनमानसहंस जयजयदेव हरे २

रि म्लेछन कौ नाश करत भए या भांति धरे हैं दश रूप जिन्ह ऐसे जु श्रीकृष्णजी तिन्ह कौं दंडवत करत हों १ अहो देव परमेश्वर तुम्ह
जयजुक्त होऊ सो तुम्ह कैसे हो आश्रय है लक्ष्मीजी के कुचमंडल जिन्हें वहुरि कैसे हो धत धर्यो है मकराकृत कुंडल जिन
वहुरि कैसे हो कलित पहरी है ललित सुंदर वनमाला जिन १ अहो देव हरि तुम्ह जयजुक्त होऊ कैसे हो तुम्ह दिनमणिमंड
लजो सूर्यमंडल ताकौ मंडन आभूषण हो वहुरि कैसे हो भव जु है जन्म मरता कै षंडन हरि कर्ता हो वहुरि कैसे हो मुनिजन जु
रिषीस्वर तिनकौ जो मानस हृदय ता विषै हंस हो २

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गी० टी० अहो प्रभु तुम्ह जय युक्त होऊ सो कैसे हो तुम्ह कालियसर्प के जीतनहारहो वकारि कैसे हो जनजो हैं लोक तिनकों रंजनसु
४ खदायक हो वकारि कैसे हो जादववंश हैं जु नलिनकमल ताकौं दिनेश सूर्य हो ३ अहो देव तुम्ह जययुक्त होऊ सो कैसे
हो तुम्ह निर्मल जो हैं कमलदलता समान नेत्र जिनके वकारि कैसे हो भवकहिए संसार ताके मोचन दूरिकर्त्ता हो वका

कालियविषधरगंजनजनरंजनए यदुकुलनलिनदिनेश जय जय देव हरे ३ अमलकमलदललोचनभवमो
चनए त्रिभुवनभवननिधान जय जय देव हरे ४ मधुमुरनरकविनाशनगरुडासनए सुरकुलकेलिनिदान
जय जय देव हरे ५ जनकसुताकृतभूषणजितदूषणए समरशमितदशकंठ जय जय देव हरे ६ श्रीगोपाल

रि कैसे हो त्रिभुवन जो हैं त्रैलोक्य सोई जो भुवन घर ताके निधान निधि हो ४ अहो प्रभु तुम्ह जय युक्त होऊ सो कैसे हो तुम्ह
मधु दैत्य मुर दैत्य नरकासुर इन के मारनहारहो वकारि कैसे हो गरुड है आसन वाहन जिनके वकारि कैसे हो सुरकुल जो
हैं देवकुल तिनकी जु केलि क्रीडा ताके निदान कारण हो ५ अहो देव तुम्ह जययुक्त होऊ सु कैसे हो तुम्ह जनकसुता जो सी
ता जी तिनकौं कृत कीयो है आभूषन जिन वकारि कैसे हो जित जीत्यो है दूषण नाम राक्षस जिन वकारि कैसे हो समरसंग्राम

विशमनिताभौदेशाकंठबलाहिताश्च

कृ० ४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऐसे अहो प्रभु तुम्ह जयजुक्त होऊ सो कैसे हो तुम्ह अभिनव नूतन जु है जलधर मेघ तैसो सुंदर है वर्ण जिनको बहुरि कैसे हे
धृतधर्यो है मंदर पर्वत जिन बहुरि कैसे हो श्री जु लक्ष्मी तिनको जु मुख सोई जु चंद्रमा ताको चकोर हो ७ श्रीजयदेव
कहत है अहो प्रभु तुम्हारो चरननि कौ नमस्कार करत है ऐसे जु शरण आए जन तिन्हकों कुशल करऊ अरु जयजुक्त
होऊ ८ अर्थ अहो प्रभु जयदेव कवि की यो जो है यह गीत सु मंगलीकनि को कल्याणकारी है अरु आनंद हि करत हैं

अभिनवजलधरसुंदर धृतमंदर ए श्रीमुखचंद्रचकोर जय जय देव हरे ७ तवचरणे प्रणता वयमिति भावय ए कु
रु कुशलं प्रणतेषु जय जय देव हरे ८ श्रीजयदेवकवेरिदं कुरुते मुदं मंगलमुज्ज्वलगीत जय जय देव हरे ९ प
द्मापयोधरतटीपरिरंभलग्नकाश्मीरमुद्रितमुरो मधुसूदनस्य व्यक्तानुरागमिव खेलदनंगखेदस्वेदांबुपूरमनु पूरयतु वांछितं वः

अब कवि कामोद्दीपन है ताते बसंतरितु वर्णन कर्यो चाहत है भक्तनि कौं आसीर्वाद देत है मधुसूदनजी को जु वक्षस्थ
ल सु तुम्हारो अभिलाष पूर्न करो सो कैसो है वक्षस्थल पद्मा जु लक्ष्मी तिनको जु आलिंगन ता ते लाग्यो ज्यों कुंकुम ताक
रि चिन्हित है सु कुंकुम ताकरि आरक्त ना ही मानऊं अनुराग प्रीति प्रगट भई है अरु एकांत क्रीडा ते उपज्यो है श्रमकण

ताको हृदयस्थल तेहि ॥२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गी०टी० वृजरिकैसोहैवसंत॥ अधिकउपज्यौहैमदनकोअभिलाषजिनके असेपथिकवधूजनविरहिनीतिनकरिओ
कोऊएकजोराधाजीकीसषीसोंवसंतविषैराधाजीकोरसपूर्वककहतिभई कैसीहैराधाजी माधवीकेजोफूलतैसेकोमल
५ हैअंगजिन्हके॥ वजरिकैसीहैंराधाजी वनविषैफिरतिहैं वजरिकैसीहैराधाजी दूतीसोंबारबारकृष्णजीकेंमिलनको
जतनकरतेहैं॥ वजरिकैसीहैंराधाजी वज़तउपजीजोकामपीडातातेअतिआकुलभईहै २ एकसखीराधाजीसोंक

वसंतेवासंतीकुसुमसुकुमारैरवयवै भ्रमंतीकांतारेवज़विहितकृष्णानुसरणं अमंदंकंदर्पज्वरजनितचिंताकुल॥
तया वलद्बाधांराधांसरसमिदमूचेसहचरी २ ललितलवंगलतापरिशीलनकोमलमलय
समीरे॥मधुकरनिकरकरंवितकोकिलकूजितकुंजकुटीरे विहरतिहरिरिहसरसवसंते नृत्यतियुवतिजनेनसमंस

हतिहै अरीराधाश्रीकृष्णजीअतिसरसजोहैवसंततामिषैविहारकौकरतहै अरुजुवतीनकेसमूहनिमिलिनृत्यकरतहै
सोकैसोहैवसंत विरहीजनकोदुःखदायकहै वजरिकैसोहैवसंत ललितमनोहरजुहैलवंगनकीलतातिनकोजुपरिशील हल
नमिलिवोताहीतेंपरमसुखदायकवज़तहै मलयपर्वतकोवायुजाविषैं वजरिकैसोहैवसंत भ्रमरनिकेंजोसमूहतासोंमिली ५
जुकोकिलातिनकोजुकूजितशब्दताकरिशोभितहैकुंजजाविषै १

वहुरि कैसो है वसंत ॥ अधिक उपज्यो है मदन को अभिलाष जिनके ऐसे पथिकवधूजन विरहिनी तिन ते उपज्यो है विलाप
जाविषे ॥ वहुरि कैसो है वसंत अलिकुल ज्यो है भ्रमरसमूह ताकरि व्याप्त जो है कुसुमसमूह तिन करि शोभत है वोलसरी के
वृंद जाविषे ॥ फिर कैसो है वसंत सब वन सुगंध करि चित्रविचित्र त है फूल फल जाविषे २ वहुरि कैसो है वसंत मृ

उन्मदमदनमनोरथपथिकवधूजनजनितविलापे अलिकुलसंकुलकुसुमसमूहनिराकुलवकुलक
मृ लापे ॥ २ मृगमदसौरभरभसवशंवदनवदलमालतमाले युवजनहृदयविदारणमनसिजनखरुचिकिंशुक
जाले ३ ॥

गमद जो है कस्तूरी ताको जो सौरभ कहीये सुगंधता को जु रभस कहीये आधिक्यता के वस करणहार जो है नए तमालपत्र
तिन करि शोभित है सों कहा नूतन तुतमालपत्र ते कस्तूरी के गंध हि जीतत है वहुरि कैसो है वसंत युवजन जो है तरुन
जनि तिनके हृदय को जो विदारन करीम निसिज कामता के नखनि अनुसरत है किंशुकजाल के सूके फूल जाविषें जा
३

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गी॰टी॰ ६ बकुरिकैसोहेवसंत॥ मदनमहीपतिराजाको जोंमुवर्नकोहेदंडहेजाके ऐसोजोंछत्रताससमानदेखियतहेनागकेस
रकेफूलजाविषें सोकहानागकेशरकेफूलनहोइकामराजाकोछत्रहेमानऊं बकुरिकैसोहेवसंत वैसेहैभ्रमरजिन
परएसेजुपाडलकेफूलतिनकरिकीनोहेकामकेतरकसकोविलासजाविषें सोकहा पाडलकोफूलनहोइकाम
कोतरकसहेमानऊं॥४ बकुरिकैसोहेवसंत शिथिलहैअंगजिनकेताहीतेंगईहैलाजजिनकी ऐसेजोलोकति

मदनमहीपतिकनकदंडरुचिकेशरकुसुमविकासे मिलितशिलीमुखपाटलिपटल
कृतस्मरतूणविलासे॥४ विगलितलज्जितजगदवलोकनतरुणकरुणकृतहासे विर
हिनिकृंतनकुंतमुखाकृतिकेतकीदंतुरिताशे॥५ श्रीराधागोविंदकृपासिंधुविजयते

नकोजोंदेषिवोताकरितरुणमनुष्यनिकीनेहेहे करुणवृक्षकेफूलनकेमिसकरिहास्यजाविषें सोकहा करुणवृक्ष
नाहींफूलोहेडमनुष्यनिदेषितरुणहसतहैमानऊं करुणकेफूलसेतहोतहेंअरुहासीसुनिसेतवर्णिजतिहे तातेंय
हउप्रमादीनी बकुरिकैसोहेवसंत वियोगीजोपुरुषतिनकोजोनिकृंतनमारिवोताकेकारणकुंतजुहैबरछीताकेफलस हस ६
मानदेषियतहे केतकीकोफूलजाविषें सोकहा केतकीकोफूलनहोइविरहीजनमारिवेकोकामदेवकोबरछीहेमानऊं॥५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

वक्रुरिकैसोहैवसंत॥माधवीकेजोफूलतिनकोजुपरिमलतिनकरिललितमनोहरहै॥वक्रुरिकैसोहैवसंत॥मालतीके
जोफूलअरुजाइकेजोफूलतिनकरिसुगंधहै॥वक्रुरिकैसोहैवसंत॥रिषीस्वरनिहूंकेजोमनतिनहूंकोंकामउपजावत
है॥वक्रुरिकैसोहैवसंत॥तरुणपुरुषतिकोंमहजमित्रहै॥६॥वक्रुरिकैसोहैवसंत॥चंचलहोतजोहैमाधवीकीलतताको
जोपरिरंभणआलिंगनताते॥पुष्पितकहेफूल्योहैवजाविषे मुफूलनहोइलताकैंआलिंगनतैंरोमांचहैमानहूं॥श्रीराधा

माधविकापरिमलललिते नवमालतिजातिसुगंधौ॥ मुनिमनसामपिमोहनकारणि तरुणाकारणवंधौ॥६॥ स्फुरदति
मुक्तलतापरिरंभणमुकुलितपुलकितचूते॥ वृंदावनविपिनेपरिसरपरिगतजमुनाजलपूते॥७॥श्रीजयदेवक॥
वेरिदमुदयतिहरिचरणस्मृतसारं॥सरसवसंतसमयवनवर्ननमनुगतमदनविकारं॥८॥ श्रीनंदकीशोरविजयः

जोसोसखीकहतिहै॥श्रीराधाएसेवसंतरितुहिपाइकरिश्रीकृष्णवृंदावनकेकुंजनिविषैक्रीडाकरतहैं॥सोकैसोहैकुंज॥
निकटप्राप्तभयोजोजमुनाजलताकरिपवित्रहै॥७॥श्रीजयदेवकविकोजोयहगीतसोउदयकोंप्राप्तहोतुहै॥कैसोहैगीत॥
श्रीकृष्णजीकेजोचरणकमलतिनकोजोस्मरणसोईकह्योहैसारजाविषै वक्रुरिकैसोहैगीत॥अतिसरसजोवसंतरितुताविषै

षेकीयोजोवनवर्णनताते प्रगटहोतहैकामविलासजाविषै

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गी०टी० वसंतकोजोवायुसोविरहीनकेचित्तकोंदहतुहै सोंकाहेकर फूलीजोमल्लीताकोजोपरागसोईजोंनयोत्र्यवीरताकरिका
७ ननजोंवनताहिसुगंधरत केसोहैवायु केतकीकेगंधसहितहै बकुरिकेसोहैवायु पसरतहैं जोकामबाणतिनकोजीव
हैमानकूाण॥ वसंतकेजोदिनताकोसोदीपनकरै सोईकहतहै वसंतरितुकैसोहै याविषेपरदेसस्थितजोहैकंतहै॥

दरविदलितमल्लीवल्लिचंचत्परागप्रगटितपटवासैर्वासयन्काननानि इहहि द
हतिचेतः केतकीगंधबंधुप्रसरदसमबाणःप्राणवद्गंधवाहः ॥१॥ उन्मीलन्मधुगंध
लुब्धमधुपव्याधूतचूतांकुरक्रीडत्कोकिलकाकलीकलकलैरुद्गीर्णकर्णज्वराः नीयं
ष्या तेपथिकैःकथंकथमपिध्यानावधानक्षणप्राप्तप्राणसमासमागमरसोल्लासैरमीवासराः ॥२॥

तिनकोजोरूपलीतीनकुदिनइषकरिकरतहै सोंकैसोहैवसंतदिन प्रगटनयोजोंपुष्परसतासोंलुब्धजोत्र्यमरतिनकरि
कंपितजुत्र्याचकीमंजरीतिनविषेक्रीडाकरतहैंजोकोकिलातिनकोजोमधुरशब्दतिन्हकरिबढ्यतउपजतहै दुःखति कृष्ण ७
नदिवसनिविषे केसेहैपथिकजन ध्यानकरिपायोजोप्रियासंगताते उपजरसाधिक्यजिनको॥२॥ श्रीकृष्णायनमः॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

वहुरि सखी श्रीराधाजी कों श्रीकृष्ण दिखावति कहति है। कैसे है श्रीकृष्णजी अनेक जो नारी तिनको जो आ-
लिंगन ताते उपजत जो आनंद ता करि सोभायमान जो विलास ता विषे है उछंग जिनके [illegible] सखी क-
हति है अरी श्रीराधा ऐसो जो वसंत ताके विषै सुंदरीन के जो समूह ते क्रीडा करत है। अरु तिनहि मिलि श्रीकृष्ण क्री-
डा करत है सो कैसे है श्रीकृष्णजी चंदन करि चर्चित है श्याम शरीर जिन्हको अरु पीत है वसन जिन्हको अरु वन-

अनेकनारीपरिरंभसंभ्रमस्फुरन्मनोहारिविलासलालसं मुरारिमारादुपदर्शयंत्यसौ सखी समक्षं पुनराह राधिकां
[illegible] चंदनचर्चितनीलकलेवरपीतवसनवनमाली केलिचलन्मणिकुंडलमंडितगंडयु-
गस्मितशाली हरिरिह मुग्धवधूनिकरे विलासिनि विलसति केलिपरे ॥ध्रु०॥ पीनपयोधरभारभरेण हरिं परिरभ्य

माला हि पहीर है। वहुरि कैसे है श्रीकृष्णजी क्रीडा करत चपल भए जो मणिजटित कुंडल तिन्ह करि शोभा हि पावत जो
है कपोल तिन्ह करि अरु मंद हास्य जो मुसकानि ता करि शोभत है १ सो गोपीनि की क्रीडा वर्णति है राधाजी की सखी राधा-
जी सों सोई कहति है कोई एक गोपी सो पंचम राग करि गावति है सो कहा करि कैं पीन कहे बडे जो पयोधर स्तन तिन्हकों जो
भार ता करि श्रीहरिजू कों प्रीति सहित आलिंगन देकरि २

गी॰टी॰ ८ सखीकहतिहैश्रीकृष्णजीतिनकोजोमुखकमलताकोध्यानकरतिहै सुकैसोहैमुखकमल विलासपूर्वकविलोल
चंचलऐसेजोविलोचननेत्रतिनकोषेलनजोंकटाक्षचितवनितताकरिजनितउपजायोहैमनोजकंदर्पजामुख
कमलकरि ३ वळरिसखीकहतिहैराधाकोकथकजोंहैगोपीसोंहरिजूकरिसराही सोकैसीहैगोपीरासको
जोरसतातिविषैश्रीकृष्णकेसंगनृत्यकरतहैं सोकैसोहैनृत्यहस्तकीजोंताळीतिनकरिदीनेजोचंचलपुटादिता

सरागं गोपवधूरनुगायतिकाचिदुदंचितपंचमरागं २ कापिविलासविलोलविलोचनखेलनजनितमनोजं ध्या
यतिमुग्धवधूरधिकंमधुसूदनवदनसरोजं ३ करतलतालतरलवलयावलिकलितकलस्वनवंशे रासर
सेसहनृत्यपराहरिणायुवतिःप्रशसंशे ४ कापिकपोलतलेमिलितंलपितुंकिमपिश्रुतिमूले चारुचुचुंबनितंब

लतिनकेदेतचंचलनएजोकंकणतिनकरिमधुरभयोजोझणकारताकरिशोभतहै मुरलीकोशब्दजाकेसवि कृष्ण ८
षे ४ सखीकहतिहैअरीराधाकोकथकजोगोपीसोश्रीकृष्णजीकेकपोलविषैचुंबनदेतभई सोकैसेहैकपो
ल सात्विकभावकेजोरोमांचतिनकरिअनकूलनयोहै कैसेहैश्रीकृष्णजी कछूएकजोंरहस्यकीवाततांहि
कहिवेकोकर्णकेनिकटप्राप्तभएहै ५ १८

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मापद्करिश्रीकृष्णजीकीव्रजवल्लभतावर्णियतहै। सोईसषीराधाजीसौंकहतिहै कोऊएकजोगोपीताहिश्रीकृष्णजी
आलिंगनदेतहैं।। काहूकौंचुंबनदेतहैं।। काहूकौंरमावतहैं काहूकौंदेषिमुसकातहैकटाक्षकरिचितवतहै। वह
रिकाहूकेसंगउभिचलनहै। ऐसीभांतिक्रीडाकरतहै॥ ६ सषीकहतहै अहोराधाकोऊएकगोपीएकांतक्रीडाकेलि

श्लिष्यतिकामपिचुंबतिकामपिकामपिरमयतिरामं पश्यतिसस्मितचारुतरामपरामनुगछतिवामं ६ केलिकलाकुतुके
नचकाचिदमुंयमुनाजलकूले। मंजुलवंजुलकुंजगतंविचकर्षकरेणदुकूले ७ श्रीजयदेवभणितमिदमद्भुतके
शवकेलिरहस्यं। विपिनविनोदकलाकलितंवितनोतिशुभानियशस्यं ८ विश्वेषामनुरंजनेनजनयन्नानंद
मिंदीवरश्रेणीश्यामलकोमलैरुपनयन्नंगैरनंगोत्सवं स्वछंदंव्रजसुंदरीभिरभितोप्रत्यंगमालिंगितः श्रृंगारःस

मित्रजमुनातटविषैंजोवेतकोवनतहांप्रासन्नएजोश्रीकृष्णतिन्हहिंपीतांबरपकरिखेंचतभई ७ श्रीजयदेवकविकरि
कहीजोंश्रीकृष्णजीकीएकांतक्रीडासोअनजोहैकल्याणतिन्हहिकरोसोकैसीक्रीडाहै परमअद्भुतहैअरुबनविषैजो।
केलिकलाअतिचातुरीतासहितहै अरुजाकेसुनतउसुहोतुहै ८ सषीकहतिहैअरीराधामनोहरजोहरितेवसंतवि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

ऐसे क्रीडा करत हैं॥ हरि कैसे हैं॥ मूर्तिवंत शृंगार हैं मानहुं॥ सो कहा करत॥ सब गोपीन्ह के मन को अनुरंजक वचननि करि आ
नंद देत अरु नीलकमल समान जे अंगनि न्ह करि कामउत्सव हि बढावत क्रीडत हैं॥ १ अब याह्य जो कह्यो वसंत रितु
ताहि श्रीराधाजी के आगें सखी वर्नति है॥ अरी राधा देखि आजु मलयपर्वत तें निकट सब तें सर्पनि न्ह करिकी न्हैं हैं प्रान
ताको ताही तें भयो जो संताप ताहि दूरि करिवेकों मलयवायु कैलासपर्वत के हिम सेतरिवे की इछ्या करि आवत है अ

स्वि मूर्तिमानिव मधौ मुग्धो हरिः क्रीडति॥ १ अद्योत्संग वसद्भुजंग कवलक्लेशादिवेशाचलं प्रालेयप्लवनेछया
नुसरति श्रीखंडशैलानिलः॥ किंचित्स्निग्धरसालमौलिमुकुलान्यालोक्य हर्षोदयादुन्मीलंति कुहूः कुहूरिति कलो
त्तालाः पिकानां गिरः॥ रासोल्लासभरेण विभ्रमभृतामाभीरवामभ्रुवामभ्यर्णे परिरभ्य निर्भरमुरः प्रेमांधया राधया॥

र्यं कह्यो जो त्रिविधि पवन वहतु है और फूलनि अति सुंदर जो आवके बौरनि न्ह हि देखि भयो है अति अधिक हर्ष जिन्ह के ऐसे जो
कोकिल मधुर अरु ऊंचा इ ले कुहू कुहू ऐसे शब्द बोलत हैं॥ २ कवि कथा को प्रसंग छोडि कें श्लोगनि कों आशीर्वाद देतु हैं श्री
कृष्ण तुम्हारी रछ्या करहु सो कैसे हैं श्रीकृष्णजी रासविषें जो उल्लास ता में गोपीन के समक्ष दृढ आलिंगन देकरि श्रीराधाजी की
नो है चुंवन जिन्ह कों॥ बहुरि कैसे हैं श्रीकृष्णजी मंद हास्य करि मन हरत हैं॥ २

साधुत्वद्वदनंसुधामयमितिव्याहृत्यगीतस्तुतिव्याजाद्
उद्भटचुंवितःस्मितमनोहारीहरिःपातुवः॥४९॥

कल
४

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीराधाजीएकांतविषेंपधारिसखीसोंकहतिहैं। कैसीहैराधाजी राधाजीसों अरुगोपीनसोंसमानप्रेमकरिश्रीकृष्णजीके
विहारकरतभईजो आपनेसोहागकीहानितातेंखिझिकरिओरगेरपधारीहैं ताहीतेंकुंजनिमेंदूरिबैठीहैं सोकैसो
हैकुंज बोलतजोपक्षीअरुगुंजतजोभ्रमरसमूहतिन्हंकरिशोभतहैं वहुरिकैसीहैराधाजी भईजोमानहानितातें
अतिदीनभईहै॥१॥अबराधाजीएकांतविषेंआपनीसखीसोंकहतेहैं अरीसखीएसैजोहरितिनकोंमेरोमनस्मरतु

इतिश्रीगीतगो[illegible] विहरति वने राधा साधारण प्रणये हरौ विगलित निजो
त्कर्षादीर्ष्यावशेन गतान्यतः क्वचिदपि लताकुंजे गुंजन्मधुव्रतमंडलीमुखरशिखरेलीना दीनाप्युवाचरहःसखीं॥१॥
[illegible]॥ संचरदधरसुधामधुरध्वनिमुखरितमोहनवंशं चलितदृगंचलचंचलमौलिकपोलविलोलवतंसं॥२॥

है कैसेहैहरि रासक्रीडाविषेंकीनोहै विलासजिन वहुरिकैसेहैहरि करतकीनोहैपरिहासहास्यजिन्ह वहुरि॰
प्रसरतहैअधरामृतजाकेविषें ऐसोजोमधुरशब्द ताकरिबजायोहैमोहनवंशजि वहुरिकैसेहैहरि चंचलहोत
जोकटाक्षतिनसोंमिलेचंचलहोतहैमस्तकअरुकपोलजिनके कैसेहैकपोलचंचलहै अवतंसकर्णाभरणजाकपोल
विषे॥२॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गी०टी० वक्रारिकैसेहैहरि॥ अतिविचित्रजोहैमयूरचंद्रिकातिनकोजोमंडलसमूहतिनकरिवेष्टितहैंकेशजिनकेअर्थय
१० हजोमुकटपहिरेहैं॥ ताहीकरिइंद्रधनुषसहितअतिस्निग्धजोहैमेघतासमानवेषजिनके॥१॥ वक्रारिकैसेहैहरिगो
पकदंबजोहैंग्वालनकोसमूहतिनकीजोनितंववतीस्त्रीतिनकोजोमुखतिनकोजोचुंबनताविषैंबांध्योहैलोभजि

नसेहरिमिहाविहितविलासंस्मरतिमनोममकृतपरिहासं चंद्रकचारुमयूरशिखंडकमंडलवलयि
तकेशं॥ प्रचुरपुरंदरधनुरनुरंजितमेदुरमुदिरसुवेशं २ गोपकदंबनितंववतीमुखचुंबनलंभितलोभं॥ वं
धुजीवमधुराधरपल्लवमुल्लसितस्मितशोभं॥३॥ विपुलपुलकभुजपल्लववलयितवल्लवयुवतिसहस्रं॥
करचरणोरसिमणिगणभूषणकिरणविभिन्नतमिस्रं॥४॥

न॥ वक्रारिकैसेहैहरिबंधुजीवजोहैदुपहरियाकोफूलतासमानआरक्तहैअधरजिनके वक्रारि॰ मगटभयोजोमंद द
सताकरिशोभितहै॥३ वक्रारिकैसेहैहरि वक्रारिजएहैरोमांचजिनविषेंऐसेजोहस्तकमलतिनकरिआलिंगीहैगोपीस कृ०
हस्रजिनकरि हस्तनिविषैंचरणनिविषैंअरुहृदाविषैंपहिरीहैजोमणिजटितआभूषणतिनकीजुकांतिताकरिदूरि १०
कीनोहैअंधकारजिन॥४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

वहुरि कैसे हैं हरि जलदपटल जो है मेघसमूह ताविषै भ्राम जो है चंद्रमा ताकी शोभा कों जीतनहार असो जो स्वेत चंदन तिल
क सो है ललाट विषै जिनकें ॥ वहुरि कैसे हैं हरि गोपिकान के जो अतिस्थूल स्तन तिनको परिसरमर्द्दन जो गाढ़ आलिंग
नता विषै निर्दय है दयाकरि रहित हृदय जिनको ५ वहुरि कैसे है हरि मणिमय जो मकराकृत कुंडल तिनकरि शोभत है
अति सुंदर कपोल जिनके वहुरि॰ पीन है वक्ष जिनको वहुरि॰ अनुगत सेवा करत हैं असे जो रीषी स्वर अरु मनुष्य सु

॥ जलदपटलचलदिंदुविनिंदकचंदनतिलकललाटं पीनपयोधरपरिसरमर्द्दननिर्द्दयहृदयकपा-
टं ५ मणिमयमकरमनोहरकुंडलमंडितगंडमुदारं पीतवसनमनुगतमुनिमनुजसुरासुरवरपरिवा
रं ६ विशदकदंवतले मिलितं कलिकलुषभयं शमयंतं मामपि किमपि तरंगदनंगदृशा मनसा रमयंतं ॥
॥७॥

रदेवता असुर देस्य तेई है परिवार सेवकजी नके ६ वहुरि कैसे है हरि विशद निर्मल जो है कदंव वृक्ष के तर बेष्टित है वहु
रि कैसे है कलिजुगकृत जो है पाप ताहि दूरि करत है वहुरि राधाजी कहति है अरी सखी मोहुं को अति अद्भुत प्रगट होत
है काम ताते असी जो दृष्टि अरु मन ताकरि रमावत है अर परम प्रेम को सौंज पो उद्भव करि प्रकृत ताकरि है मनमन
जिनको ७

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गी०टी० कहत हैं श्रीजयदेव कवि कहा जो यह गीत सो जनन कौं श्रीकृष्णचरणस्मरण कराइवे कौं जोग्य होइ॥
११ है सो कैसो गीत॥ अतिसुंदर है॥ वहुरि कैसो है॥ परममनोहर है॥ वहुरि कैसो है॥ कह्यो है मधुरिपु श्रीकृष्ण को

श्रीजयदेवभणितमतिसुंदरमोहनमधुरिपुरूपं॥ हरिचरणस्मरणं प्रति संप्रति पुन्यवतामनुरूपं॥ ध्रु०॥ गणय तिगुणग्राममंगामं भ्रमादपि नेह तेव हति च परितोषं॥ दोषविमुंचति दूरतः॥

रूप जा विषैं॥ ध्रु०॥ अव श्रीराधाजी के भई जो कृष्णजू की मिलिवे की उत्कंठता तें सखी सों कहति हैं मेरो मन न मेरे हा
थ नहीं कहा करौं॥ अरी सखी मेरो मन अवहूं श्रीकृष्णजी के विषै इच्छा करतु हैं जद्यपि वे मो विना विहार करत
हैं॥ कृष्ण ११

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

अरुऔरजुवतीनसौंमोहकरतुहै॥ तथापिउन्हहीमेरोमनुचाहतहैकहाकरौं॥ अरुउन्हंकेगुणनिग
निवोकरतहैं॥ अमर्ङकरिउन्हहिम्लननाहीं॥ अरुउन्हंकेगुणसुनतसंतोषपावतुहै॥ अरुउन्हंमेरोअ
पमानरूपजोअपराधकीनोताहिदूरिकरैडारतुहै॥ तातेंरीसखीहौंकहाकरौंमेरोमनुमेरेसेवेनहीं॥ताते

युवतिषुवलत्तसैवक्लैविहारिणिमांविना पुनरपिमनोवामंकामंकरोतिकरोमिकिं॥१॥

॥ आली अष्टपदीकरिसखीसौंकहतिहैंजोमोसोमिलनहोइसुजनतैंकरि तुमेरीप्रियसखीहै अरमैंकोप्या
राकोविरहजयोपहै तातेमेरोहृदयपजरतुहै॥ तातेतुअैसोजतनकरिजौंमोकुशांतताहोय १ श्रीरुलाय

गी०टी०

१२ राधाजी कहति है श्रीसखी केशीमथन जो हरि तिन्ह हि मोसों क्रीडा करवाइ केसे है श्रीकृष्णजी नयो है काम
विकार जिनके हो कैसी हों एकांत विषे जो है कुंजगृह तहां प्राप्त भई हों केसे है कृष्ण रात्रि विषे एकांतस्थल वि

नि॥ मा॥ ... निभृतनिकुंजगृहंगतया निशि रहसि निलीय वसंतं चकि
तविलोकितसकलदिशा रतिरभसरसेन हसंतं। सखि हे केशिमथनमुदारं रमय मया सह मदन

षै डरि रहे तहै कैसी हों हों एकांत विषे जो है कुंजगृह तहां प्राप्त भई हों केसे है कृष्ण रात्रि विषें एकांतस्थ कृष्ण
ल विषैं डरि रहे तहै कैसी हों हो भय पूर्वक चारि हूं दिशानि देषति हो बहुरि केसे है कृष्णजी रति जो है के १२

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लिता विषैजोरसमउत्साह ताके वसकरि हसत हैं वकुरि हौं कैसी है। कामजनितजो विकार ताके वस भई है। १। राधाजी कहति हैं हौं कैसी हौं प्रथमजो समागम मिलन ताते भई जो है लाजजाके कैसे है श्रीकृष्णजी प्रियजो है मीठे बोलनि नकरि मेरी लाजछुड़ाइवेकों अनुकूल भए है वकुरि हौं कैसी हौ

मनोरथभावितयासविकारं १ प्रथमसमागमलज्जितयापटुचाटुशतैरनुकूलं मृगम धुरस्मितभाषितया शिथिलीकृतजघनदुकूलं २ श्रीमद्राधागोविंददेवोजयति॥

मृदु कहिए कोमल ऐसे जो मधुर वचन तिनकरि बोलति हौं कैसे है कृष्णजी मेरी बात सुनि शिथिल ढीलो कीनो है कटिको वस्त्र जिन ऐसे जो बरिअन्न तकिये है सो मोकु मरणो आवेत वहदेअकुलानि होत है २

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वकुरि हो केसी हो॥ श्री कृष्णजी करि किशलय जो है नूतन कोमल पत्र तिनकी जो सेज्या ता विषें पौढी रहे हैं॥ केसे है कृष्णजी॥ चिरकाल बहुत काल पर्यंत मेरे वक्षस्थल विषें सेन करत हैं॥ वकुरि हो केसी हो॥ कृ

किशलयशयननिवेशितया चिरमुरसि ममैव शयानं॥ कृतपरिरंभणचुंबनया परिरभ्य कृताधरपानं॥ ३॥

तकीनो है आलिंगन अरु चुंबन जाकरि॥ केसे है श्रीकृष्णजी सदा काल येक रस प्रेमको निरवाह करत है॥ वकुरि केसे है श्रीगोविंदजी॥ आलिंगन देकरि कीनो है अधरपान जिन ऐसे है कृष्णजी॥ ३॥ कृष्ण
१३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राधाजी कहति है हों कैसी हों। आलिंगि करि मूंदे है लोचन जिन कैसे है श्रीकृष्णजी। पुलकावलि जो है
रोमांचनकी पांति तिन करि मनोहर है कपोल जिनके वहुरि कैसी हों। श्रमजल जो है प्रस्वेद ताक

श्लिसनिमीलितलोचनया पुलकावलिललितकपोलं। श्रमजलसिक्तकलेवरया वरमदनमदादति
लोलं॥४

रिसीच्यो है कलेवर शरीर जाको वहुरि कैसे है श्रीकृष्णजी। वनमाल करि वहोत भयो है सोभित है व
क्षस्थल जिनको फिर कैसे है वर श्रेष्ठ जो है कामता तें उपज्यो जु मद ताकरि अति चंचल हैं॥४॥ कृष्णाय:

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गी॰गो॰ हौ कैसे हो कोकिलाको जो मधुर शब्द तैसो है कूजित शब्द जाको कैसे है श्री लल्लजी जितजीत्यो है काम
१४ शास्त्र जिन। वकुरि कैसी हैं हो शिथलन ए हे फूलनि कशि शोभमानके राजाके वकुरि कैसे हैं श्री

कोकिलकलरवकूजितयाजितमनसिजतंत्रविचारं॥ श्लथकुसुमाकुलकुंतलया नखलिखितघ
नस्तनभारं॥ ५॥

गोविंदजी नखनिकरि चिह्नितकीने है स्थूल मेरे स्तन जिन्ह अपने करते वकुरि कैसे है श्री गोविंद
जी जिन आपने हस्तकरि मोको नखसिख फूलनके गहना बनाय मंडित कीनों है सब तन मेरो॥५॥ कृष्ण
१४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

हो कैसी हैं॥ चरननि विषै रणित शब्द करत है मणिजटित नूपुर जाके कैसे है श्रीकृष्णजी पूर्ण कीनो है सुर
त केलिसमूह जिन कउरि कैसी हैं हो॥ मुखर शब्द करति है छूटी है मेखला जाकी॥ वक्रि कैसे है श्रीकृ
ष्णजी॥ कैं शाप करि दीनो है चुंबन जिन ६ हैं कैसी हो॥ रतिसुखसमय जो है सुरत को समय ताबि

चरणरणितमणिनूपुरया परिपूरितसुरतवितानं मुखरविशृंखलमेखलया सकचग्रहचुंबनदा
नं॥६ रतिसुखसमयरसालसया दरमुकुलितनयनसरोजं निःसहनिपतिततनुलतया मधुसूदनमु

षै जो प्रीति ता तै उपज्यों है आलस जाके कैसे है श्रीकृष्णजी कछूएक मुकुलित कहैं प्रफुल्लित भए
है नेत्रकमल जिनके वक्रि कैसी हो हैं निःसह असमर्थ जाही ते निपतित परी है शरीरलता जा
की वक्रि कैसे है श्रीकृष्णजी उदित कहै प्रगट कीयो है मनोज काम जिनको ८ कृष्णाय नमः॥

कृष्णलीला ९

गी०गो० श्रीजयदेवकविवर्णित यहै जो है गीत सो श्रोतानि कौं सुखदाता होउ। सो कैसो है गीत। मधुरिपु जो
१५ है श्रीकृष्णजी तिनको जु निधुवन सुरत सुख एषो है जा विषें। बहुरि कैसो है गीत। लीला सहित जो है
ट। राधाजी कहति हैं अरी सषी श्री गोविंदजी कों देषति हों अरु हर्ष पावति हों। सो कैसे है श्रीकृष्ण

श्रीजयदेवभणितमिदमतिशयमधुरिपुनिधुवनशीलं सुखमुत्कंठितगोपवधूकथितं वित
नोतु सलीलं। ८। हस्तस्रस्तविलासवंशमनृजुभ्रूवल्लिमद्बल्लवीवृंदोत्सारिदृगंतवीक्षितम

जी। वृंदावन विषैं व्रजसुंदरी जो गोपी तिन्ह सहित है। बहुरि कैसे है गोविंदजी। मोहि देषि करि गि
री है मुरली जिनकी। बहुरि कैसे है गोविंदजी कुटिल है भौंह जिन्हकी एसी जु गोपिका तिन्हकी ओ कृष्ण
र कटाक्ष करि चितवत है। बहुरि कैसे है श्रीकृष्णजी प्रस्वेद करि आई है कपोल जिन्ह के। बहुरि। १५

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

केसे है श्रीकृष्णजी लाजसहित जो मंद हास्य ताकरि शोभत है मुख जिनको १ श्रीराधाजी कहति हैं
अरी सखी वियोगी जननिकौं दुःख जनक ऐसी जो अशोक की लता ताको जो विकास फूलिवो सो मोहि दु
:ख देत है अरु सरोवर को जो पवन सुफूनि पीडा करतु है वकुत कहा कहै आंवकी जो मंजुरी सु

मामुद्वीक्ष्य विलक्षितं स्मितसुधामुग्धाननं कानने गोविंदं व्रजसुंदरीगणवृतं पश्यामि हृष्यामि च १
दुरालोकस्तोकस्तवकनवकाशोकलतिकाविकाशः कासारोपवनपवनोयं व्यथयति। अ
पि भ्राम्यद्भृंगीरणितरमणीयानमुकुलप्रसूतिश्चूतानां सखि शिखरिणीयं सुखयति २ श्रीगोविंद

ति संताप हि करिति है सु मंजुरी कैसी है सुवास तें विकट गुंजार व करिति है जो भ्रमर तिन्हं करि शोभत है
अग्र जिनको वहोरि कैसे है श्रीगोविंददेव जिनके अंगनु सोरभ ताके गंध करि भ्रमर मत्त भए है २

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गी० टी० नवतरुणजोंकेशवजू तेभक्तिनिकेदुःखहिंहरऊ सोकैसेहैकेशवजू गोपीनकोजोगुप्तभावताहि
१६ देषिकरिकोऊएकजुप्रियाताहिमनविषेस्मरतहै वऊरिकैसेहैकेशवजू सुंदरअरुमोहनहैं
गोपिकानिकोगुप्तभावकैसोहै चित्तकीबातनिप्रगटकरतुहै मंदहास्यजामें वऊरिकैसोहैगुप्तभा

साकूतस्मितमाकुलाकुलगलद्धम्मिल्लमुल्लासितभ्रूवल्लीकमलीकदर्शितभुजामूलार्द्धदृष्टस्त
नं गोपीनांनिभृतंनिरीक्ष्यगमिताकांक्षश्चिरंचिंतयंनंतर्मुग्धमनोहरोहरतुवःक्लेशंनवःकेशवः

व ज्यूटैहैकेशपासजाविषे वऊरिकैसोहैगुप्तभाव ऊंचीचढीहैभौंहजाविषे वऊरिकैसोहैगुप्तभा
व मिसकरिदिषाएहैभुजाअरुआधेहस्तअंगजाविषे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गी०टी०
१७

श्रीकृष्णकहतहैं॥ यहजुहैराधासोमोहिंवकुतगोपीनकेझुंडमेंदेषिकरिरूठिचली श्ररुकीनोजोरा
धिकाकोअपराधताहीतेंडरपिकेमेंहूंनवरजी ताहीतेंघदोओश्रादरतातेश्रीश्रीकृष्णकहतहैं

माभियंचलितविलोक्यहृतंवधूनिचयेन सापराधतयामयापिननिवारितातिभयेन१
हरिहरिहतादरतयागतासकुपितेव किंकरिष्यतिकिंवदिष्यतिमांचिरंविरहेण किंधनेन
जनेनकिंममजीवितेनगृहेन२ श्रीमद्राधागोविंददेवजीमाजीसाहिववकुजीसाहिवकीजेहो

हरिहरिवकुतकष्टपाइराधाभिजिगई१ श्रीकृष्णकहतहैं वहराधाचिरकालपर्यंतजोविरहताक
रिकहांधौकरैगी श्ररुकिंवदिष्यतिकहाकहैगी श्ररुमोकोवाराधाविनुकिंधनेनधनसौंकहाकाम
श्ररुमोकोवाराधाविनुकिंधनेनधनसौंकहाकाम श्ररुजनेनकिंलोकनिसौंकहाकाम श्ररुमेरेजीवनक

कृष्ण
१७

श्रीकृष्णकहतहैंहौंराधाकोजोमुखताकोस्मरणकरतहै सोकैसोहैमुख अत्यंतक्रोधतैंकुटिलभईहैभौं
हजाविषैसोकैसोदेषियतहैं ऊपरफिरतहैंभ्रमरजाकेऐसोजुआरक्तकमलहैमानऊयहउपमा
यातेजोक्रोधतैंनेत्रलालभएहैअरुभौंहस्यामहैं ३ श्रीकृष्णजीकहतहैं वहराधामेरेहृदेजीतरहैं॥

चिंतयामितदाननंकुटिलंभ्रूकोपभरेण शोणपद्ममिवोपरिभ्रमरेण ३ तामहंहृदिसंगता
मनिशंभृशंरमयामि किंवनेनुसरामितामिह किंवृथाविलपामि ४ दृश्यसेपुरतोगतागतमेव मताकुलेन

वारवारनाहिंकवनमैंकाहेकोंसोधौंअरुकाहेकोंविलापकरौ ४ अवश्रीकृष्णजीराधाहिमिलिवेकीअति
उत्कंगतातेश्रीराधाजीकोंआगेदेषतसेकहतहैं अरीराधातूमेरेआगेआवतीजातिसीदेषिजतिहैंपरिजै
सेपहलेआदरपूर्वकआलिंगनदेतीतैसेअवक्योंनदेहि ५ श्रीकृष्णायनमः श्रीगोपीजनवल्लभाय

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीकृष्णजी कहत हैं अहो राधे तुम्हारो हृदय क्रोध करि न्यो जानत है। अरु दूसरे यह जानतु नांही जो कि
न गई होत ही तैं नाही मनावतु हो॥६॥ श्रीकृष्ण कहत है अरी राधा यह जो मो तें अपराध पर्यो ताकी क्ष

मे विदधासि किं पुरेव ससंभ्रमं परिरंभणं न ददासि॥५॥ तान्व रविन्न मसू॥
यथा हृदयं तव कलयामि तन्न वेद्मि कुतो गतासि न तेन ते ऽनुनयामि॥६॥
क्षम्यतामपरं कदापि तवेदृशं न करोमि देहि सुंदरि दर्शनं मम मन्मथेन दुनोमि॥
७

माकरो॥ बहुरि तुम्हारो ऐसो अपराध मै फेरि कबहु करिहु नही॥ अबकी बार तो कृपा करि अपराध दू
रि करि दर्शन देहु॥ तुम कहोगी तुमारे तो युवती बहुत है उनको दर्शन करो सो मोको तेरो प्रेम पीडा करै है
७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कहत हैं यह गीतगोविंदजी को जयदेवजी करि वर्ण्यो सो कैसो है जयदेव कवि श्री हरि को कीनो है न
मस्कार जिन सो कैसो है जयदेव कवि किंदुविल्व है नाम जाको ऐसो जो गाव ताते प्रगट भए रोहिणी
रमण चंद्रमा है मानो ८ श्री कृष्णजी को विरहाधिक्य वर्णत हैं सोई कहत हैं श्री राधाजी को मान छवि
वर्णितं जयदेवकेन हरेरिदं प्रणतेन किंदुबिल्वसमुद्रसंभवरोहिणीरमणेन ८ भ्रूपल्लवं धनुर
पांगतरंगितानि बाणागुणः श्रवणपालिरिति स्मरेण तस्यामनंगजयजंगमदेवतायामस्त्राणि निर्जि व
त्य सकल वश करिके काम अपने अस्त्र सो पै है सो कैसी है राधाजी अनंग जो कामदेव ताहि जयदेन को दे
वतारूप है ता तें ऐसे को ऊ देवता प्रसन्न होइ करि काहू कों अस्त्र दे वऊ रिका भवा को सरि चुके तव फें अस्त्र दे रि
मानो कामदेव न अस्त्र श्री राधाजी कों सोपै है सो कैसे भौंह तो धनुष अरु कर्ण को निकट सो प्रत्यंचा है धनुष की जे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गी॰ गो॰ टि॰
२६

हे अरु कपट्ट करि चित वसितेई बाण १ श्रीकृष्णजी कहत हैं अनंग महादेव को भ्रम करि कै मोहि प्रहा
र करिबे कौ काहे कौं क्रुद्ध कै दौरतु है तो मौं बैर है महादेव सौं उन्ह के धोखे मोहि काहे कौं मारतु है सो धो
खो दूरि करत हैं प्रिया करि शहि तन्नयो हो ता तें विरहाग्नि संताप दूरि करिबे कौं मैं कमलनि के जो कोमल

तज्जंतिकिमर्पितानि १ हृदि बिसलताहारो नायं भुजंगमनायकः कुवलयदलश्रेणी कंठे न सा
गरलद्युतिः मलयजरजो नेदं भस्म प्रियारहिते मयि प्रहर न हरभ्रांत्यानंगम क्रुधा किमु धावसि २

नालतिन की माला पहिरी है यह सर्प मति जानै अरु कंठ विषै कुमुदिनी के दल हैं तिन्हें हि विष की नी
लिमा मति जानहि अरु काम संतापनि वारिबे कौं मैं अंग चंदन की षोरि करी है ताहि तू भस्म मति जानैं कृष्ण
तातें तेरै मन मैं धोषो है सु दूरि करि मोहि निरअपराध हि मति संतावहि २ श्रीगोविंदगोपीनाथजी २६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीकृष्णजीकहतहैंविनाहीकृष्णजीत्योंहैंविम्बजिनऐसेकामदेवपरजोआंवकेफूलरूपवाणसोहाथ
मतिलेहि।अरुधनुषचढ़ावहिमति।सोकाहेतेजोमूर्छितभयोताहिमारेकछूपुरुषार्थनाही।सोमूर्छा।

।पायोमाकुरुरूतसायकमर्मुमाचापमारोपयश्रीडामिर्ज्जितविम्बमूर्छितजनाघातेनकिंपौरु
षं।तस्याएवमर्थःजीकहतहैंमननिजप्रेरवलकटाक्षानल।श्रेणीजर्जरितंमनागपिमनोनाद्यापिसंधुक्षते।
२

कोकारणकहतहैं।सोजोमृगनैंनीराधाताकेकटाक्षवाणनिकरिखंडितभयोजोमनुसोअवहूनेंकसाव
धानहीहोत।तातेंप्रियाकटाक्षकरिमूर्छितजोहोताहिकाहेकोमारहिमेरेमारेकछूपुरुषार्थनाही।२।२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गीतगो०टि०
२०

अबमनमैंश्रीराधाजीकौंआनिकरिश्रीकृष्णजीसोकहतहैं कहाकहतहैं अहोराधातुम्हजोभौंहधनुष विषैकटाक्षबाणराख्योहैसुरमेविषैंपीडाकरोसोबाणमरमपीडाकरैयाबातकोअचिरजनहीं अरु

भ्रूचापेनिहितःकटाक्षविशिखोनिर्मातुमर्मव्यथां श्यामात्माकुटिलःकरोतुकबरीभारोपिमारोद्यमं मोहंतावदयंचतन्वितनुतांबिंबाधरोरागवान् सद्वृत्तःस्तनमंडलस्तवकथंप्राणैर्ममक्रीडति॥४॥

श्यामबरणअरुटेढीजोवेणीसोमारिवेकोंउद्यमकरोयाबातकोअचिरजनांही प्रसिद्धतकहिजेगोलजोस्तनतेमेरेंप्राणहरतहैं मनहरतुहै सोहेप्यारीयहबाततुमकोउचितनहीहै ४ कृष्णायनम

कृष्ण
२०

श्रीहल्लजीकहतहैंजोजेनाइकाकेसंगकरिपहिलेंस्पर्शसुखअनुभवतेई अबध्यानकरिअनुभवतुहो।
अरुवेईकराहस्वंचलअतिप्रेमजुक्तहै। अरुवहैमुखकोसुगंधहै अरुवहैतर्कसहितवचनहै। अरुअध
रअतिमधुरहैं इहिभांतिविषयन्हकैअछतमेरोमनताकोधिकाविषैएकायसमाधिलागीहैसुअचिरजहै

तानिस्पर्शसुखानितेचतरलाःस्निग्धदृशोविभ्रमास्तद्वक्त्रांबुजसौरभंसचसुधास्यंदीगिरांवक्रिमा।
साबिंबाधरमाधुरीतिविषयासंगोपिचेन्मानसं तस्यांलग्नसमाधिहंतविरहव्याधिःकथंवर्द्धते॥५॥

सुकाहेतेजोलौंविषयवासनानजाइतौलौजोगनसधैसमाधिहैसोजोगविनुहोइमेरैंविनांहीविषैंदूरिभए
जोगजयोपरिजोजोगसाधेताकेआधिनबूझिजेहुमेरैएकतोयहैअचिरजहै विषयरहतहीजोगजयो
दूसरेयहअधिकअचिरजजोगजयोहैविरहव्याधिनगई सोदिवततोगोशीनीतरकारीहैइहज्ञानीपरी
५

गी०गो०टी० कविकहतुहैश्रीहृष्णजीकेकटाक्षन भक्तनिकौंकल्यानकरऊं कैसेहैकटाक्ष परममधुरजोराधामुखचं
२१ द्रताविषैमुसकानिसहितश्रमजोगीततिन्हकोजोस्थलताविषैराषेहैअवएगजिन्ह एसीजोगोपिकास

तिर्यक्कंठविलोलमौलितरलोत्तंसस्यवंशोच्चलद्गीतिस्थानकृताव
धानललनालक्षैर्नसंलक्षिताः संमुग्धंमधुसूदनस्यमधुरेराधामु
खेंदौसुधास्यंदपल्लवितान्चिरंददतुवःक्षेमंकटाक्षोर्मय ॥२१॥

हस्ततिन्हकरिनांहीजाने कैसेहैश्रीगोविंददेव वक्रहैकंठजिन्हकोअरुचंचलहैमस्तकजिन्हको च
पलहैकुंडलजिनकें॥

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अब श्रीराधाजी की सषी श्रीकृष्ण सों कहति है सो कैसे है श्रीगोविंददेवजी जमुना तट विषे जो बेतस द्रुम नि
कों कुंज ता मध्य मौन धरें बैठे हैं वहुरि कैसे है श्रीगोविंदजी राधा मो सों कैसे प्रसन्न ह्वै या चिंता तें अनंग कु
राइणि जी विषे जो अधिक प्रेमता ते उद्विग्न है ७ विरह करि उत्कंठित जो राधिकाजी तिन की अवस्था म

जमुनातीरवानीरनिकुंजे मंदमास्थितं प्राह प्रेमभरोद्विग्नमाधवं राधिकासखी ७ [illegible]
निंदति चंदनमिंदुकिरणमनु विंदति खेदमधीरं व्यालनिलयमिलनेन गरलमिव कलयति मल ल

सो श्रीकृष्णजी सों कहति है अहो कृष्ण तुम्हारे विरह तें राधा अति दीन भई है सो कैसी है राधिका श्रीकृ
ष्ण विषे प्रविष्ट भए मोहि काम के बाण न लागि है ऐसी भावना करि के कामबाण के भय तें तुम्ह विषे
लीन ह्वै रही है करति कहा है सो सषी श्रीकृष्ण सों कहति है चंदन कों निंदति है चंद्रमा के किरण

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निदेषि अतिदुःखपावतिहै अरुकायरहोतहैं अरुचंदनकेवृक्षनिमैजोसर्पतिन्हहिस्पर्शकरि
आवतहैजोमलयवायुताहिविषसोकरिजानतिहै १ वकुरिकहाकरतहैश्रीराधा अतिविशालजे

यसमीरं ॥ साविरहेतवदीनामाधवमनसिजविशिखभयादिवभावनयात्वयिलीना
अविरलनिपतितमदनशरादिवभवदवनायविशालं स्वहृदयमर्मणिवर्मकरोतिसजलन
लिनीदलजालं २

हैकमलिनीजलसहितदलतिनहिआपनेहृदैकोजोमर्मताविषैंवर्मकवचकरतिहै सोकाहेको
हृदयमैंबसतजोतुम्हतिन्हकीपरतजोहैकामकेबाणतिनतेंरक्षाकरिवेको २ हरयेनमः कृष्ण कृष्ण
२२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वक्रारि कहा करति है राधा। तुम्हारी जो आलिंगनता को जो सुषता के कारण अनुभूत करति हैं। सुकहा अनुत। कुसुमविशिष जो है कामता के जो अस्त्र फूल तिनकी जो सेजता विषें सोवति है। सो कहा। और जो कोक कलिन वृत्त करै सो सरस सेज सौं वैसे फुलनि फूलनि काम के सर जानि सोवति है। कैसी है फूल की सेज काम के जो विलासता

कुसुमविशिखशरतल्पमनल्पविलासकलाकमनीयं व्रतमिव तव परिरंभसुखाय करोति कुसुमशयनीयं॥२॥

को जोग्य है॥२॥ वक्रारि कैसी है राधा वक्रारि वक्रत है अश्रुजलजिन विषे ऐसे जो नेत्र तिन्ह करि शोभायमान जो है मुखकमल ताहि धरति है। सो कैसो कैसो देखियतु है मुखकमल अति विकट जो है विधुंतुद राहु ता के अस्त ते छूटी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गी० टी० २२ हेअमृतधाराजोतैंअैसोचंद्रमाहेमानों ॥४॥ सखीकहतहै अहोगोविंदजीराधाकामरूपजोहैतुम्हतिनहिं
एकांतविषैंकुरंगमदजोहैकस्तूरीताकरिलिषतिहै अरुकामकोवाहनजोहैमकरताहिचरणनितरें
लिखिअरुकामकोबाणजोहैआंबकेमोरताहिहाथमेलिखिकरिनमस्कारकरतिहै ॥५॥ सखीकहतिहैअ

यहतिचवलितविलोचनजलधरमाननकमलमुदारं विधुमिवविकटविधुंतुददंतदलनग
ता लितमृतधारं ॥४॥ विलखतिरहसिकुरंगमदेनभवंतमसमशरभूतं प्रणमतिमकरमधोविनिधायकरे
चशरंनवचूतं ॥५॥ प्रतिपदमिदमपिनिगदतिमाधवतवचरणेपतिताहं त्वयिविमुखेमयिसपदि सुधानिधिरपितनुतेतनुदाहं ॥६॥

होछ्ष्ठतुम्हारेविरहतेंबहुराधाबारबारकहैहै कहतिहै अहोमाधवहोंतुम्हारेचरणनिकेंशरणआइप
रीहों मोकाहेतें जातेंतुम्हारेविरहजनतेंसुधानिधिअमृतकोनिधानऐसोजोचंद्रमासोमेरेसरीरकोंजार छ्म २२
तेहै ॥६॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अर्थ। सषी कहति है। अहो कृष्ण दुःख करि पांय तजो हो तुम्ह तिनहि वह राधा ध्यान लय अनुक्ति की एकाग्रता
ताकरि आगे गढ़े करि के विलापहि करति है। ध्यान में पायो जो तुम्हारो दर्शन ताते हंसति है। वहुरि न वनां
ही देषति तव विषाद दुःषहि करति है। अरु रुदनु करति है वहुरि मन में यह विचारति है। और गेरग

ध्यानलयेन पुरः परिकल्प्य भवंतमतीव दुरापं। विलपति हसति विषीदति रोदिति चंचति मुंचति तापं
।७ श्रीजयदेवभणितमिदमधिकं यदि मनसा नटनीयं। हरिविरहाकुल वल्लवयुवति सखी वचनं पठनीयं ८। प

रे मिलहिंगे ताते उमिचलति है। अरु मन के संतापहि दूरि करत है ७ कहत है जयदेव नामा कविता क
रि कथित यह निकुंजि को गीत ताहि मन पूर्वक जो नृपर नचायो चाहत हो तो श्री कृष्ण जी के विरह करि
व्याकुल जो है राधाजी तिन की सषी को जो यह वचन ताहि पढ़ुहु ताको गोविंद जी मन करि आपनो जाने प

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

या अष्टपदी मैं विरहोत्कंठिता नाइका वर्णी ॥ ताके लछणको श्लोक उत्कासन्नवतिसायस्याः संकेतं नागतः प्रियः॥ त
स्यानागमने हेतुं चिंतयंत्याकुला मनेत ॥१॥ याको अर्थ जा नाइका के संकेत विषे पति न आवै अरु नाइका यह
विचारिवो करै जो मोसों तो यह कह्यो हो जो हों आवत हो तू संकेतस्थल चलि सो होतो इहां आई अरु पिय न पधारे

आवासो विपिनायते प्रियसखीमालापि जालायते तापोपि स्वसितेन दाव दहनज्वालाकलापायते साऽपि
त्वद्विरहेण हंत हरिणीरूपायते हा कथं कंदर्पोपि यमायते विरचयन् शार्दूलविक्रीडितं ॥२॥ इस

सो कहै हैं ऐसें कहि करि अति आकुल होइ ताकौं विरहउत्कंठिता कहिये १ पहिली अष्टपदी को अर्थ श्लोक
करि कहति है राधाजी की सषी श्रीकृष्णजी सो कहति है अहो प्रभु राधा कुंनि तुम्हारे विरह तें हरिणी लों होति है
सो कैसैं सोई कहत है गृह तो वन होतु है अरु प्रियसषी जो है तेई जाल होति है सो काहे तें इहां पधारिवे कौं ना
हीं देति देहकों संताप सोई दावानल होत है॥
अरु कामदेव जम होत है सिंघ की नाई त्रास देत है॥२॥

सषीकहतिहै अहो कृष्ण तुम्हारे विरह करि अतिकृश है तनु शरीर जाको ऐसी जो राधिका सो हृदे विषे पह
रयो है जो मोतिन को बहुमोल्य हार ताहि भार करि जानति है १ सषी कहति है अहो कृष्ण तुम्हारे विरह तें राधा
जी शरीर विषे चरचो जो सुंदर चंदन ताहि शरीर विषे विष सो जानति है २ अहो कृष्ण वह राधिका आपने

[illegible] स्तनविनिहितमपि हारमुदारं सा मनुते कृशतनुरतिभारं राधिका विरहे त
व केशव १ सरसमसृणमपि मलयजपंकं पश्यति विषमिव वपुषि सशंकं २ श्वसितपवनमनुपमप
रिणाहं मदनदहनमिव वहति सदाहं ३ दिशि दिशि किरति सजलकणजालं नयननलिनमिव विगलि
तनालं ४

अति बडे उसास तिनहि काम की अग्नि के समान दाहक जानति है ३ अहो कृष्ण वह राधा तुम्हारि देषिवे की इ
छा करि कै अश्रुजल सहित जो है नेत्र तिन्हहिं चहुं ओर पसारि है सो कैसे है नेत्र टूटि गयो है नाल जिनतें ऐसे क
मल है मानु ४

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गी॰गो॰टी॰ सषीकहतिहै। अहो गोविंदजी वहजो राधा नित्र नके आगे है औसी जो है पल्लवनिकी सेज ताहि कृतासन करी
२५ जानत है अग्निसमान लागति है। ५ वह राधा चिंता तें कपोल पर धस्यो है जो हस्त ताहि दूरि करि नाहीं सक
ति सो कैसो देषियतु है। संध्यासमय विषै निश्चलकुतिथा को चंद्रमा है मानो। ६ अहो गोपीनाथ वहे राधा

नयनविषयमपि किशलयतल्पं कलयति विहितकृतौ विकल्पं ५ त्यजति न पाणितलेन कपोलं स
वालशशिनमिव सायमलोलं ६ हरिरिति हरिरिति जपति सकामं विरहविहितमरणेव निका
मं ७ श्रीजयदेवभणितहरिगीतं सुखयतु केशवपदमुपनीतं ८ श्रीराधागोविंदायनम

हरि हरि या नाम लिकहति है सो है। यह जानति है। उ नि विरह संताप तें मरिवौ निश्चै कीनो है। ७ श्रीजयदेवकवि कृष्ण
कहो औ यह गीत सो भक्तन कौ सुष देउ सो कैसो है यह गीत श्रीकेशवजी के चरननि को समर्प्यो है। ८ कृष्ण २५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथश्रीराधाजीकीसषीकहतिहै। अहोअश्विनीकुमारसमानवैद्यजीतुम्हप्रसंन्नहोऊतोतुम्हारेरसतें।वह
राधाकोमहाउपजीजोकामज्वरकीविथातातेछुटे जैसेंज्वरवऊतनएतैंज्वरांकुशदीन्हे नीकोहोतुहैं।जु
रकेचिन्हंकहतिहै रोमाचहोतुहै अरुउसासछांडतिहै विलापकरतिहै अरुकांपतिहै।ग्लानिजुक्तहो

सारोमांचतिसीत्करोतिविलपत्युत्कंपतेताम्यति ध्यायत्युद्भ्रमतिप्रमीलति
पतत्युद्यातिमूर्छत्यपि एतावत्यतनुज्वरेवरतनुजीवेन्नकिंतेरसात्स्ववै
द्यप्रतिमप्रसीदसियदिसंत्कोन्यथाहस्तकः १ श्रीराधागोविंदायनमोनम

तिहै कबहूंकबकतिहै नेत्रमूंदिरहतिहै उठिचलतिहै गिरिगिरिपरतिहै मूर्छाहिपावतिहै कब
ऊकसुपनमेरोयउठतिहै कबऊकहेप्यारेहेप्यारेकहांगयेकहांगये ऐसेकहतिहै कबऊकमेरेगरेमेहा
थडारिकहतहै अरीसषीमेजरीजातहों इतनेज्वरकेलछणभएहै हमतोहाथडारेजोतुमप्रसन्नहोऊतोआस वैद्य १

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गी०गो०टी सषीकहतिहै अहोअश्विनीकुमारसमानसुंदरजोतुम्हराधाजीकौंनीकीनकरज्ञुतोतुमवज्रज्ञुतेंकठोरहो के
२६ सीहैराधाजीःकामकरिआतुरहै वक्रीकैसीहैराधाजी तुम्हारेअंगकोजोसंगसोईजुभयोअमृततातेंहीकरिसा
ध्यहै ओरओषधयाज्वरकोनलगै २ सषीकहतिहै तुम्हारेईध्यानकरिजीवतिहै ओरयाराधाकोचित्तचंद

स्मरातुरांदैवतवैद्यहृद्यत्वदंगसंगामृतमात्रसाध्यां विमुक्तबाधांकुरुषेनराधांउपेंद्रवज्रादपिदारु
णोसि २॥ कंदर्पज्वरसंज्वराकुलतनोराश्चर्यमस्याश्चिरंचेतश्चंदनचंद्रमाःकमलिनीचिंतासु
संताम्यति किंत्तुक्लांतिवशेनशीतलतनुत्वामेकमेवप्रियं ध्यायंतीरहसिस्थिताकथमपि
क्षीणाक्षणंप्राणिति २.

नचंद्रमाकमलिनीइतनेजोशीतलउपचारतिन्हकोस्मरणकरतहीदुःखपावतहै कैसीहैराधाजी हेगोविं कृष्ण
तुमारीजोभयोविरह ताकरिकामज्वरकोसंतापतातेंआकुलभईहैं तुम्हकैसेहोपरमशीतलहैतनुजिनको. २६

सषी कहति हैं। अहो कृष्णजी जो राधा पहिले एक क्षणहु तुम्हारे विरह दिन सहति अरु पलक लागत कहती जो ५०॥
एकं ह्यांतें बेरनि भई अंतर पारति हैं। सु राधा अब धौं वऊ तविरह कैसैं सहति हैं। ताकूं मैं अनर्थ यह जो फूले आंब
नि देषि करि के जीवति है ४ कवि कहतु है गोपतनु धरे जो श्री कृष्णजी ते ई जो कंस दिपति न्ह को जो बाऊ हस्त मो

क्षणमपि विरहः पुरा न सेहे नयननिमीलनखिन्नया यया ते स्वसिति कथमसौ रसालशाखां चिरविरहेण विलोक्य पुष्पिताग्रां ॥ ४ ॥ दृष्टिर्व्याकुलगोकुलावनवशादुद्धृत्य गोवर्द्धनं बिभ्रद्वल्लवसुन्दरीभिरधिकानंदाच्चिरं चुंबितः कंदर्पेण तदर्पिताधरतटीसिंदूरमुद्राङ्कि

त भक्तनि कौं कल्याण करो सो हस्त कैसो है जा दृष्टि करि ड्ड; षिन्न जो गाइनि को समूह ताहि राषिवे कौं सात दिन लैं
धस्यो है गोवर्द्धन जा करि बहुरि कैसो है बाऊ गोवर्द्धन के धरैं तें भयो जो गोपीन के आनंद ताते जा बाऊ
को चुंबन कीनो है बहुरि कैसो है बाऊ काम करि जु कृष्ण जो गोपी तिन्ह करि कीनो जो आलिंगन ताते सिंदूर करि

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चिन्हितहै ५ इति ... कवि कहतु है मधुरिपु श्रीकृष्णजी क
रिऐसी भांतिकरि राधाजीसों आगिली अष्टपदी करि कहतिभई सो कैसे कहत भए राधाजी की सषीसों कृष्ण अरी
सखी हौं इहां वैठ्यो हौं तू जाइ करि राधा हिमनाइ ले आव मेरे वचननतें १ सखी कहति है अरी राधा तुम्हारे विरह

तेवाकुर्गीपतनोमनोनुनवतांश्रेयांसिकंसद्विषः ५ ...
... अहमिह निवसामि याहि राधामनुनय मद्वचनेचान्य पेयाः इति मधुरिपुणा सखी नियुक्ता
स्वयमिदमेत्यपुनर्जगाद राधां १ ... वहति मलयसमीरे मदनमुपनिधाय स्फुटति

तैं वनमालीजो है श्रीकृष्णजी ते दुःख पावत है सो कहा होतु काम है सहाय जाके ऐसो जो मलय पर्वतको वायु
ताहि वहत देषि वकुरि कहा होत विरहीनको जो हृदय ताहि विदीर्न करिवेकों फूलनि विकसित देषि १

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

सषी कहति है आरी राधा श्रीकृष्णकौं तेरै विरहतें चंद्रमा जब संताप करतु है तब श्रीकृष्ण स्मरण कौं आकार करतु हैं। अरु काम के बाण जब लगतु है तब अधिक विलाप करत हैं। अरु विवश होत हैं। सषी कहति है आरी

कुसुमविशिखे विरहिहृदयदलनाय। न वद्विरहे वनमाली सखि सीदति कुंजगृहे॥ दहति शिशिरमयूखे मरणमनुकरोति। पतति मदनविशिखे विलपति विकलतरोति २।

राधा जब भ्रमर गुंजार व करत है तब श्रीकृष्ण अति दुःखित होइ कर्णिकान नि मूंदत है। अरु जब मन विषैं विरह व्यापत है तब रात्रि विषैं अति दुःख पावत हैं। तातैं तुं कृपा करि पाव धारि उनको सुख देउ। २।

गी॰गो॰टी॰ २८ अरी सखी तेरे विरह तें श्रीकृष्ण अति सुंदर जो गृह ताहि छोडत हैं। अरु बार बार तेरोई नाम लेत हैं। अरु ब
न विषैं बसत हैं। अरु भूमि विषैं शयन करत हैं। अरु विरह करि लोटत हैं। तातें तु उन को सीतल करि ॥४

ध्वनति मधुपसमूहे श्रवणमपि दधाति मनसि वलितविरहे निशि निशि रुजमुपयाति ॥ ध्रु॰
वसति विपिनविताने त्यजति ललितधाम लुठति धरणिशयने बहु विलपति तव नाम ।
।धा॰ भणति कविजयदेवे विरहविलसितेन मनसि रभसविभवे हरिरुदयतु सुकृतेन ५

कहत हैं कवि ऐसो है श्रीकृष्ण विरहविलास जिन ऐसे जो जयदेव कवि तिन्ह को पूर्वजन्म के जो पुन्य तिन करि श्री
हरि मन विषैं प्रगट होऊ सो कैसो है मन श्रीकृष्णराधा की लीला वर्नन होत है अति आनंद जा विषे ५ कृष्ण २८

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सषीराधाजीसोंकाहतिहै। श्रीराधामाधवजीताहीकुंजरूपकामतीर्थमध्यनिरंतरतेरोईध्यानकरततेरोई
नामजोमंत्रताहिजपतबऊरितेरेअंगनिकेआलिंगनकीइछ्याकरतहै। सोकौनकामतीर्थ जहांपहिलेतो

पूर्वेयत्रसमंत्वयारतिपतेरासादिताःसिद्धय स्तस्मिन्नेवनिकुंजमन्मथमहातीर्थेपुनर्माधवःध्या
यन्स्त्वामनिशंजपंनपितवेवालापमंत्रान्तरं। न्नूयस्त्वकुचकुंभनिर्भरपरीरंभामृतंवांछति।२

सहितरतिपतिकीजोसिद्धिमनोरथतेजातीर्थमेपाए सोअवश्रीगोविंदवाहीस्थानविषेआयकेविराजे
है अरतेरोयेकसोंचिंतवनकरैहै तातेप्यारीराधिकेतुमेरोकहोमानिपियकोसुखदेऊ आनंदलेऊ।२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सषीराधाजीसौंकहतिहै। श्रीराधाजमुनाजीकोतीरविषैजोवनतातिषैवनमालीजूहैकृष्णतेवसतहै
सोकैसोहैजमुनाजीकोतीर धीरकहैमंदहैंसमीरवायुजाविषैं कैसेहैश्रीकृष्णजी अभिसारजोहैसं
केतस्थलतहांप्राप्तभएहै कैसोहैसंकेतस्थल रतिसुखजोहैसंभोगसुखसोइहैमुख्यजाविषैं कैसेहैं

रतिसुखसारेगतमभिसारेमदनमनोहरवेषं। नकुरुनितंविनिगमनविलंबनमनुसारतंहृदयेशं। धीरसमीरेयमुनातीरेवसतिवनेवनमाली गोपीपीनपयोधरमर्दनचंचलकरयुगशाली
।२।

श्रीकृष्ण मदनजोहैकामतासमानमनोहरसुंदरहैवेषजिनको तातैंकहतिहै। श्रीराधाविलंबमतिक
रैप्राणवल्लभजोहैश्रीकृष्णतिनपैंवेगिचलि कैसेहैश्रीकृष्ण गोपिकानकेजोस्थूलअंगतिनकोजोमर्द
नताविषैचंचलहैहस्तजिनके।१।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सषीकहतिहै अरीराधावेकृस्न तेरे नामसहित परममधुर वेणु बजावतहै केसेहै श्रीकृस्न तेरे शरीरकोस्पर्शक
रिवकृतजोहै वायुताकरिउडाईजोहै रेणताहिवहुतकमानतहै २ सषीकहतिहै अरीराधाश्रीकृस्नपत्त

नाममसमेतंकृतसंकेतंवादयतेमृदु वेणुं वहुमनुतेतनुतेतनुसंगति
पवनचलितमपिरेणुं २ पततिपातत्रेविचलितपत्रेशंकितभवदुपयानं २
चयतिशयनंसचकितनयनंपश्यतितववपंथानं ३ श्रीराधागोविंदंदेवोजयतिः

वकीसेजरचतहै अरुतेरोपेंडोदेषतहै सोकैसोहैपेंडो पतत्रजोहैपक्षीतेजवउडतहै अरुजवदृक्षनतेपात
गिरतहैंतवहीश्रीकृस्नजीतेरैंआगमनकोभ्रमकरतहैजामार्गविषे केसीहैसेज नयकरिचकितराषेहैनेत्रजा
विषै ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गी०गो०टी सषी कहति है। श्रीराधा तेरे ति मित्र श्रीकृष्ण अति अकुलात है तातें कुंजकों चलि अरु मंजीर जू है नूपुर तिनं
३० हि उतारि धरि सो काहे तें जातें ए नूपुर बोलत है। अरु संकेतस्थल कें चलिवे कों वेरी लौं प्रगट करत है अरु
क्रीडा विषै चंचल है तातें इन हि उतारि करि अरु नील वस्त्र हि ओटि करि निकुंज कों चलि कैसो है निकुंज
बढ्त है अंधकार जा विषै ४ सषी कहति है पीत करै है गौर है अंगजा को औसी राधा तू श्रीकृष्ण के हृदय पर वि

मुखरमधीरं त्यज मंजीरं रिपुमिव केलिसुलोलं चलि सखि कुंजं सतिमिरपुंजं शीलय नीलनिचोलं
।४। उरसि मुरारेरुपहितहारे घन इव तरलबलाके तडिदिव पीते रति विपरीते राजसि सुकृतविपाके ५

परीत सुरत विषै जोग्य है। कैसी है तू सुकृत जो है पूर्वजन्म के पुन्य तिनको पायो है फल जिन अन्यथा श्रीकृ कृष्ण
ष्ण सो विपरीत सुरत के संपाइजे कैसो है श्रीकृष्णहृदय शोभत है मुक्ताहार हार जा विषै ता विपरीत सुरत विषै ३०
तू कैसी देषिजैगी चंचल हैं वगपंकति जा विषै ऐसो जो मेघ ता महि विद्युल्लता जैसी देषिजै तैसी तू देषिजै ५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सषी कहति है। अरी राधा पल्लव में जम पर वर्त्तमान जो पंकज नयम हस्तिन कों आपनो है वस्त्र जातें। वहुरि
कै सो है जघन। दूरि कीनो है पिधान ढाकनो जाको ऐसो जो निधान है सुकहा जैसे निधि पाए आनंद होइ तैसे
तैं ऐ जघन पाए। श्रीकृष्ण के आनंद होइगो। याकरि विपरीत सुरत जनायो ॥ ६ ॥ अजो सषी कहति है अरी राधा

विगलितवसनं परिहृतरसनं घटय जघनमपिधानं। किशलयशयने पंकजनयने निधिमिव हर्ष
निधानं ॥ हरिरभिमानी रजनिरिदानीमियमपि याति विरामं। कुरु मम वचनं सत्वररचनं पूरय मधु
रिपुकामं ॥ ७ ॥

श्रीकृष्ण परम अभिमानी हैं जो न चलि है तो और नाइका हि अनुसर हिंगे तातें हौं तेरे हित कों उतावलि करि चलि
अरु मधुरिपु जो है श्रीकृष्ण तिन को मनोरथ पूर्न करि अरु रात्रि पुनि वीतति है तातें ढील करमति वेगि चलि ॥ ७ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गी०गो०टी० अर्थ॥ श्रीजयदेव करि कीनी हरिसेवा जहां ऐसो जो यह गीत ताहि सो निहर्ष जुक्त होइ करि श्रीकृष्णकों नमस्कार
३१ करऊ कैसे है श्रीकृष्णजी परमदयाल है अरु बडे पुन्य तैं पाइयत है कैसो है गीत अति मनोहर है ॥इति श्रीगीत
[illegible] सषी कहति है अरी राधा तेरो कांत कामपीडा करि तप्त है तातैं तू वेगि चलि सो

श्रीजयदेवेन तद्धरिसेवे भणितिपरमरमणीयं प्रमुदितहृदयं हरिमतिसदयं नमत सुकृतकमनीयं॥
८ विकरति मुहुः श्वासानाशा पुरो मुहुरीक्षते प्रविशति मुहुः कुंजं गुंजन्मुहुर्बहु ताम्यति रचयति मु
हुः शय्यां पर्याकुलं मुहुरीक्षते मदनकदनक्लांतः कांते प्रियस्तव वर्त्तते १ श्रीराधागोविंददेवो जयति

कोन प्रकार करि सो ई कहति है अब कृष्ण आई यह कहि बार बार स्वास लेत हैं एकाग्र चित्त होइ करि नासिका प
र दृष्टि राषि बार बार तोही कों देषत हैं बहुरि जब तोहि नाहीं देषत तब जानत हैं मति कुंज मैं आई होइ तातैं बार कृष्ण
बार कुंज मैं पैठत हैं बहुरि तोहि कुंजहू मैं नाहीं देषत हैं तब अहो राधा कित हो ऐसे बार बार कहि दुषी होत है १ ३१

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

सषी कहति है। श्रीराधा तेरे वचन के साथ सूर्ज अस्त भयो कहा जैसें तेरे बोल अस्त होय रहे हैं तैसें सूर्य तिन्ह हीं के साथ अस्त भयो। अर्थ यह जो सांझ भई अरु गोविंदजी के मनोरथ के साथ अंधकार बढ़त भयो अब ऐसें है।

त्वद्वाक्येन समं समस्तमधुना तिग्मांसुरस्तं गतो गोविंदस्य मनोरथेन च समं प्राप्तं तमः सांद्रतां कोकानां करुणस्वनेन सदृशी दीर्घा मदभ्यर्थना तन्मुग्धे विफलं विलंबनमसौ रम्योभिसारक्षणः॥२॥

ऐसें ही श्री गोविंदजी के कहे तें अंधियारो भयो अब चलिवे को समय है। अरु चकवानुको जो विरह दुख ताके करुण शब्द तैसी मेरी प्रार्थना विनती है करुणा करिके कहति हों वेगि चलि श्रीराधा सांझ भई अंधकार भयो अति म

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सषी कहति है सुंदर है मुखजाको ऐसी राधा तो हि देषत श्रीकृष्ण कृतार्थ होऊं तू कैसी है अंधकार जु कुंज जो मार्ग
ता विषै जपतैं चहूं ओर चितवति है वक्र शिर कैसी है कृष्ण निकृष्ण निव्रति गद्दी कै छै है रे है रै पाद धरति है।

सभयचकितं विन्यस्यंती दृशं तिमिरे पथि प्रतितरु स्थित्वा मंदं पदानि वितन्वती कथमपि रहः प्राप्ता मुहुः
मंगैरनंगतरंगिभिः सुमुखि सुभगः पश्यन् स त्वामुपैतु कृतार्थतां ४ श्रीकृष्णायनमो नमः हरये नमः

सो काहे तें मतिया ही रूप की ओट हो हि तैं मोहि दुहा ही मिल ही याश्रम तें वक्र शिर तू कैसी है अनंग की उठति है
लहरि जिन्ह तें ऐसे जु अंग तिन्ह करि शोभति है लहरि कैसी है एकांत प्राप्त भई है सो तो कु देषि कृष्ण जी कृतार्थ हो
ऊं ४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

श्रीगो०टी० २२ कविकहतुहैदेवकीनंदनभक्तनिकीरक्षाकरहु सोकैसेहैदेवकीनंदन। परममुग्धजोराधातांकोजोमुख
कमलताविषेमधुपहै वज्ररिकैसेहै त्रैलोक्यकेमस्तकनिकेजोमुकटतिन्हमुकटनिकेनीलमणिरूप

राधामुग्धमुखारविंदमधुपस्त्रैलोक्यमौलिस्थलीनेपथ्योचितनीलरत्नमवनीभारावतारांतकः॥
स्वच्छंदंव्रजसुंदरीजनमनस्तोषप्रदोषश्चिरंकंसध्वंसनधूमकेतुरवतुत्वांदेवकीनंदनः॥१०॥

है। वज्ररिकैसेहै भूमिकोभारउतारिवेकोंसमर्थहै वज्ररिकैसेहै आपनेआधीनजोगोपिकातिन्हकेंमनकों
आनंददेतहैं वज्ररिकैसेहै कंसकोविध्वंसकरिवेकोधूमकेतुहै हरि २२

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अवसखीश्रीकृष्णजीकेंनिकटआइकरिराधाजीकेचरित्रकहतिहै सोंकहाकरिकें कुंजलोराधाजीहि
जानकोंअसमर्थदेषिकरि केसीहेराधाजीहिवहुतकालतेहै कृष्णजीविषे अनुरागजिन्हको केसेहैकृ
ष्णजी कामकरिविकलहै १ अवसषीराधाजीकीअवस्थाश्रीकृष्णजीसोंकहतिहै अहोकृष्णवहरा

अथतांगंतुमशक्तांचिरमनुरक्तांलतागृहेदृष्ट्वा तच्चरितंगोविंदेमनसिजमंदेसखीप्राह ह [illegible]
[illegible] पश्यतिदिशिदिशिरहसिभवंतं त्वदधरमधुरमधूनिपिवंतं नाथहरे
सीदतिराधावासगृहे २

धाजीवासगृहजोसंकेतस्थलताविषेतुम्हारेनिमित्तअतिदुःषपावतिहैं सोकेसेसोईकहतहै एकांतविषे
स्थितजोहैंराधासुअहोनाथअहोहरिचहूंओरतुम्हहिदेषतहैं तुम्हकैसेहो औरनाइकाकेअधरामृतको
पानकरतहो १

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गी०गो०टी०
३४

सो कैसी है राधा तुम्हारे रतिकरहको तुम्ह अभिसारण आइवो ताकौ जो उत्साह ताते चलिवेकौं जतन करति है अ
रु उठि चलति है अरु पैंड दोइ तौ चलि तें श्रम होत है तब फिरि सेज विषैं परति हैं ४ बहुरि कैसी है रा
धा विहित कीने है बिस किसलय जो है कोमल कमलनाल तिनके कंकण जिन ऐसी जो राधा सो तुम्हारी

त्वदभिसरणरभसेन वलंती पतति पदानि कियंति चलंती ४ विहितविशदविसकिसलय।
वलया जीवति परमिह तव रतिकलया ५ मुहुरवलोकितमंडनलीला मधुरिपुरहमितिभा
वनशीला ६

जो सुरतकेलि ताको स्मरण करिकरि जीवति है ५ बहुरि कैसी है राधा तिन्हहि बिनु एव अर्थ सहजानि बार
बार आपने आभूषण देषति है बहुरि कैसी है राधा हौ तजो है तुम्हारो ध्यान ताते मधुरिपु श्रीकृष्णजी हौं
ही हो ऐसी भावना करति है ६

कृष्ण
३४

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथसषीराधाजीसों आगिली अष्टपदी करिकहतिहै केसीहैराधाजी हरिजीकेचरित्रकोध्यानकरतिहै
बहुरिकैसीराधाजी॥ कामकरिदीनहै बहुरिकैसीहै दुःखकरियुक्तहै बहुरिकैसीहैराधाजी प्रेमकल
हकरिअंतररहितप्राप्तभईहै १ सखीकहतिहैअरीमानवतीराधामाधवन्हुहैश्रीकृष्णतिनविषैंअतिमा

॥इतिश्रीगीतगोविंदे .... ॥अथतांमन्मथखिन्नांरतिरसभिन्नांविषादसंपन्नां अनु
२ चिंतितहरिचरितांकलहांतरितामुवाचरहःसखी १ .... हरिरभिसरतिवहतिम
धुपवने किमपरमधिकसुखंसखिभुवने माधवेसखिमाधवेमाकुरुमानिनिमानमये १ ...

नमतिकरहि सोकारहैं वसंतुरितुकोजोवायुताकेवहतश्रीकृष्णकामवसहोइकरितेरोजोसंकेतस्थलतहां
श्रीकृष्णआपुहीपधारेताहेघरहूमैंकछूयातेअधिकसुषनांहीतातेमानछोडि १ श्रीराधागोविंददेवोजयति

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

सखी कहति हैरी राधा ताल फलहूं तै स्थूल अरु कठिन ऐसे जो कुच तिनहि काहि कौं निःफल करति है सो काहै तै श्री क्रष्ण के हस्त लागे विनु एवादि होत हैं॥ सो कैसे है कुच॥ जिनके देषै तैं श्री क्रष्ण के अति कामरस उपजत है॥ ता

तालफलादपि गुरुमतिसरसं॥ किं विफली कुरुते कुचकलशं॥ २॥ क
तिन कथितमिदमनुपदमचिरं॥ मापरिहर हरिमतिशयरुचिरं॥ २॥

ही तै अतिसरस है॥ २॥ सषी कहति है॥ अरी राधा मै सो सौ कै ई वार समझाई समुझाइ कह्यो अति सुंदर जो है श्री क्रष्ण ति
न्हंहि मति छौडै॥ सो एह बार बार कह्यो सो प्यारी श्री क्रष्ण तो कों प्राण सम जाणत है॥ अरु तेरै मन मै आवसो कहु॥ २

गी०गो०टी०
३५

श्रीराधाजीकीसखीकहतिहै। अहोकपटीकृष्णतुम्हारेश्रृंगाररससमुद्रमैंमग्नभईराधासोकहाकरिकै कामको
स्मरणकरिकै कैसीहैराधा तुम्हारे ध्यानसोलग्नभईहै वक्रकरिकैसीहैराधावक्रतनयोहैरोमांचजाकै।

विपुलपुलकपालीस्फीतसीत्कारमंतर्जनितजडिमकाकुः व्याकुलं व्याहरंती॥ तवकितवविधायामंदकंदर्पचिंतारसजलनिधिमग्ना ध्यानलग्ना मृगाक्षी॥१॥ श्रीकृष्ण॥

वक्रकरिकैसीहैराधाजी ध्यानकरिमनमैं अन्योजोआलिंगनतातैउपज्योंजोसात्विकभावतासात्विकतैका
कुवचनअरुव्याकुलवचनकहतिहैं काहेतैं विरहैकरिकैं भयोहैप्रमादतातैवाहैजसैंहीप्रलापक
रैहै।१। कृष्ण
३५

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सषी कहति है। अहो हरुमव हराधा अंगनि विषें आभरनि पहरति है। अरु जो नेकु पत्र ऊं बाजे है। तो तुम्हारो आइवो जानति है। अरु सेज बिछावति है। वकुरि ध्यान करति है। हि भांति आभरण पहिरिवो सेज बिछायवो प

अंगे षाभरणं करोति वकुग्रः पत्रे पि संचारे णी ग्रामं त्वां परिशंकिते वितनुते शय्यां चिरं ध्यायति। इत्याकल्प विकल्प तल्परचना संकल्प लीला शत ब्यासक्ता पि विनात्वया वरतनु र्मे षा निशां नेष्यति। २ ... त

त्रनेशाइ तुम्हारो आइवो ध्यान करिवो एई लीलाशत तिन्ह में चितु लग्यो है परि यह जो राधा सो हौं जानति हौं तुम्ह हि वितु रात्रि न गवाइहे। २६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गी०गो० अथचंद्रोदयतैंश्रीराधाजीकौंविरहाधिक्यवर्नतहै जिहिसमैंराधाजीकीसषीराधाकोविरहवर्नतहै ताहीसमैंचं
२६ द्रमाआपनेकिरएणनिकरिवृंदावनमैंमध्यप्रकाशहुतभयो कैसोहैचंद्रमा कुलटाजोअभिसारिकानाइकानि

अत्रांतरेचकुलटाकुलवर्त्मपातसंजातपातकइवस्फुटलांछनश्रीः॥ वृंदावनांतरमदी
पयदंशुजालैर्दिक्सुंदरीवदनचंदनबिंदुरिंदुः॥१॥ श्रीराधागोविंददेवोविजयति॥

नकोजोसमूह ताकोजोकीनोघाटकोरोकिवोतातैंमानहुपापउपज्योसोईप्रगटदेषियतुहैकलंकजाबिषे व कृष्ण
हुरिकैसोहैचंद्रमा पूर्वदिशाजोसुंदरीताकेललाटकोचंदनबिंदुहैमानहु॥१॥ श्रीराधागोविंदायनमोनमः २६

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

सोजोविरहिणीराधासोअतिपरितापकुंवरतिमई सोकैसोहैपरिताप विरचित कीनोहै बहुत भांति वि
लापजाविषें कहा होत शशधर जो चंद्रमा ताकी उजियारी के फैलत अरु श्री माधवजी के विलंब करत २
अब राधा अतिदुःखित होइ करि कहति है हे सखीन के बचन तें उह काई मई अब या निर्जन बन विषे

प्रसरति शशधरबिंबे विहितविलंबे च माधवे विधुरा विरचितविविधविलापं सा परितापं
चकारोच्चैः॥२॥ [illegible] कथितसमयेपि हरिरहह न ययौ वनं मम विफलमिदमम
लरूपमपि यौवनं यामि हे कमिह शरणं सखीजन बचनवंचिता [illegible]

कोंन कै सरन जाउं सो कैसो है सखी के बचन अरी राधा तूं संकेतस्थल विषें चलि श्री कृष्ण उहां पधारेंगे इ
हि भांति कह्यो है सो हे तो इहां आई अरु श्री कृष्णजी इहि समय पधारण कह्यौ सो समय बीतो परि श्री

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गी०गो० ३७ बहुरि राधाजी कहति हैं मैं श्रीकृष्णहिं सुरतकेलि करि संतुष्ट करिबे कौं रात्रि विषैं गहन जो है बन ता विषैं आई श्र
रुकृष्ण न पधारे ताहीतैं मोहि अकेली देषि काम आपने बानन करि बेधतु भयो २ श्रीराधाजी आपने मनसों

ममम रणमेव वरमतिवितथकेतना किमिह विषहामि विरहानलमचेतना ॥२॥
यदनुगमनाय निशि गहनमपि शीलितं तेन मम हृदयमिदमसमशरकीलितं ॥३॥

कहति हैं अब हौं विरहानल कौ जो संताप ताहि काहे कौं सहति हौं श्रीकृष्णजी बिनु मेरो शरीर व्यर्थ हैं तातें कृष्ण ३७
जो कोउ कपटी कान्ह सों मिलावै तौ जीवन होय नाहीं अब मेरो मरण भलो संताप काहे कौं सहौं ३ श्रीकृष्ण

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बहुरिराधाजीकहतिहै।अहहयहबडोकष्टमोहिपरममधुरजोवसंतकीरात्रितेऊबडोदुषदेतिहै।अरु कीनेहैबडोपुन्यजिनऐसीजोकोऊनाइकासोश्रीकृष्णसोंक्रीडाकरतिहै।सोहमैंकाहेकोचितवैगेवे॥४॥

।मामहहविधुरयतिमधुरमधुयामिनी कापिहरिमनुभवतिकृतसुकृतकामिनी।
॥ध्रु॥अहहकलयामिवलयादिमणिभूषणं हरिविरहदहनवहनेनबहुदूषणं॥५॥

बहुरिश्रीराधाजीआपनेमनसौंकहतिहै सोकहाकहतहै हाहाहाहावडोकष्टहै वलयआदिजोआभुषण तेसवप्यारेसांवरेविनायहजोजे तेसवमोकोअग्निसमानलागेहैं येभूषणनहीकृष्णविनामवदूषणहै॥५॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीराधाजी कहति हैं स्रक् जो फूलनि की माला सो ऊमेरै हृदय विषें काम के बाणनि की लीला करति है सो है कै
सी है कुसुम जो है फूल तिन समान कोमल है शरीर जाको कैसी है काम के बाण की लीला अति विषम है शील सु
भाव जाको ६ वक्रशिराधा कहति है वक्रत है बेतजा विषे औसी जो यह बनता विषे वसति हौं अरु दुःख पावति

कुसुमसुकुमारतनुमसमशरलीलया स्रगपि हृदि हन्ति मामतिविषमशीलया ६ अहमिह निवसामि न
विगणितवनवेतसा स्मरति मधुसूदनो मामपि न चेतसा ७ श्रीहरिचरणशरणजयदेवकविभारती व

हौ मधुसूदन जो हैं श्रीकृष्ण ते मोहि चित्त हू ना ही संभारत ७ श्रीकृष्णचरण है शरण जिनको औसे जो जयदेव
कवि तिनकी जो भारती सरस्वती सो भक्तन के हृदै विषें बसौ सो कैसी है सरस्वती कोमल कवित्त जुक्त है सो कै
सी है कवित्त जैसे नाइक के हृदै विषें अति चतुर नाइका बसति है ८ श्रीमद्राधागोविंददेवो जयतो श्रीकृष्ण

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अवजो सखी कौं भयो विलंब तातें श्रीराधाजी काम संतप्त है तर्क करति हैं आपने मन मैं कहति कांतप्रियजो॥ श्रीकृष्ण सों संकेतस्थल की नो जो कुंज तहां अव कून पधारे तातें जानति हौं काहू नाइकाहि अनुसरे। अथवा परम अंधकार ज्युक्त जो वन तामैं भूलि फिरत हैं सो भूलि जैतौ सों गोरजो एक बार देषी होइ यह गोर तौ वार वार दे

तत्किं कामपि कामिनीमभिसृतः किं वा कलाकेलिभिर्बद्धो बंधुभिरंधकारिणि वनोपांते किमुद्भ्राम्यति। कांतः क्लांतमना मनागपि पथि प्रस्थातुमेवाक्षमः संकेतीकृतमंजुवंजुललताकुंजेपि यन्नागतः॥१

खी है। ताहि के सैन भूलहिं सो कहति हैं मेरे स्मरण हि करि विवश भये हैं तातें पैंड चलिवे ही कों असमर्थ भए हैं

क तातें मो पै उन कौं कृपा है अरजो कछु मेरी अपराध है तो सखी तु मेरी वोरकी वीनती करि हौ सो वे वीनती करत होयगी जा सो विलंब भयो है सो उन को लै कै आवगी जातें विलंब भयो है ऐसी भांति तर्क करति भई॥१

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गी०गो० अब श्रीराधाजी की सखी राधाजी विनाम धव आई देषे करि आगिली अष्टपदी करि कहति है सषी कैसी है
२९ विषाद जो कार्ज न जयो ता तें दुःखता करि कछू कहिवे कों असमर्थ है राधाजी कैसी हैं जनार्दन श्रीकृष्ण ति

म्र अथागतां माधवमंतरेण सखिमियं वीक्ष्य विषादं कां विशंकिमानाः स्मितं कयापि जनार्दनं दृ
ष्टवदेतदाह॥१

रहिं कारूनाइका सो रमै हैं दूर ह्वै जात उपजी जो संका कर न जये दूर जानि कै सो केसो है मानकूं नाइका स हि कृष्ण
तदेषै है सो कैसे देषे मानों नायका के साथि रमै है ऐसे देखती भई या को भावार्थ इह है २ श्रीकृष्णाय २९

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राधाजी कहति हैं अरी सषी को ऊ एक नाइका श्रीकृष्णसों क्रीडा करति है सो कैसी है नाइका मो ह्नतें अधिक है
रूप अरु गुण जा विषें वऊरि कैसी है नाइका स्मरजो है कामता को जो संग्राम अनुरत ता ला इक कीनो है विग्रजिन

स्मरसमरोचितविरचितवेशा दलितकुसुमदरविगलितकेशा कापिमधु चापल्या
रिपुणा विलसतयुवतीरधिकगुणा हरिपरिरंभणचलितविकारा कुचकलशोपरितरलि
तहारा २

अरु गिरत है फूल जिनतें ऐसे है केश जाके १ वऊरि कैसी है नाइका श्रीकृष्ण दीनो जो आलिंगन तातें उप
ज्यो जो विकार जाकें फेरि कैसी है नाइका जाके अंगन मै आभूषन चमकत है अरु शोभित है हार जाके २

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गी०गो० बहुरि कैसी है नाइका चंचल जो है अलक तिनकरि सोभित है सुखचंद्रमा जाको अरु श्री कृष्ण करि कीनो जो
४०
अधर पान तातें नयो जो आनंद तातें निश्चल कैंश ही है फिरि कैसी है तांबूल करि ओष्ठ लाल नयो जाकरि ३

विचलदलकललितानन चंद्रा तदधरपानरभसकृततंद्रा ३ चंच
लकुंडलवलितकपोला मुखरितरसनाजघनगतिलोला ४ राधा

मा बहुरि कैसी है हूका चंचल जो है कुंडल तिनकरि ललित मनोहर होत है कपोल जाके अरु शब्द करि है छु
क्षुद्र घंटिका जा विषें असो जो जघन तिनकी जो गति चपलता करि चंचल है जामें लाल को मन ह्र सो गयो है ४

कृष्ण
४०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वक्रारि कैसी है नाइका । दयित जो हैं श्रीकृष्ण तिनको जो विलोकन कहिवो चितैवो तातें कछुएक लज्जा करति है । अ
रु वक्रतविधुमानानांति जो कूजित शब्द ताकरि जु क्लि जो रति क्रीडा ताकरि आनंदित है ५ वक्रारि कैसी है नाइका
वक्रतन एं है रोमांच जाके अरु वक्रत है कंप जाविषै अरु स्वसित जो है सास जाविषै ६ वक्रारि कैसी है नाइका सु

दयितविलोकितलज्जितहसिता वक्रविधकूजितरतिरसरसिता ५ विपुलपुलकपृथुवेपथुभंगा । स्व
सितनिमीलितविगसदनंगा ६ श्रमजलकणभररसुभगशरीरा प्रतिताररसिरतिरणधीरा ७ श्रीजय परि
देवभणितहरिरमितं कलिकलुषंसमयतुपरिसमितं ८

रति तें भयो जो प्रस्वेद ताकरि शोभत हैं शरीर जाको अरु श्रीकृष्णजी के वक्षस्थल विषे परी हैं अरु कामसंग्राम विषै अ
तिसूर है ७ श्रीजयदेवजी करि वर्णित जो है यह श्रीकृष्ण की संभोग क्रीडा सो भक्तन के जो कलियुगकृत पाप तिन
हिं दूरि करो कैसो है गीत सब शृंगारन को सीरदार दार है रसिकजन भक्तन कौ तो जीवन है ८ श्रीकृष्णायनम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

राधाजी कहति है। अरी सखी चंद्रमा मेरे हृदय विषें अति अधिक पीडा हि करतु है सो कैसो के सो है चंद्रमा म
विरह करि पांडुर वर्ण भयो जो श्री कृष्ण मुख कमल ताकी सी है शोभा जा विषे सो कहा करत ज्ञान हि दूरि करत
वकुरि कैसो है चंद्रमा मनोज्ञ वजो कामता को मित्र है १ श्री राधाजी सखी के आगें श्री कृष्ण की चेष्टा कहति है।

विरहपांडुमुरारिमुखांबुजद्युतिरयंतिरयन्नपि वेदनां विधुरतीव तनोति मनोभुवः सुहृदये सुहृदये
मदनव्यथां॥१॥ [illegible] समुदितमदने रमणीवदने चुंबनवलिताधरे मृगम
दतिलकं लिखति सपुलकं मृगमिव रजनीकरे विजयी मुरारिरधुना रमते यमुनापुलिनवने

अरी सखी जी सो है काम संग्राम जिनने ऐसे जो मुरारि श्री कृष्ण ते जमुना के तीर विषे जो वन तामें क्रीडा करत है सु कैसे
है रमणी जो है कोऊ एक नाइका ताको तिलक ता हि लिषत हैं रोमांच होत है जा के देषत कंदर्प प्रगट होत है। चुंबन
के निमित्त सनमुख कीनो है अधर जा विषे कस्तूरी को तिलक कैसो नाइक के लीला रमें मानो चंद्रमा ता विषें मृगलांछ

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वक्रूरि कहा करत है श्रीकृष्ण तानादूका के जो केश तिन विषैं कुरव वृक्ष के फूल तिन्हें हि गुहत हैं। वक्रूरि कैसे हे
वा प्रिया के केश मे घन को जो समूह ते मै मनोहर हैं। वक्रूरि कैसे हैं केश चंचल कीनो है तरुण जो है श्री कृष्ण ति

घन चय रुचिरे रचयति चिकुरे तरलित तरुणानने कुरबक कुसुमं चपलासुषमं रतिपति मृग कानने ॥२॥

नको मुख जिन करि। वक्रूरि कैसे है केश मालती के जो पुष्प ता के विषे गुहे है आपने कर तें वक्रूरि कैसे हे केश
रतिपति जो है कामो ई जो मृग सिंह ताको वसिवे को वन है कैसै है कुरव के वृक्ष के फूल विधुलता है मानो २

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गी॰गो॰ ४२ वक्ता कहा कहत हैं। श्री कृष्ण नायका के जो दोऊ कुच तेई जुगल गगन आकाश तिन विषैं मोतीन को हार सोई
नये नक्षत्र समूह ता हि बनावत हैं सो कहा जहां आकाश होइ तहां नक्षत्र चाहिजैं अरु चंद्रमा चाहिजै सुघन
मए आकाश मोतीन को हार सो नक्षत्र अरु चंद्रमा चाहिजै नखक्षत जो नयो चंद्रमा ता करि शोभत है कैसे हैं स्त
न मृगमद जो है कस्तूरी ता की जो कांति ता करि शोभित हैं ५ वक्ता कहा कहत हैं श्री कृष्ण जी नायका के

घटयति सुघने कुचयुगगगने मृगमदरुचिरूषिते मणिसरममलं तारकपटलं नखपदशशिभूषिते।
जितविशकलेम्रदुभुजयुगले करतलनलिनीदले मरकतवलयं मधुकरनिचयं वितरति हिमशीतले॥ ५

जो दोऊ भुज तिन विषैं नीलमणि जटित जो है कंकण पहरावत हैं सु वे कंकण कैसे हैं हिहस्त जो है सो कमल है नीले
नीलमणि तैं भ्रमर हैं मानो सो कैसे हैं दोऊ भुज कोमलता करि जीते हैं कमलजिन वक्ता कहै कैसे नायका के दोऊ भु
ज कमल करतल जो है हथेली तेई हैं पत्र जा के वक्ता कहै कैसे हैं भुज हिम जो है तुसार ता समान शीतल जो है ५ कृष्ण ४२

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वक्तरिकहाकरतहैश्रीकृष्णजी। नाइकाकोजोकामकोघरजघनताविषेमुक्तावलीजोमेखलाताहिपहिरावतहै सोकैसोहैजघन अतिस्थलजोहै वक्तरि॰ मनसिजजोहैंकामताकोसुवर्नमयसिंघासनहै मणिजटितहै क्षुद्रघंटिकाजाविषै वक्तरि॰ पहिस्योहैवस्त्रजाविषे क्षुद्रघंटिकाकैसीहै तोरणजोहैवंदनमालताकोहै

रतिगृहजघनेविपुलापघनेमनसिजकनकासने मणिमयरसनंतोरण
हसनंविकिरतिकृतवासने ५ चरणकिसलयेकमलानिलयेनखमणि
गणपूजिते वहिरपवरणंजावकजरणंजनयतिहृदियोजिते ६

सतिहै ५ वक्तरिकहाकरतहैश्रीकृष्ण नाइकाकेजोचरणतिनविषेंजावकजोहैमहावरताहिपूर्नकरतहै सोकैसेहैनाइकाकेचरणअतिअनुरागतैंश्रीकृष्णजी हृदेविषेंधरेहै कैसोहैश्रीकृष्णकोहृदय कमलाजोहैलक्ष्मीताकोनिलयस्थानहै कैसेहैनाइकाकेचरणनखजोमणिसमूहतिनकरिपूजेहै कैसोहैमहावर वाहिरहीप्रगटहोतहैं ६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गी० गो० राधाजी कहति हैं। अरी सखी हलधरके सहोदर कहिजे भाई असे जो कृष्ण ते जो निश्चै करि और नाइकासों क्रीडा कर
४२ तहें तो अब यह तत्त सो मो कहि हों इन कुंजनि में वादिका हे कौंर हति हों अरु विवस हो ति हों ७ जयदेवजी कहत

रमयति सुन्दरीं कामपि सुदृशं खलु हलधरसोदरे किमफलमवसं चिरमि
ह विरहेण वद सखि विटपोदरे ७ इह रसभणने कृतहरिगुणने मधुरि
पुपदसेवके कलियुगचरितं न वसतु दुरितं कविनृपजयदेवके ८

हैं सो विषै कलियुगकृत पापमति रहो सो हों कैसो हो। श्री कृष्ण के शृंगाररसको कर्त्ता जो हों वर्णि हों कैसो हो प्र कृष्ण
गायो है श्री कृष्ण के गुण जिन वर्णि हो कैसो हो। मधुरिपु जो है श्री कृष्ण तिन के चरणको सेवक हो कृपाचा हो ऊं ८ ४२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अवराधाजीश्रीकृष्णजीकेविनाल्लेआएतैंदुःखितभईजोसषीताहिसमुझावतिहै अरीसषीजोपरमनिर्दय
अरुवंचकसेकृष्णनआएतौतूकाहेकोंदुःखपावतिहै वेवऊतहैंप्रियाजिन्हकेअरुस्वेछाचारीहैंतिन्हप्रि
यान्हसौंक्रीडाकरतहैं तेरोकौनअपराधतूमतिदुःखपावहि कदाचितसषीकहैतोवेइहांकैसेंआईहैं

नायातःसखिनिर्दयोयदिशठस्त्वंदूतिकिंदूयसेस्वछंदंवऊवल्लभःसरमते
किंतत्रतेदूषणं पश्याद्यप्रियसंगमायदयितस्याकृष्यमाणंगुणैरुत्कंठार्त्ति
भराद्विवस्फुटद्दिदंचेतःस्वयंयास्यति १ श्रीराधागोविंददेवौजयति

ताकोंकहतिहैं अरीसषीतूदेषिजहिंआजुपरमप्रियजेकृष्णतिन्हकेगुणकरिआकर्ष्योमेरोमनउन्हके
संगकोंआपुहीजाइगो सोकैसोहैमेरोमन जईजोकामपीडाताते वाहिरहोतहैमानऊ १ श्रीकृष्णाय

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राधाजीसखीसोकहतहे अरीश्रीकृष्णजानाइकासोंकीडाकरीहेसोईनाइकापल्लवनकीसेजतापरनांहीपोर
ति कैसेहे वनमाली अनिलजोहेवायुताकरिचंचलकीनेजोनीलकमलतिनसमानहैंनेत्रजिनके १ स
खीसोराधाजीकहतिहैं अरीसखीकृष्णसोरमीहैसोनाइकाकामकेवाणनिकरिनाहीवेधिजाति कैसेहैश्रीकृ

अनिलतरलकुवलयनयनेन पततिनसाकिसलयशयनेन सखिहेरमिता वनमालिना १ विकसितसरसिजललितमुखेन स्फुटतिनसामनसिजविशिखेन २

ष्ण फूलेकमलसमानउहडह्योमुखजिनको २ राधाजीकहतिहैं अरीसखीजोनाइकाश्रीकृष्णकरिरमाईहे
मलयपर्वतकोजोवायुतातेनाहीदुःखपावति कैसेहैश्रीकृष्ण अमृतसेमधुरअरुकोमलहैवचनजि
नके ३

मूल अमृतमधुरमृदुतरवचनेन ज्वलतिनसामलयजपवनेन ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राधाजीकहतिहैं अरीसषीश्रीकृष्णजनाइकासौंक्रीडाकरीहैंमुनाइकावदमाकीकिरणनिकरिनाहीं।संतापहिपाव
ति कैसेहै श्रीकृष्णस्थलकमलनिकीसीहैकांतिजिनकी ऐसेहैहस्तअरुचरणजिनके ५ राधाजीकहतिहै अरी

स्थलजलरुहरुचिकरचरणेन दूहतिनसाहिमकरकिरणेन ४ सजलजलदसमुदयरुचिरेण दलतिन
साहृदिविरहजरेण ५ कनकनिकषरुचिशुचिवसनेन श्वसितनसापरिजनहसनेन ६ श्रीकृष्ण

सषीजोनाइकाश्रीकृष्णकरिआईहैसोनाइकालोकनिकीहासीकरिपाईनाहींजाति कैसेहै श्रीकृष्ण अतिसैकरि
नाइकामैहैनेहजीनको वक्रकिसेहैश्रीकृष्ण जैसेंकसोटीमेसोनाकीरेषाहोइतैसोशोभतहैंपीतांबरजिनको ६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गी॰गो॰टि॰
४५

राधाजीकहतिहैं। अरीसखीजोनाहूकाश्रीकृष्णकरिश्माईहैसोनाहूकापीडाहिनाहीपावति कैसेहैश्रीकृष्णसक
ललोककेजुतरूणपुरुषतिन्हहूं तेश्रेष्टतरुणहैं वहुरिकैसेहैश्रीकृष्ण अतिहैकरुणादयाजिनके ७ श्रीजय

सकलभुवनजनवरतरुणेन वहतिनसारुजमतिकरुणेन ७ श्रीजयदेवभणि
तवचनेनाप्रविशतुहरिरपिहृदयमनेन ८ श्रीराधागोपीनाथजीश्रीराधागोविंद

देवकविपहगीतश्रीगोविंदजीकोगायोहै सोकैसोहैयहगीत श्रीकृष्णवृंदावनचंदकेचरणारविंदकेजोभक्ततिन कृष्ण
कोकृपाकरहु वहुरिकैसोहैगीत श्रीकृष्णकेभक्तजनतिनकेजोहृदयतिनकोप्रेममेंपरायणकरतहै ॥८॥ ४५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गी॰गो॰टि॰ ४५ राधाजीकहतिहैं। अरीसखीजोनादूकाआलिंगनकरिश्माईहैसोनादूकापीडाहिमाहीपावति। कैसेहैश्रीकृष्णसक
ललोककेजुतरुणपुरुषतिन्हकूंतेश्रेष्ठतरुणहैं। बहुरिकैसेहैश्रीकृष्ण। अतिहैकरुणादयाजिनके॥७॥श्रीजय

सकलभुवनजनवरतरुणेन। वहतिनसारुजमतिकरुणेन॥७॥श्रीजयदेवभणि
तवचनेन। प्रविशतुहरिरपिहृदयमनेन॥८॥श्रीराधागोपीनाथजीश्रीराधागोविंद:

देवकविपहगीतश्रीगोविंदजीकोगायोहै। सोकैसोहैपहगीत। श्रीकृष्णवृंदावनचंद्रकेचरणारविंदकेजोभक्ततिन कृष्ण
कोकृपाकरऊ। बहुरिकैसोहैगीत। श्रीकृष्णकेभक्तजनतिनकेजोहृदयतिनकोंप्रेममेंपरायणकरतहै॥८॥ ४५

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राधाजी कहत हैं॥ अरे काम के आनंदकारी चंदन के वायु प्रसन्न होहि मोपर अरु अनुकूल होऊ क्षण एक पीछे श्रीमा
धवजी कौं मेरै आगैं करि मेरैं प्राणनि निसांक हरिजहि॥ अब ही नेक न कसि हूं तो संसार के प्राण निरापतु है मेरैं काहे ह
रहि॥१॥ अर्थ॥ अब सषी तुसौं कहति है राधाजी अरी सषी जिन्हं के हरिय धारे तैं यह जो सषी तुम हित वसिवो सो रिपुसो

मनोभवानंदनचंदनानिल प्रसीद रे दक्षिणमुंच वामतां क्षणं जगत्प्राण विधाय माधवं पुरो मम प्राण हरो भवि
वा ष्यति॥२॥ रिपुरिव सषि सौंथं सखी वहिमानिलो विषमि वसुधारस्मिर्यस्मिन् दुनोति मनो गते॥ हृदयमदये
तस्मिन्नेवं पुनर्वलंते वलाकुवलयदृशां वामः कामो निकामनिरंकुशः॥२॥ श्रीकृष्णराधावल्लभो जयति॥

मनहि संताप देतु है॥ अरु हिम जो वायु सो आगि लौ मेरैं मनहि दहतु है॥ अमृतरूप है किरणि जाके ऐसो जो चंद्रमा वि
षसो लागतु है॥ अरु जिन्ह के लीने ऐसी गति भई तिन्हही निर्दय कृष्ण विषैं मेरो मन वनरजत हा हठ करि वलात्कार प्रवि
ष्ट होत है सो हौं जानति हौं स्त्रीनु को काम निश्चय करि निरंकुश स्वेच्छाचारी है॥२॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गी॰गो॰ ५८

अवश्रीराधाजीप्राणनितैंउदासह्वैकहतिहै। अरेचंदनवनकेवायुपीडाकरि अरेपंचबाणकामप्राणनिलेहि
जैसैवकुरिघरनजाउ॥ अरीजमकीबहिनिजमुना आपनेतरंगनिकरिमेरेअंगनिसींचिजोदेहकोदाहमिटै

बाधांविधेहिमलयानिलपंचबाणप्राणान्गृहाणनगृहंपुनराश्रयिष्ये॥ किंतेकृतांतभगिनिक्षमयातरं
गैरंगानिसिंचममशाम्यतुदेहदाहः॥७॥ श्रीमद्राधागोविंददेवोजयति॥ श्रीमद्राधागोपीनाथोजयतां॥

अरुमेरोहृदैसीतलक्योनहीकरत॥ कदाचितजमुनाकहैहै अरीआलीतुमेरेसंगचलिमेंतोकुमधुरिपुसोमिला
उं॥ तबकहैहै॥ अरीतुजरीकोंक्योंजारतहै॥ तुकृतांतजोजमताकीतुबहनि तोहिक्षमासोकहाकामु॥ ऐसेनिरपेक्षके ५८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कविकहतुहैश्रीगोविंदजूकेचरणकमलतिन्हंहिहमअपनेअभ्युनहूरिकरिकेक्योवदतुहैं सोकैसेहैचरण
कमल वंदतहैआनंदजिनकेऐसेजोइंद्रहिआदिसकलदेवतातिन्हकेजोमुकटनिकेनीलमनितिन्हंक

सांद्रानंदपुरंदरादिदिविषद्वृंदैरमंदादरादानम्रैर्मुकुटेंद्रनीलमणिभिःसंदर्शितेंदीवरं स्वच्छंदमक
रंदसुंदरगलन्मंदाकिनीमेदुरंश्रीगोविंदपदारविंदमशुभस्कंदाय वंदामहे ४

रिशोभितहै वहुरिकैसेहैचरणकैंसोईकहतहैं जनजनरसिकजनतिनकेमनकोहृदैकोसंतापताहिहरि
करतहै वहुरिकैसेहै प्रगटहोतभोगंगासोईमानऊकमलकोपरागहैताकरिसुंदरहैं ४ श्रीकृष्णायनमोनमः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गी॰गो॰ ४७

अबराधाजीप्रसन्नए आए अरु आगे गए है विनती करतहै जो श्री माधवजी तिनसों ईर्षासहित बचन कहति है॥
सो आगिली अष्टपदी करिकै सो कहै राधाजी कैसे है कैसे गवाई है शत्रिजिन अरु कामबाणनिकरि अतिपीडित

अथ कथमपि यामिनीं विनीय स्मरशरजर्जरीतापि सा प्रभाते अनुनयवचनं वदंतमग्रे प्रणतमपि प्रियमाह सा
सूयं ॥५॥

करीत है सो वाकी जो भई है जो व्यथा ताकरि व्याकुल भई है जासो व्यथा जो होयजाकरि जाहै सो ही कहत है हम ४७
तब प्यारी की सखी बोली अरी प्यारी मै इनको क्यो हो क्यो ऊ करिकै लाई हों सो तु इनको सनमान करि प्यारि कहीरी चु नव८
परहरी ॥६॥

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पछिले श्लोकमें जो कहि आए सुराधाजी ईर्ष्या सहित वचन कहति हैं अहो माधव अहो केशव तुम्ह पधारो हरि हरि
कैतववाद जो है मिथ्या वचन ताहि मति बोलऊ अरु वाही नाइका हि अनुसरहो जो तुम्हारे ऊ: षहि दूरि करै सोभि

रजनिजनितगुरुजागररागकषायितमलसनिमेषं वहतिनयनमनुरागमिवस्फुर
मुदितरसमुदितरसाभिनिवेशं हरिहरियाहिमाधवयाहिकेशवमावदकैतववादं तामनुसरसरसी
रुहलोचनयातवहरतिविषादं १

या वचनके मैं जाने सोई कहति हैं अहो कृष्ण रात्रि विषे कीनो जो अतिजागरण तातें कषायु भए हैं अरु आलस्य
युक्त भए हैं ऐसे जु तुम्हारे नेत्र ते तुहारी प्रीति हि प्रगट करत है केसे हैं नेत्र और नाइका सौं कीनी जो तु रति के
लिता के अभिप्राय हि जनावत है १

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गी०गो०

४८ अवराधाजीश्रीकृष्णकेजोओरनाइकासोंरतिकेलिकेचिह्नतिन्हहिप्रगटकरिकहतहैं अहोकृष्णजोतुम्हारेजोदशन
वसनकहिजेअधरतेतांबूलभक्षनतैंआरक्तहुतेपरिअवजोतुम्हवानाइकाकेनेत्रनिविषैचुंवनकीनोसोकज्ज

कज्जलमलिनविलोचनचुंवनविरचितनीलिमरूपं। दशनवसनमरुणंतवकृष्णतनोतितनोरनुरूपं २ श्रीमद्राधागोविंददेवो

ललगयोतातैंनीलेदेषिजतहैंसुमानहुतोम्हारेशरीरकीबराबरकरतहैं सोकहा तुम्हारेअधरतांबूलतैंआरक्तभए कृष्ण
हैं परिअवनाइकाकेनेत्रकज्जलतैंजैसोतुम्हारोरूपहैतैसेईभए २ श्रीराधागोविंददेवोजयति श्रीगोपालदेवोजय ४८

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राधाजी कहति हैं अहो कृष्ण तुम्हारो शरीर काम संग्राम के जय कौं जो पत्र ता सो वरावरि करतु है सो कैसो तुम्हारो शरीर लगि है वा नाइका के ती क्षण नखजा विषैं कैसो है काम जय पत्र मरकत मणि जो नीलमणि ता विषैं सोने की मसि सौं लिष्यो है श्री कृष्ण के अंग मैं वा नाइका के नखल गैं हैं तिन हि देषि राधाजी कहति भई जो पत्र तुम्हारे देह कि धौं सोने सौं लिष्यो काम

वपुरनुहरति तव स्मर संगर खर नखर क्षत रेखं मरकत सकल कलित कलधौत लिपेरिव रति जय लेखं ॥ ७ ॥ चरण कमल गलदलक्तक सिक्तमिदं तव हृदयमुदारं ॥ दर्शयतीव बहिर्मदन द्रुम नव किसलय परिवारं ॥ ८ ॥ श्री गोविंदाय नमो नमः

को नीलमणि के पत्र है यह ॥ ७ ॥ वहुरि राधाजी कहति हैं अहो कृष्ण वा नाइका के चरणनि तैं गिर्यो जो महावर ताकरि तुम्हारो अति विशाल जो है वक्षस्थल सु भीज्यो है सो महावर न होइ तुम्हारे हृदय तैं प्रगट होत जो है काम वृक्ष ताके नूतन पत्र है मानहु ॥ ८ ॥ ८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गी॰गो॰ ४९ राधिकाजी कहति हैं। अहो कृष्ण तुम्हारे अधर विषै जो नाइकाको दंतक्षत भयो है सो मेरे चित्त कौं उपताप उपजावतु हैं।
सो अहो प्रभु तुम्हारो शरीर अजहू मोसौ काहे तैं नेह नाही उपजावतु सु कहो जो तुम्ह मेरो मान भंग कीयो अरु हौ तु
म्हारे दंतक्षत नहि देखि दुःख पावत हौं ५ श्री राधाजी कहति हैं अहो कृष्ण नैं मैं तुम्हा बाहिर मलिन होते मो हो जानति

॥ दृष्वानपदे ज्ञवदधरगतं मम जनयति चेतसि खेदं कथय पति कथमधुनापि मया सह तव वपुरेत
भेदं ५ वहिरिव मलिनतरं तव कृष्ण मनोपि भविष्यति नूनं कथमथ वंचयसे जनमनुगतमसमशर
ज्वर दूनं ६ भ्रमति भवाननवलाकवलाय वनेषु किमत्र विचित्रं प्रथयति पूतनिकैव वधूतवनिर्दय
बोलचरित्रं ७।

हो मन हूं मैलो होइगो अन्यथा कामज्वर करि दुःखित अति तुम्हारे शरण आई ऐसी मोहि काहे डहकावत हो तातैं कृष्ण ४९
हौ जानति हौ तुम्हारो चित्त पुनि मलीन है ६ कृष्ण तुम्हनां ही है वलजिनकै ऐसी जो स्त्री तिन्ह हि मारिवे कौं वन फिरत हौ
सो याको आचरज कहा ७

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीजयदेव कहत है। अरे पंडित तोय हमो कहिक हौ जो श्रीकृष्ण करि हरकी ऐसी जो पंडिता नाइका ताको विलाप
ताहि सुनो सो कैसो है यह गीत विबुधालय जो स्वर्ग ताहूतें दुर्लभ है अरु अमृत समान मधुर है ८ आगे हाय जो
रे गदो जो माधवजी तिन्हें सो राधाजी कहति है अरे धूर्त कपटी कृष्ण मेरी प्रीति प्रगट सब जानत है ताकौ तोमं

श्रीजयदेवभणितरतिवंचितखंडितयुवतिविलापं शृणुतसुधामधुरं विबुधालयतोपि दुरापं ८ तवेदंपश्य
न्त्याः प्रसरदनुरागं वहिरिव प्रियापादालक्तच्छुरितमरुणच्छायहृदयं ममाद्यप्रख्यातप्रणयभरभंगेन कित

गकीतो तातें उपज्यो जु शोक ताकरतें तेरो दर्शन मोकों बहुत लाज उपजावत हैं हो केसी हैं तुम्हारी प्रिया ताको
चरण को जो महावर ताकरि व्याप्त तुम्हारे हृदय हि देखति हौ कैसो है हृदय अरुण है छाया जाकी सो अरुणता
कही है प्रिया विषै जो अनुराग प्रीति सोई बाहिर देखियत है मानहु सोई याको या श्लोक मे दिखायो है १०?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

कविकहतहैनंदात्मजजोहैश्रीकृष्णजीतेलोकनिसुषदेऊ कैसेहैनंदात्मज लाजकरिचंचलजोहैनैननिकीके
रताहिराधीजीकेमुखतनराखिकरिमतिमुसकानिजोजुक्तहैसुषजिनको मुसकानिकोकारणकहतहै श्लोकः

वत्वदालोकः शोकादपिकिमपिलज्जांजनयति १ प्रातर्नीलनिचोलमच्युतमुरःसंवीतपीतांशुकं राधा
याःश्चकितंविलोक्यहसतिस्वैरंसखीमंडले व्रीडाचंचलमंचलंनयनयोराधायराधानने स्मेरस्मेरमुखो
ऽयमस्तुजगदानंदायनंदात्मजः॥२

कालहीनीलांबरश्रीढेश्रीकृष्णजीकौदेषिकरिअरुराधाजीकौपीतांबरपहिरैदेषिकरिसषीनुकेहसतश्रीकृ
जीमुसकानिजुक्तजए

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथसषीराधाजीसौं आगिली अष्टपदी करिकहतिहै केसीहैराधाजी हरिजीकेचरित्रकोध्यानकरतिहै
वहुरिकैसीराधाजी॥ कामकरिदीनहै वहुरिकैसीहै दुःखकरिजुक्तहै बहुरिकैसीहैराधाजी प्रेमकल
हकरिअंतरहितप्राप्तभईहै १ सखीकहतिहै अरीमानवतीराधामाधवजुहै श्रीकृष्णतिनविषैं अभिमा

॥द्वि [illegible] अथतांमन्मथखिन्नांरतिरसभिन्नांविषादसंपन्नां अनु
२ चिंतितहरिचरितांकलहांतरितामुवाच सहःसखी १ हरिरभिसरतिवहतिम
धुपवने किमपरमधिकसुखंसखिभुवने माधवेसखिमाधवेमाकुरुमानिनिमानमये १

नमतिकरहि सोकारहैतें वसंतरितुकोजोवायुताकेवहतश्रीकृष्णकामवसहोइकरितेरोजोसंकेतस्थलतहां
श्रीकृष्णआपुहीपधारेतातैघरहूमैंकछूयातैअधिकसुषनांहीतातैमानछोडि १ श्रीराधागोविंददेवोजयति

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गी०गो०टी०
५१

सखीकहतिहैरीराधातालफलहूंतैस्थूलअरुकठिनऐसेजोकुचतिनहिकाहिकौंनिःफलकरतिहैसोकाहेतै
श्रीकृष्णकेहस्तलागेबिनुएवादिहोतहैं सोकैसेहैकुच जिनकेदेषैतैश्रीकृष्णकेअतिकामरसउपजतहैता

तालफलादपिगुरुमतिसरसं किंविफलीकुरुतेकुचकलशं २ क
तिनकथितमिदमनुपदमचिरं मापरिहरहरिमतिशयरुचिरं २

हीतैअतिसरसहै २ सखीकहतिहै अरीराधामैंतोसोंकेईवारसमुझाईसमुझाइकह्योअतिसुंदरजोहैश्रीकृष्णति कृष्ण
न्हेंहिप्रतिछोडै सोएहबारवारकह्योसोप्यारीश्रीकृष्णतोकोंप्राणसमजाणतहै अरुतुतेरेमनमैआवसोकहु २ ५१

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सषी कहति है अरी राधा पहिले श्रीकृष्ण सौं मान कीनो अरु अब विकल होइ करि काहे कौं दुःख करति हैं अरु काहे कौं रुदन करति है इन बातनि तैं और जो तरुणी स्त्री ते सब तोहि हसति है ४ सषी कहति है अरी राधा जलकरि सहित जो है कमलिनी दल तिन करि जो सैंन पहिलै जो रची ही ता पर श्रीकृष्ण बैठे है तिनहि देषि करि आपने नेत्र

किमतिविषीदसि रोदसि विकला विहसति युवतिसभा तव सकला ४ स
जलनलिनदलशीलितशयने हरिमवलोकय सफलय नयने ५ जनय
सि मनसि किमिति गुरुखेदं शृणु मम वचनमनीहितभेदं ६ श्रीगोविंद

सफल करि अरु मान हि छोडि ५ सषी कहति है अरी राधा तू आपने चित्त विषैं काहे कौं वहुत दुःख करति हैं तेरे विरह हि ना ही वांछत ऐसो मेरो वचन ताहि सुनि हौ सुनि हौ सुनि हौ तेरो हित वचन कहति हौं ६ श्रीकृष्णाय

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गी०गो०टी०
५२

पहिलेपदविषैंकहौजोहौंहितवचनकहतिहौताहिकहतिहैश्रीराधातमामहिछोडिश्रीकृष्णतेरेनिकटपधा
रोश्ररुतोसौंमीठेवचनवोलऊ तवादिहीश्रापनेहृदयकौंकाहेकौंविकलकरतिहै ७ श्रीजयदेवकरिक

हरिरुपयातुवदतुवक्रुमधुरं किमितिकरोषिहृदयमतिविधुरं ७ श्री
जयदेवभणितमतिललितं सुखयतुरसिकजनं हरिचरितं ८ श्रीकृष्ण

हौजोयहगीतताकोश्रीराधागोविंदजीश्रापनेहाथदसकतकीनेहै वकुरिकैसोहैगीत श्रतिमनोहरहरिकरि कृष्ण
कोचरित्रसोश्रीराधागोविंददेवश्रापनेजोरसिकजननिकौसुषदाताहोऊ वकुरिश्रानंदकीनीधिहैयहगीत ५२
८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मवसरजो प्रियतिन्हसौं मानजु कजुराधाजी तिन्हसौं सषी कहति है। अरी बिपारी तिउलटी करि निहारि मंको चर
हितराधा मधुर बोलत जो हमतिन्हसौं तू कगेर है। अवरु वे प्रणाम करत है। तू फिरि वैगी है ता ही मैं तो कौं चंद

मु स्निग्धे यत्परुषाभियत्त्वणमतिस्तब्धाभियद्रागिनी द्वेषस्थाभियदुन्मुखेविमुखतां यातासि तस्मिन्प्रिये तद्यु
क्तं विपरीतकारिणि तव श्रीखंडचर्चाविषं शीतांशुस्तपनो हिमं हुतवहः क्रीडामुदो यातना॥ १ ॥ हम

नकी बात कुनि बिषसी लागति है। अरु चंद्रमा सूर्ज सो लागतु है। अरु क्रीडा जु है ते जातना सी लागति है सो यह तौ
जुक्त है जो तू मेरो कह्यो करि। ज्यो तू मेरो कह्यो न करगी तो पीछै मेरो कह्यो ज्यो वचन ता कों पीछै तु आदि करैगी २

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गी०गो०टी० ५२ अब कवि कहतु है कंस के रिपु जो श्री कृष्णजी तिनकी मुरली को शब्द भक्तनि के अशुभनि दूरि करो सु कैसो है मुरली
को शब्द मृगनैनी स्त्रीनु के मन हि मोहिवे कौं अरु मत्ते ऐसे कहि मस्तक डुलाइवे तें पारिजात के फूल गिराइवे कौं
अरु जो स्त्री गर्व करै ताहि आकर्षिवे कौं नेत्रनि हर्षदेन कौं महा साध्यो मंत्र है वहुरि कैसो है मुरली को शब्द गर्व

अंतर्मोहनमौलिघूर्णनचलन्मंदारविस्रंसन स्तब्धाकर्षणनेत्रहर्षणमहामंत्रः
कुरंगीदृशां। दृप्यद्दानवदूयमानदिविषद्दुर्वारदुःखापदां भ्रंशः कंसरिपोर्व्यपो
हतु वोऽश्रेयांसि वंशीरवः ।।२

अरु जे दैत्य तिन्ह तें डरपत जे देवता तिन्ह की जो अति वडी आपदा ताकौं दूरि कर्त्ता है कहा जा मुरली के सुनत दे
वतानि निर्भय होत है ।।

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथानंतरसंध्यासमैश्रीराधाजीकेनिकटपधारिकरिआनंदपूर्वकगद्गदवाक्यनिकरिश्रीराधाजीआगिली
अष्टपदीकरिकहतभए केसीहैराधाजी अतिकमेरजुकोधताकेबसहै वक्रारिकैसीहैराधाजीउसास

अत्रांतरेमसृणरोषवशामसीमनिश्वासनिःसहमखींसमुपेत्यराधां सव्रीडमीक्षितसखी
वदनंदिनांतेसानंदगद्गदपदंहरिरित्युवाच १ श्रीमद्राधागोविंददेवोजयती ॥ छ ॥

निनाहींसहिसकतमुखजिनकोसुकहा इतनेउसाससलेतिहैजितनेमुखमेनाहीसमात वक्रारिकैसीहैराधा
लाजपूर्वकसखीकोमुषदेषितिहै सोकाहेकोयहकहतिहैतूदेषिइनहकीबाततरातिवेकर्मकीनेअबुऐसे
कहतुहै १

गी०गो०
५४

श्रीकृष्णजी कहत है अहो प्रियाराधा मो विषैं अनादरकी जो मानता हि छोडि सो काहे कौ कामाग्नि करि मेरो हृदय दग्ध होत है तातै कामाग्नि कौं दूरि करि काहे तै कर्त्ताजो है तेरो अधरामृत ताको पान करवाइ अरु अरी प्रिया जो कछु मोसो बोलहि तो तेरे दंतनकी कांति करि मेरे हृदय विषैं जो तमरूप अंधकार भयो है सो

वदसि यदि किंचिदपि दंतरुचिकौमुदी हरति दरतिमिरमतिघोरं स्फुरदधरसीधवे तव वदनचंद्रमा रोचयति लोचनचकोरं प्रिये चारुशीले २ मुंच मयि मानमनिदानं सपदि मदनानलो दहति मम मानसं देहि मुखकमलमधुपानं

मति

दूरि होइ अरु अरी राधा तेरो जो मुखचंद्रमा सो मेरे लोचन ही जो चकोर तिन्ह हि तेरे अधरामृत के निमित्त रुचि हि उपजावत है वङुरि कैसी है तू प्यारी राधा चारु मनोहर है शील सुभाव है तेरो परंतु कृशोऽस्योऽहोऽ
२

कृष्ण
५४

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वकृरिश्री कृष्णजीकहतहै सुंदरहै दंतजाके ऐसी श्रीराधाजो तूसाचेहू थीठहै तोतेरेनखजोनए श्रतिती
खेवाएतिनकरिमोहिमारि सोकाहेतै जापरक्रोधहोइसोवाएनिमारिजे श्ररुजोहतनेहुंतैक्रोधहूरिन

सत्यमेवासियदिसुदतिमयिकोपिनी देहिखरनखरश्चारघातं घटयभुजवंधनंजन
यरदखंडनं येनवा नवतिसुखजातं २ श्रीराधागोविंददेवोजयती श्रीगोपालाय

होहितोश्रापनीभुजाकरिमोहिवांधिकरिश्रापनेदंतनसौंमेरे श्रधरनिकोखंडनकरि श्रोरहमारिवोपोरे मैं
हीमैहै तुनकमंदमुसकानिकरीरहममोहे श्रोरतोसौकहाकहें जातेतुमुषपावेसोईकरि २ श्रीकृष्ण

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गी०गो०
५५

श्रीकृष्णजी कहतहैं अरी राधा तूही मेरे आभूषण है अरु तूही मेरे संसारसमुद्र विषे निधि है ऐसो जो हौं ता
विषें तू अनुकूल होऊ या बात विषे मेरो हृदय बहुत जतन करत हैं ३ श्रीकृष्णजी कहत है अरी राधा

त्वमसि मम भूषणं त्वमसि मम जीवनं त्वमसि मम भवजलधिरत्नं भवतु भ
वती ह मयि सततमनुरोधिनी तत्र मम हृदयमतियत्नं ३ श्रीकृष्णायनमः

लकमलसमान जो हैं तेरे नेत्र ते अब हू कोकनद जु है लाल कमल तिनके रूपहि धरतहै मुख को धकरि ला
ल भए है यह जुक्त न होइ जो मोहि मिलि करि कुसम सर जो है कामता के जो बाण फूल तिनते हैं उतलतिजा को मेरे . कृष्ण
५५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोजोमधुताकोपानकरिकेनेत्रनिआरक्तकरिदिनोयहउक्तहै॥४॥ श्रीकृष्णजीवक्रोक्तिकहतहैं। अरीराधाम
णिकोजोहारसोतेरेकुचकलशनिपरविराजो अरुतेरेहृदयकोशोभाहिदेउअरुरसनाजोहैक्षुद्रघंटिका
सोतेरेजघनपदनिपरशब्दहिनांहीकरतिकामकीजोआज्ञाहृदयरंजनंजोताहिप्रगटकरतिहैमानक॥५॥

नीलनलिनाभमपितन्वितवलोचनंधारयतिकोकनदरूपं कुसुमशरबाणभावेनयदिरंजयसिकृ
ष्णमिदमेतदनुरूपं ध स्फुरतुकुचकुंभयोरुपरिमणिमंजरीरंजयतुतवहृदयदेशं रसतुरसनापि
तवघनजघनमंडलेघोषयतुमन्मथनिदेशं ५ स्थलकमलगंजनंममहृदयरंजनंजनितरतिरं

श्रीकृष्णजीकहतिहै अतिगंभीरअरुमधुरहैवचनजाकोऐसीराधातेरेचरणकमलतिन्हहिजोतुकहैतोमहा
वरउक्तकरोसोकैसेहैंचरणकमल जीतिहैस्थलकमलनिकीशोभाजिन वरु० मेरेहृदयकेविषेंअनु

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गी॰गो॰ ५६ रागरहित उपजावत हैं॥ वक्रारि॰ सुरतसमयविषैं उपजायो है आनंद जिन ६ श्रीकृष्णजी कहत है अरी राधा तेरे जो
अति मनोहर चरण मेरे मस्तक पर धरि सो काहे कौं मेरे अति दारुण जो है कामाग्नि सो ज्वलत है ताको जो संता

गपरं आगं ज्वलनमसृणवाणिकरवानि पदपंकजं सरसलसदलक्तकरागं ६ स्मरगरलखंडनं मम शिर
सिमंडनं धेहि पदपल्लवमुदारं ज्वलति मयि दारुणो मदनकदनानलो हरतु तदुपाहितविकारं॥ ७

पडुरि होय जैसें दूर होइ सो जतन करि कहा करो आपने जो चरणपल्लव तिन हि मेरे मस्तक पर अलंकार करि तो कृष्ण
मिटै कैसे है तेरे चरणकमल कामको जो विष ताको दूरि करण हार हैं ७ श्रीकृष्णश्रीकृष्णकृष्ण हरे हरे कृष्ण ५६

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इदिंमंतिराधिकादिमतिकहै ऐसेश्रीकृष्णदेवकेबचनतेअतिशोभितहैं कैसेहैश्रीकृष्णकेबचन चटुक
हैमनोहरहै अरुचाटुकहैं प्रीतिजुक्तहैं पटुकहैचतुराईसहितहै अरुचारुकहै अतिकोमलहै अरुजयदे

इति चटुलचाटुपटुचारुमधुवैरिणोराधिकामधि वचनजातं जयतिजयदेवकविभा
रतीभूषितंमानिनीजनजनितशातं

वकविकैसोहै परमकुंजिकीकेलिताकोंपरमरुचिसोवर्णनकरतहै कैसीहैकेलि नक्रजनन कोआनंदकीनी
धिहै वक्रकैसोहैकविजाकीजोभारतीबाणीताकरिशोभितहै अरुमानिनीजोस्त्रीतिनकौंसुषदायकहै ८ छ्म

FOLIO NO 57 MISSING

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गी०गो० ५७ श्रीकृष्णजी कहत हैं। अनादर करकीनो है कोप जिन ऐसी राधा तू और रमा इनके संग कोधोपो छोडो मुकाहै तें। जो मेरो
हृदय सदा रोकि राख्यो है तातें मेरे हीए में ये कवित न मनु नाही है तनु देह जाके ऐसे कामहिं बिना और को नपे

परिहरिकृतातंके शंकांत्वयास ततं घनस्तनजघनयाक्रांते स्वांते परानवकाशिनि। विशंति वि
तनोरन्यो धन्यो न कोपि ममांतरं प्रणयिनि परीरंभारंभे विधेहि विधेयतां १ श्रीकृष्णाय नमो नमः वि

विहीनाहीसकतु अर्थ यह जो तेरे हिए में रहत न कामशरीर रहित न है सो गें पावतु है और कों मेरे हृदय में अवकाश कृष्ण
कहां है तू कसी हैं अंतर रहित है अंग अरु जघन जाके तातें कहतु है अब मनकों संदेह छोरि करि मोकों आलिंग ५७
नदेहु ।१।

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीकृष्णजीकहतहैं।अहोपरमसुंदरीराधामैंतैंतुम्हनिर्दयहोइकरिदंतक्षतकरऊअरुभुजानिसौंमोहिबां
धिकरिगाढेकरिअंगनिसौंपीडाकरऊसोकाहेते जोअपराधीहोइताकोदंडदीजेतवहीसुषपाइजेसो

मुग्धे विधेहि मयि निर्दयदंतदंशं दोर्वल्लिबंधनिबिडस्तनपीडनानि।
चंडि त्वमेव मुदमंच न पंचबाणचांडालकांडदलनादसवः प्रयांति॥ २

होतोअपराधीनहीं परंतुतुम्हहूंकोअपराधलगायोहै तातैंभुजानिसौंबांधिस्तननिसौंगाढेपीडाकरऊ जोऐ
सैनकरिहोतोचांडालजोहैकामताकेवाणनिकेमारेप्राणजातहै तातैंकहतुहोजोकछुदंडदीजेहोइसुदेकरि
प्रसन्नहोऊ २

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गी०गो० श्रीकृष्णजी कहतहैं अहो चंद्रवदनी राधा तुम्हारी वक्र भौंह अतिशोभितिहै कैसी है जो है युवजन जो तरुण
५८ जन तिन्हकैं मोहिबेकों भयंकर स्याम सर्परूप है अरु ता भौंहरूप सर्पनैं उपज्यौ जो भय ताहि दूरि करिबे

शशिमुखि तव भाति भंगुरभ्रूर्युवजनमोहकरालकालसर्पी: तदुदि
तभयभंजनाय यूनां त्वदधरसीधुसुधैव सिद्धमंत्रः ॥ श्रीकृष्णायः

कों तुम्हारो जो अधरामृत सोई सिद्धमंत्र है मैं कैसो है तेरो जो मुखारविंद ताहि देखि देखि जीवतु हैं। तु कैसी कृष्ण
है नाहि कमोको दोषलगावति है वक्र रिकगेर खाक्य असे सुंदर मुखारविंद लायक है कहा ॥ श्रीकृष्णाय ५८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीकृष्णजी कहत हैं। अहो सुंदरी राधा तुम्हारो जो अपर्थ मौन करिवो सु मोहि दुःख देत है तातें अहो तरुणि कोमल
वचननि करि पंचम राग है आलाप जु अरु श्री तल दृष्टि करि चितै करि संताप हि दूरि करि अहो सुंदर सुखदा

मुंचन व्यथयति वृथा मौनं तन्वि प्रपंचय पंचमं तरुणि मधुरालापैस्तापं विनोदय दृष्टिभिः सुमुखि विमुखी
भावं तावद्विमुंच मां स्वयमतिशयस्निग्धो मुग्धे प्रियोहमुपस्थितः ॥ श्रीगोविंददेवो जयति

जा को ऐसी राधा पीठि दै बैठिवो सो ढिग अरु मुग्ध कहे ज्ञान रहित राधा हो बिनु ही जतन कीने आयो आपु ही तेतातें
मोहि मति छोडहि हो कैसी हों अतिशय करि स्निग्ध कहे अति अनुराग जुक्त हो प्रीत पूर्वक चितवत है ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गी० गो०
५९ मानिनी जो राधाजी तिन्हंको मान दूरि करिबे कों कहत हैं अहो परम क्रोधशील राधा तुम्हारो अधर दुपहरिया
कोफूल सो शोभत है अरु मऊवा को फूल समान पांडुर वर्न अति चीकने कपोल शोभत है अरु नील कम

वंधूकद्युतिबांधवोयमधरः स्निग्धो मधूकछवि र्गंडश्चंडि चकास्ति नीलनलिनश्रीमोचनं लोचनं
नासाभ्येति तिलप्रसूनपदवीं कुंदाभदंति प्रिये प्रायस्त्वन्मुखसेवया विजयते विश्वं स पुष्पायुधः ॥५॥

लनि की शोभा तुम्हारे नेत्र नि हरी है अरु नासिका तिलफूल की बराबरि करति है कुंदसम दंत जिन्हंके ऐसी
अहो प्रिया हों योजानत हो तुम्हारे मुखकी सेवा करि पुष्पायुध जो कामदेव सो सकल विश्व हि जीततु है ५ श्रीक्रम हम ५९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीकृष्णजी कहत हैं अहो सुंदरी राधा भूमि विषै स्थित होत थापि तुम्ह अपछरानि के मन हरि लीनो हो सो कोन
प्रकार करि सो कहत हैं तुम्हारी दृष्टि मंद करि आलस हैं अरु मंदालसा अपछरा नेत्र निमें हैं अरु मुख
देखत इंदु चंद्रमा की सुधि होति है अरु इंदुमती नाम अपछरा मुख करि जीती हैं तुम्हारी गति जन जो लोक

दृशोस्तव मदालसेव वदनमिंदुमत्यान्वितं गतिर्जनमनोरमा विजितरंभमूरुद्वयं रतिस्तव क
लावती रुचिरचित्रलेखे भ्रुवावहो विबुधयौवनं वहसि तन्वि पृथ्वीगता ६ श्रीकृष्ण।

तिन्हके मन हिं हरत हैं अर तुम्ह गति करि मनोरमा अपछरा जीती है तुम्हारी ऊरू करि रंभा कहे केलि की शोभा
हि दूरि करति हैं अरु तुम्हारी ऊरू करि रंभा नाम अपछरा जीती है तुम्हारी रति जो सुरत विलास सो काम कला वि
षै निपुन है अरु रति करि तुम्ह कलावती नाम अपछरा जीती हैं तुम्हारी भौंह चित्र लिखी सी सुंदर है अरु भौंहनि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गी०गो०टी
६०

करितुम्हचिं लेखानाम अपछराजी नी है। आछूलक हत हैं मदालसाई दुमती मनोरमा रंभाकला वती चित्रले
खादूतनी अपछरानिके गुण तुम्हही में है ६। कविकहतु हैं ऐसे जो श्री कृष्णजी नकनिकों प्रीतिकरङ्ग सोके मे

प्रीतिं वस्तनुतां हरिः कुवलयापीडेनसार्द्धं रणेराधापीनपयोधरस्मरण कृत्कुंभेनसंभेदवानू यत्रस्विद्य
तिमीलतिक्षणमथ क्षिप्रद्विपतत्क्षण कंसस्य लमभूज्जितंजित मितिव्यालोलकोलाहलः॥७॥ स्या

हल
६०

हे कुवलयापीड हाथीसोंलरतजो राधाजी के अंगनिको नयो स्मरण तातें कुवलयापीडके कुंभस्थलतें दसनए पी
छे प्रस्वेद चलो अरु नेत्रमूंदे तव साव धानह्वैके शिलव हाथी मारो तव कंसभयो कहत भए जो यहवालक कंसहि
जीतिहैं ऐसो कोलाहल होतभयो ७।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अब कोऊ एक सखी संध्या समै तैं राधासों आ मिली अष्टपदी करि कहति
है सो कहा भयो पीछे प्रीतिजुक्त वचननि करि बहुत बार लों श्रीराधाजी कौ मंतु एक करि श्रीराधा को वेषु आधरि श्र
रु श्रीकृष्ण कौं कुंजभवन कौं पधारे पीछे राधाजी कैसी है पहिरे है अतिमनोहर श्रीकृष्णजी के भूषण जिन अर्थ करो

रुचिरमनुनयेन
प्रीणयित्वा मृगाक्षीं गतवति कृतवेषे केशवे कुंजशय्यां रचितरुचिरभूषां दृष्टि
मोषे प्रदोषे स्फुरति निरवसादां कापि राधां जगाद ८ श्रीकृष्णाय नमो नमः

जो यह जो श्रीकृष्ण राधारूप धस्यो है और श्रीराधाजी श्रीवृषभानुनंदनी जी श्रीकृष्णरूप धस्यो है बहुरि कैसी है श्रीराधा
जी दूरि भयो है मानभंग को संताप जिन्ह को बहुरि संध्या समय कैसो है दृष्टि को चोरत है ८ श्रीराधागोविंदाय नमः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गी०गो० ६८ सषी कहति है श्रीराधा मधुदैत्य के मारिन हारे जो श्रीकृष्णजी तें तोसों अनुकूल भए हैं तिन्हें हित प्रापम होउ कैसे हैं मधुमथन कहे हैं अति प्रियवचननि मैं करि वकरि तेरे चरननि विषै कीनी है नमस्कार जिन वकरि कैसे है

विरचितचाटुवचनरचनं चरणे रचितप्रणिपातं संप्रति मंजुलवंजुलसीमनि केलिशयनमनुजातं मुग्धे मधुमथनमनुगतमनुसर राधिके

मधुमथन श्रीकृष्ण अब हि कहिये अबार ही अति मनोहर जो है वेतकोकुंज ताके निकट जो सुरतनिमित्त सची है सेज ता विषै प्राप्त भए है ताते श्रीप्यारी राधा अब तू ढील करै मति मेला दा वद न्यारे है वेगि चलि १ श्रीकृष्ण कृष्ण ६९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सषीकहतिहैस्थूलजोहैजघन अरुस्थूलजोहैस्तनतिनकोहैभारजाकेऐसी श्रीराधाशब्दकरतहैमणिजटि
तनूपुरआविषे ऐसीजोगतिकरिश्रीकृष्णकेनिकटचलि अरुमरालजोहैहंसताकीनाईविलासहिकरि
कैसीहैगति कछूएकमंदहैचरणनिकोधरिबोताविषे २ सषीकहतिहै श्रीराधाअतिमनोहरअरु

घनजघनस्तनभारभरेण दरमंथरचरणविहारं मुखरितमणिमंजीरमुपैहिविधेहिमरालविकारं २
श्रणुरमणीयतरंतरुणीजनमोहनमधुरिपुरावं कुसुमशरासनशासनवंदिनिपिकनिकरेभजभावं
२

तरुणीजनजोहैतरुणीस्त्रीतिनकोमोहकोउपजावनहारो ऐसोजोमधुरिपुश्रीकृष्णतिनकोजोशब्दताहिसुनि
कामकीजोआज्ञाहिकरतहैं ऐसेजोकोकिलतिनकोशब्दसोकरिश्रीकृष्णजीविषेअनुरागजुक्तहोऊ २

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गी॰गो॰
६२ सषीकहतिहैकरनजोहैहाथीकोसूंडितैसीहैऊरुजाकीऐसीश्रीराधाचलिवेविषैंविलंबकरतिहैता-
हिछोडिवेगिचलि।आतैंहस्तनकीजोहैडारतिनकेजोनएपल्लवतेजोहैंकरहस्ततिनकरिलताजोहैडारते
कंश्रीकृष्णपैपठवतिहैसोकहा वायुकरिहलनिकीडारहालतिहैतिनहिंदेषिकहतिहै श्रीराधाए

अनिलतरलकिशलयनिकरेणकरेणलतानिकुरंबं प्रेरणमिवकरभोरुकरोतिगतिप्रतिमुंचविलं
वंध स्फुरतिमनंगतरंगवसादिवसूचितहरिपरिरंभं एछमनोहरहारविमलजलधाममुंकुचकुंभं ५

हेश्रोरनायकामधुरीपश्रीकृष्णपैचलनकहतहैताते तूवेगिचलि ४ सषीकहतिहै श्रीराधातूआपनेकुचकुं
भनिसौंपूछिदेषिहोतासौंमलीकहतिहोकिधौंअनमली कैसेहैतेरेकुच कामकेजोतरंगतिनकेवसतेहै। कृष्ण
तजोहैकंपताकरिजनायोहैश्रीकृष्णकोआलिंगजिन वकुरि॰ अतिनिर्मलजोहैमुक्तानिकोहारसोदूहैं ६२
न
जलजिनविषे ५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सषी कहति है अरी चंडी कोप जुक्त राधिका सकल सषी निपट नीकै जानी जो तेरो आरी श्का मसंग्राम कौं सावधान न
यो ॥ अर्थ कहा जो तेरो मान छूटो तातें लाज छोडि करि कटि विषें बाजति जो रे छुद्रघंटिका सोई जुन यो डिंडिम ढोल
ताहि बजाइ करि निःसंक श्रीकृष्ण पै चलि ६ सखी कहति है अरी राधा तू हाथ करि सषी हि अवलंब करि विला

॥ अधिगतमखिलसखीभिरिदं तव वपुरपि रतिरणसज्जं चंडि रणितरसनारवडिंडिममभिसर सरसमलज्जं ६ स्मरशरसुभगनखेन सखीमवलंब्य करेण सलीलं चलवलयक्वणितैरवबोधय हरिमपि निजगतिशीलं ७ श्रीजयदेवभणितमधरीकृतहारमुदासितवामं हरिविनिहितमनसामधितिष्ठतु कंठतटी

सपूर्वक चलि कैसो है तेरो कर काम के बाण निसमान सुंदर है नखजा विषें अरु श्रीकृष्ण काम के वस कै करि एकाग्रचित्त कै रहे हैं तिन्हें हि आपने कंकणनि के शब्द करि जगाइ ७ श्रीजयदेव करि कह्यो जो यह गीत सो भक्तनि
कै हृदय विषें सर्वदा विराजो कैसो है गीत आपने गुननि करि जीत्यो है हार जिन वक्रीरि० श्रीकृष्ण के निकट कौं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गी० गो० पेरी है राधिका ज्ञा विषे अरु परम मनोहर जो है कैसे है अरु श्रीकृष्ण विषे राख्यो है चित्त जिन ८ अब दूती राधा जी सों
६५ श्रीकृष्णजी के प्रेम हि वर्णति है श्रीराधा वे कृष्णजी कुंज मे तो हि देषत है अरु ध्यान करि तो हि देषि अरु कापत है सो
कांहे तें मो सों बोलि है राधा कि धौ मा ही या भय तें वक्र रिध्या न ही मैं तुम्हारे अंग संग हि पाइ करि रोमांच युक्त होत है

अभिरामं ८ सा मां द्रक्ष्यति वक्ष्यति स्मरकथां प्रत्यंगमालिंगनैः प्रीतिं यास्यति रंस्यते सखि समागत्येति चिंताकु
लः स त्वां पश्यति वेपते पुलकयत्यानंदति स्विद्यति प्रत्युद्गच्छति मूर्छति स्थिरतमः पुंजे निकुंजप्रियः ॥ १ ॥

वक्र रिध्यान ही मैं तुम्ह सों रति पाइ करि आनंद हि अरु प्रस्वेद हि पावत है वक्र रि क्रीडा करि कै उठि चली मा मक्रं ऐसे
है श्रीकृष्ण ध्यान के विषै तौं ख्यात होति है अरु जब ध्यान मिटत है तब कहत है राधा आइ करि मो तन न चितवेंगी
अरु चि तै करि काम कथा नि कहेंगी अरु काम कथानि कहि करि कै अंगनि अंगनि सो मिलि संतोष हि पावेंगी
अरु संतोष हि पाइ करि क्रीडा हि करि है मो सो कि धौ नां ही ऐसी चिंता करि के अति अकुलात है १ श्रीराधाकृष्ण कृष्ण ६५

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अवसषीचलिवेजोग्य अंधकार वर्णतहै सोईकहतिहैं श्रीराधायहदेषि अंधकारनाइकानिके अंगनिअंग
निलयुतहै सोकैसोहै अंधकार नेत्रनिमें अंजनकज्जलदेतुहै कहाजोनेत्रनिलग्योसोकज्जलकीशोभाहीपाव

अक्ष्णोर्निक्षिप्तदंजनं श्रवणयोस्तापिञ्छगुच्छावली मूर्द्ध्निश्याममसरोजदामकुचयोः कस्तूरिकापत्रकं
धूर्त्तानामभिसारसाहसहृदां विष्वक्निकुंजेसखिध्वांतंनीलनिचोलचारुसुदृशांप्रत्यंगमालिंगति:
२५

तहै अंधकारकरिनिलग्योसोतमालवृक्षकेफूलनिकेकर्णाभरणकीशोभाहिपावतुहै अरुजो अंधकारकुच
निलग्योसोकस्तूरीकीशोभाहिपावतुहै कैसीहैनाइका परपुरुषहिडहकतिहैं वक्र० नीलवस्त्रसदृशजोहैअं
धकार २

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गी०गो० वढ़रि अंधकार वर्नत है सखी कहति है श्रीराधाय हु जो अंधकार सो अभिसारिका नाइकानु को प्रेमरूप जो सु
६४ वर्नता को कसोटी होतु है अर्थ कहा जो अभिसारिकानु को प्रेम अंधकार ही सों कहिजतु है और कसोटी में रे

काश्मीरगौरवपुषामभिसारिकाणामाबद्धरेखमभितो मणिमंजरीभिः एतत्तमालदलनीलतमं तमिस्रं तत्प्रेमहेमनिकषोपलतां तनोति ॥ श्रीकृष्णाय नमो नमः श्रीराधावल्लभाय नमः ॥

खा होति है याकसोटी में जो अभिसारिका नाइकानि के आभूषणनि के मणिनि की कांति सोई रेखा है अभिसारिका कृष्ण
केसी है केशरि समान गौर है बपु जिनको अंधकार कैसो है तमाल वृक्ष के दल समान नील है असो है सरूप ॥ ६४

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अबसषीराधाजीसो आगिली अष्टपदी करि कहतिहै। कैसीहैराधाजी। कुंजगृहके द्वारलालजी कों देषिलज्जि तभईहै। सोकाहेते इन्हसोमैकितनेनिठुरवचनबोलेहै। अबसामोहैकैसेंजाउंयाकारणतेंसलज्जहै। कै

हारावली तरलकांचिन कांचिदाममंजीरकंकणमणिद्युतिदीपितस्य द्वारेनि
कुंजनिलयस्य हरिंविलोक्य व्रीडावती मथसखीनिजगादराधां ४ श्रीकृष्णायनमः

कैसोहैकुंजगृह। हारकेजोमणितिनकीकांतिकरि अरुसोनाकीकटिमेखलाताकीकांति अरुनूपुरकेमणि कीकांतिकरि अरुकंकणकीमणिकीकांतिकरिकीन्हो हैप्रकाशजामैं इतनीकांतिन्हकरिअंधकारमैंउजि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गी०गो० ६५ पारीजयोतव दर्शनपाइलज्जित भई ।। सषी कहति है श्रीराधामाधवजो हैं श्रीकृष्ण तिन्ह के निकट चलि
अरु अतिमनोहर जो कुंजतें ईजो भए क्रीडागृह तिन विषें श्रीकृष्ण सो क्रीडा करि केसी है तू रतिजो है सुर
तता विषे जो रभस उत्साह ता करि हास्य जुक्त है मुख जाको १ सषी कहति है श्रीराधा नूतन जो है अशोक

।। [illegible] मंजुतरकुंजतलकेलिसदने प्रविशराधेमाधवसमीप
मिहविलसरतिरभसहसितवदने नवभवदशोकदलशय
नसारे प्रविशराधेमाधवसमीपमिहविलसकुचकलशतरलहारे २

वृक्ष निके दल तिन करि रची है शय्या जा विषें ऐसो जो कुंजगृह ता विषें श्रीमाधवजी के निकट चलि अरु क्री कृष्ण
डा करि अरु प्यारी अउ छो डिदे केसी है तू कुचकलशनि पर चंचल होत है मुक्ताहार जिन उपरि २ ६५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सषी कहति है । कुसुमसमान कोमल है शरीर जाको ऐसी श्रीराधा कुसुम जो है फूल तिनकरि रच्यो ऐसो अतिपवित्र जो संकेतस्थल ता विषें श्रीमाधवजी के निकट चलि अरु विलास करि अरु अति आनंद को भोग करि ॥ १ ॥

कुसुमचयरचितशुचिवासगेहे प्रविश राधे माधवसमीपमिह । विलस कुसुमसुकुमारदेहे ॥ध्रु०॥ चलमलयवनपवनसुरभिशीते प्रविश राधे माधवसमीपमिह । विलसरसवलितललितगीते ॥ध्रु०॥

सषी कहति है रससहित मनोहर है गान है जा विषे ऐसी श्रीराधा वकुल जो है मलयपर्वत को पवन ताकरि सुगंध है अरु शीतल है ऐसो जो संकेतस्थल ता विषें श्रीमाधवजी के निकट चलि अरु विलास क्रीडा करि ॥ २ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गी०गो० सषीकहतिहै।आलीजुकहैंअतिस्थूलजाघजाकीऐसीश्रीराधाकेलिअतिविस्तीर्णभईतुलतातिनके
६६ जोनूतनपत्रतिनकरिसघनऐसोजोहैसंकेतस्थलताविषैश्रीमाधवजीकेनिकटवेगिचलिअरुविलास

विततवकुलवल्लिनवपल्लवघने। प्रविशराधामाधवसमीपमिहविलसचिरमलसपीनजघने।प
मधुमुदितमधुपकुलकलितरावे। प्रविशराधेमाधवसमीपमिहविलसमदनरससरसभावे। ६

करि।पसषीकहतिहैमदनमरजोहैकामरसताकोहैअधिकाजाविषै ऐसीश्रीराधामधुजोहैफूलनिको हम्म
रसताकरिमत्तजएजोहैभ्रमरतिनकरिकीनोहैगुंजारवजाविषै ऐसोजोसंकेतस्थलताविषैश्रीमाधवजीकेनि ६६
कटचलिअरुक्रीडाकरि ६

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सषीकहतिहैं अतिनिर्मलजोहै माणिकतिनसमानसुंदरहैं दंतजाके ऐसी अरीराधा अतिमधुरजोहै कोकिल १
नकैशब्द तिनकरिमनोहरहै ऐसोजोसंकेतस्थलताविषैं श्रीमाधवजीकेनिकटचलिअरुविलोकरि ७ तुम्ह म

मधुरतरपिकनिकरनिनदमुखरे प्रविशराधामाधवसमीपमिह विलसप्रचुचिरुचिरदशनशिखरे ७ विहितपद्मावतीसुखसमाजे कुरुमुरारेमंगलशतानि भणतिजयदेवकविराजराजे ८ श्रीकृष्णायनमः

८

रेगुणनिकहतजोकविनकेराजाजयदेवकविताकोंअहोमुरारितुम्हवक्रूतकल्याणकरऊ केसेहैंजयदेवकवि जितनेपृथ्वीउपरकविहैंतिनसवकेमुकटमणिहै वऊ॰ पद्मावतीनामजोआपनीस्त्रीताकोंसुषकेदायकहैं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गी०गो० सखीकहतिहै।श्रीराधा।एकृष्णअमृतकरिपूर्णजोतेरेअधरतिन्हकोपानकीयोचाहतहै। कैसेहैश्रीकृष्णजीचि
६७ त्तकरितुम्हहिलीनेअतिश्रमितहै।जैसेंकोऊभारलीनेहोइसुश्रमितहोइअरुजलपानकीयोचाहै तातेकह
तिहौं।इन्हकैगोदहिघरीयेकशोभाहिदेहि। कहाचिंतहैसखीहौइन्हकेनिकटजातडरपतिहैं। तातेकहतिहौ

त्वांचित्तेनचिरंवहन्नयमतिश्रांतोभृशंतापित कंदर्पेणचपातुमिछ
तिसुधासंबाधविंबाधरं अस्यांकंतदलंकुरुक्षणमिहभ्रूक्षेपलक्ष्मी
लवक्रीतेदासइवोपसेवितपदांभोजेकुतःसंभ्रमः ॥ १ श्रीकृष्णायनमः

श्रीराधाइन्हकोकहाभयकरतिहै एतौमोललीन्हेदासहै सोकाहेकरिमोललीन्हेहै कटाक्षनकरितवनूत-
नलीन्हेहै। अरुदासलोतेरेचरणसेवतहैंतिनकोकोनभयहै अरुयाउपरंतुप्यारीराधिकेतुमाननहीतजैतो कृष
तुहठतघनीहै काहेतै प्यारेकोंकैसेकैसेकगोरवचनकहेहै परंतुवेयेकऊमननहीधरतहैआसुतुवेगिचलि ६७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोजाराधाजीसषीवचननतैंकुंजगृहमैंप्रवेशकरतिभई। कैसीहैराधाजी गोविंदजीननलाजनतैंचंचलहैलोचन
जिन्हके वकुरिकैसीहैराधा मनोहरशब्दकरिजुक्तजोमंजीरनूपुरतिन्हहि गमनतेवजावतिहै गोविंदजी

॥सासमाध्वससानंदंगोविंदेलोललोचनं सिंजानामंजुमंजीरंप्रविवेशानिवेशनं॥२॥

कैसेहै। तोमजोअनुरागतासोअतिसैकरिध्यानसोकरतहै वकुरिकैसेहैगोविंददेव पहिलेअपराधतेंसभ
यहै अरुराधाजीकोदेषिसानंदभएहै कैसै जैसैसूर्यकोंदेखिकंजकहियकमलसोप्रफूलितहोतुहैसेप्रसनभए २

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अवकविकहतहैसो जोहै राधिकासो श्रीकृष्णहि देषतिभई। कैसेहैं हरि राधाके वदनको जु विलोकन देषिवो ताकरि उपज्योहै भांतिभांतिके विकारजिनविषें। कैसे देषियतहैं विधुमंडलजो है चंद्रमंडल ताके दर्शनतै अतिचंचलभएहैं वडे तरंगजाके। ऐसो समुद्र जैसो देषियेसु कहा जैसो चंद्रमाकै देषे समुद्रके तरंगउ

मेघेरा

राधावदनविलोकनविकशितविविधविकारविभंगं जलनिधिमिव विधुमंडलदर्शनतरलिततुंगतरंगं हरिमेकरसं चिरमभिलषितविलासं सा ददर्श गुरुहर्षवशंवदवदनमनंगविकाशं

ठैतेसैं राधाजीके मुख देषें श्रीकृष्णजीके कामके तरंगउठे है वकुरि कैसेहै हरि एकराधिकाही विषेहै रसप्रीति जिनके वकुरि कैसेहै हरि वहोतकालते करी है विलासकी अभिलाषा जिन वकुरि कैसेहै हरि अतिसयपर्यो जो हर्ष ताके वस होयकरि अनंगजो काम ताकरि प्रफुल्लित है मुषजिनको १ श्रीमद्राधागोविंदायनमः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वक्रिके सेहें श्रीकृष्णजी अमलकहियेनिर्मलतरतारजो मुक्तातिनकोबरणारविंदपर्यंतहारधारेहें सोउर विषेंकैसेंभितहे स्फुटतरकहियेअतिप्रकासितजोफेणसमूहताकरिजुक्तजमुनाजूकोप्रवाहहेंमानो २॥

हारममलतरतारमुरसिदधतंपरिलंबिविदूरं स्फुटतरफे
नकदंबकरंबितमिवयमुनाजलपूरं २ श्यामलमृदुलकले
वरमंडलमधिगतगौरदुकूलं नीलनलिनमिवपीतपरागपट
लभरवलयितमूलं ३

वक्रिश्रीकृष्णजीकैसेहैं श्यामसुंदरकोमलजोकलेवरकहियेसरीरमंडलतहांगोरदुकूलपीतांवरधारेहे ताकी सोभाकैसीहे नीलजोनलिनकहियेकमलमूलसोपीतजोपरागकोसमूहताकरिमांनोवेष्टितकियोहे ऐसेविराजेहे ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गी०गो० वक्रिकैसेहैंश्रीहरि तरलकहियेचंचलदृगंचलकहियेनयमकोरतिनकौजोचलाइवौताकरिमनोहरहैमु
६९ षारविंदसोमुरतअनुरागकौंउपजावैहै जिनकौ सोकैसीछविकौंधारैहै सरदकालकौजोवेडोतडागकहिये
सरोवरताविषैंस्फुटप्रफुल्लितकमलतामैंषंजनजुगलषेलतहैमानौं ४ वक्रिकहतहैं मुषकमलकीसेवा

तरलदृगंचलचलनमनोहरवदनजनितरतिरागं स्फुटकमलोदरखेलितखंजनयुगमिवशरदितडागं ४ वदनकमलपरिशीलनमिलितमिहिरसमकुंडलशोभं स्मितरुचिरुचिरसमुल्लसिताधरपल्लवकृतरतिलोभं ५

हेतष्रासनएहैंमिहरकहियेसूर्यवराबरकुंडलनिकीसोभासोजहां वक्रिमंदहास्यकीजोकांतिकमनीयताकरि ह०स
उल्लसितकहियेप्रकासितजोअधरपल्लवसोरतिकेलोभकौंकरैहै ५ श्रीराधागोपीनाथजी श्रीकृष्णायनमोनमः ६९

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

औरहू सोभाकों वर्णनकरतहैं सुंदरजोरैंके सतिन विषैं सुंदरहीं कुसुम विराजैहैं सोकैसी छबि धारैं हैं सो ईकहत हैं
मानों मेघपैं आये चंद्रमाकी किरणआय प्रगट भई हैं ऐसीसोभा भई हैं औरश्रीकृष्णजी मलयागिरि चंदनकौ तिलक दी
नों है सो ताकी सोभा कहै हैं अधिक तिमिर जो अंधकार ता विषै अंधकार ता विषै उदै भयो है चंद्रमाको निर्मलमंडल

विपुलपुलकभरदंतुरितं रतिकेलिकलाभिरधीरं मणिगणकिरणसमूहसमुज्वलभूषणसुभगशरीरं ७ २
शशिकिरणछुरितोदरजलधरसुंदरकुसुमसुकेशं तिमिरोदितविधुमंडलनिर्मलमलयजतिलकनिवेशं ।६

ऐसी सोभा धारण करैहैं ६ वक्रश्रीकृष्णचंद्र कैसे हैं अतिसय रोमांचकों भरता करि व्याप्त हैं वक्रश्रिकै सेहै रति
कीजे केलि कला तिन करि अधीर हैं वक्रश्रिकै सेहै मणिनके समूह धारैं हैं तिनकी किरण समूह तिनि करि उज्वल
हैं। वक्रश्रिकै सेहै॥ और जो भूषण धारैं हैं तिन करि सुंदर समरीर सोभायमान हैं ७ श्रीमद्राधागोविंददेवोजयती

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

अवजयदेवजी कहत है। इहजो हरिकौ वैभववर्णन कयौ सो द्विगुणी उपमादिकनिसों भूषणनिभारकौं कह्यौ। ता
श्रीकृष्णहृदैमध्यधारणकरो। बहुतकालपर्यंत अरुनमस्कारकरो। कैसोहै कृष्णकोगीत। सुकृतकौ उदयजो है ताकौसा
रहू ही है॥ ८॥ अव श्रीराधाजी अपने अतिप्यारेजो श्रीकृष्णचंद्र तिनकौ देषतभई सो कहत हैं॥ श्रीराधाजी कैसी

श्रीजयदेवभणितविभवद्विगुणीकृतभूषणभारं प्रणमत हृदि विनिधाय हरिं सुचिरं सुकृतोदयसारं ॥ ८ ॥ अ
तिक्रम्यापांगं श्रवणपथपर्यंतगमनप्रयासेनेवाक्ष्णोस्तरलतरतारपतितयोः तदा मे राधायाः प्रियतमसमा

हे इनके अपांगजो नयन तासो उलंघिकैं श्रवणमार्गपर्यंत कियो है गमन ताही सों भयो जो षेद ता तै चंचल अति
तारक हियेने त्रपूतली सो परत भई ताही सों मानो पैंडे ल्यो है स्वेदांबु कहियेपसीना हे तक हाराधिकाजीकै आनं
द अस्रुनकोसमूह गिरतभयोसो ताकी सोभायामांति वर्णन करी १ श्री गोपीजनवल्लभायनमोनमः हरयेनम

अबराधाजीसष्याकेअंतविषैंप्राप्तभईहैसोकहतहैं।कैसीहैंराधिकाजीमृगदृशः।कहियेहरिणसमानहैंदृष्टिजिन
की।तिनकोंअवहितालीकहियेसावधानसषीजेसैंदकतेजांनिकैंगेहवाहिरजातभई।कैसेंजातभई।कियोहैक
पटसोंहवधारणजिन।वक्रिकैसीहै।पिहितस्मितकहियेढक्योहैमंदहास्यजिनके।वक्रिराधिकाजीकैसीहै।द्व

अजंत्यास्तल्पांतंकृतकपटकंडूतिपिहितस्मितंयातेगेहाद्वहिरवहितालीपरजने।प्रियास्यंपश्यंत्याः
स्मरसरसमाकूतसुभगंसलज्जालज्जापिव्यगमदतिदूरंमृगदृशः॥२॥ श्रीमद्राधागोविंददेवोविजयति।

नकीछूलज्जालज्जितहोइकेमहींसषीनसंगअतिदूरजातभईहै।वक्रिराधाजीकैसीहैं।कंदर्पबाणजेकटाक्षआदिय
हजोताकरिमनोहरप्रियमुखदेषतिहैं।जासोंलज्जितभईसोंकहांऊपीछेजेजेवाक्यकगेरकहैसोंसोअवसमरण
करिकैकहैहैं।हाअैसेंमनोहरप्यारेताकोंअैसेंमैंकगेरवाक्यकहेसोपछतावोसोकरिलज्जासीकरतभईयाहेतसों॥

२

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कविकहतु हैं। मुरदैत्यु के जीतनहारे जो श्रीकृष्णतिन्हं को बाहू अधिकशोभत है केसे है बाहू। कीन्हो जो कुवलयापीड हस्ती कौं जुद्ध ता तें लगे हैं रुधिर के बिंदु जा विषें सो रुधिर न होइ हाथी के मस्तक सिंदूर देषि करि चिन्हतकी

जयश्रीविन्यस्तैर्महित इव मंदारकुसुमैः स्वयं सिंदूरेण द्विपरणमुदा मुद्रित इव भुजापीडक्रीडाहतकुवलयापीडकरिणः प्रकीर्णासृग्बिंदुर्जयति भुजदंडो मुरजितः २

नो है मानहुं॥ बहुरि कैसो है बाहू जयलक्ष्मी करि डारे जो मंदार पुष्पतिन्हं करि पूज्यो है मानहुं। केसे हे श्रीकृष्णजी॥ भुजानि की क्रीडा करि मार्‍यो हैं कुवलयापीड हस्ती हि जिन्ह २

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

अवराधाजीसख्याकेअंतविषैंप्राप्तभई है सोकहत हैं केसीहैं राधिकाजी मृगदृशः कहियेहरिणसमानहैंदृष्टिजिन
की तिनकौंअवहितालीकहियेसावधानसषीजेसैवकतेजांनिकैंगेहवाहिरजातभई कैसैजातभई कियोहैक
पटसोंहवधारणजिन वक्रुरिकैसीहै पिहितस्मितकहियेढक्यौहैमंदहास्यजिनकें वक्रुरिराधिकाजीकैसीहै इ

गअंत्यास्तल्पांतंकृतकपटकंडूतिपिहितस्मितंयातेगेहाद्बहिरवहितालीपरजने प्रियास्यंपश्यंत्याः
स्मरसरसमाकूतसुतरंगमलज्ञालज्ञापिव्यगमदतिदूरंमृगदृशः॥२॥ श्रीमद्राधागोविंददेवोविजयति॥

नकीकूलज्जालज्जितहोइउनहींसषीनसंगअतिदूरजातभई है वक्रुरिराधाजीकैसीहैं कंदर्पबाणजेकटाक्षआदिय
ह्नोताकरिमनोहरप्रियमुखदेषतिहैं जासोंलज्जितभईसोंकुकहोंकु पीछेजेजेवाक्यकठोरकहेसोंसोअवस्मरण
करिकैकहैहैं हा ऐसेमनोहरप्यारेताकों ऐसेमैंकठोरवाक्यकहेसोपछतावोसोकरिलज्जासीकरतभईयाहेतसो

२

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गी०गो० ७१ कवि कहतु हैं। मुरदैत्य के जीतन हारे जो श्रीकृष्ण तिन्हं को बाहु अधिक शोभत है कैसे है बाहु कीन्हो जो कुवलया
पीड हस्ती कौं जुद्ध तातें लगे हैं रुधिर के बिंदु जा विषें सो रुधिर न होइ हाथी के मस्तक सिंदूर देखि करि चिन्ह तकी

जयश्रीविन्यस्तैर्महितइव मंदारकुसुमैः स्वयंसिंदूरेण द्विपरणमुदामुद्रितइव भुजा
पीडक्रीडाहतकुवलयापीडकरिणः प्रकीर्णासृग्बिंदुर्जयति भुजदंडो मुरजितः २

सो है मानहुं। बहुरि कैसो है बाहु जयलक्ष्मी करि डारे जो मंदार पुष्प तिन्हं करि पूज्यो है मानहुं कैसे है श्रीकृष्णजी॥
भुजानि की क्रीडा करि मार्यो है कुवलयापीड हस्ती हि जिन्ह २

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

अबहरिश्रीकृष्णजीअनुरागसहितराधाजीकौंदेषिकेंआगिलीअष्टपदीकरिकहतहैं कैश्रीहैराधाजीसषी
नुकेगएपीछें अल्पजोलाजतातेंउपज्योजोकामतातेंजथाजोमंदहास्यताकरिष्याप्तहैंअधरजिनकेंवक्रुरिकै
श्रीहैराधाजी नूतनपत्रअरुनूतनफूलनिकीजोसेजताविषैराषेहैंनेत्रजिन्है ध श्रीकृष्णजीकहतहैं अरीराधा

गतवतिसखीवृंदेमंदत्रपाभरनिर्भरस्मरपरवशाकूतस्फीतस्मितस्न
पिताधरंसरसमनसंदृष्ट्वामुकुर्न्नवपल्लवप्रसवशायनेविद्विप्तांनीमुवाचहरिःप्रियां ध
किशलयशयनतलेकुरुकामिनिचरणनलिनविनिवेशं तवपदपल्लववैरिपराभवमिदमनुभवतु

अबहरिलक्षणआगेगावेजोहोनारायणताहिअनुसरप्राप्तहोहिअरुअहोकामिनीकहैंकामसंजोगविषैइच्छाजा
कीऐसीअरीराधायहनूतनपल्लवनकीसेज्यातापरआपनेचरणनिधरिअरुतेरेचरणकमलनिकीसेज्यता
हिजीतीहै वक्रुरितेरेचरणकैसेहैं आरक्तजोकमलताकीसोभाकौंजीतीहै ऐसेहैंतेरेचरणकमल १ ह

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गी०गो० श्रीकृष्णजी कहत हैं अरी राधा तू बहुत दूरि आई है तातें कहहि तो आपने हस्तकरि तेरे चरण पलोटौं अरु चर
७२ णनिकनूपुरनसेजपरउतारिधरि कैसे हैं नूपुर चलिवे विषै शब्द करि शोभा हि करत हैं अरु संकेतनस्थलके
सुरत विषै इनको शब्द न बूझिजे तातें उतारिधरि २ श्रीकृष्ण कहत है अरी राधा तू मोको अनुकूल कहैरु

सुवेशं चरणमधुना नारायणमनुगतमनुसर राधिके करकमलेन करोमि चरणमहमा-
गमितासि विदूरं क्षणमुपकुरु शयनोपरि मामिव नूपुरमनुगतशूरं २ वदनसुधानिधिगलितम-
मृतमिव रचय वचनमनुकूलं विरहमिवापनयामि पयोधररोधकमुरसि दुकूलं ३ श्रीगोविंद

चि है ऐसो जो वचन अमृत समान ताहि कहु सो कैसो है वचन तेरो वदन जो है मुख सोई जो भयो सुधानिधि चं कृस्न
द्रमा तातें प्रगट भयो है अरु तेरे पयोधरनि को ओट है दूर रह्यो ऐसो जो वक्षस्थल पर दुकूल कहिजे अंचल ७२
ताहि हौं दूरि करत हौं सोय हम अंचल हि वाही दूरि करत मानहुं तेरे विरहहि दूरि करत हौं ३ श्रीकृष्ण

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीकृष्णकहतहै। श्रीराधा तू मेरे वक्षस्थल विषे आपने कुचकलशनि राषि अरु मेरे उपज्यो जो कामजनित संतापहि
दूरि करि सु जहां संताप है। इहां कलशनि धरबीतलता है इयह जु है केसे है तेरे कुचकलश परिरंभण जो है आ
लिंगन ताके निमित्त जो उत्साह ताकरि सन्मुख कैरहे हैं अरु भयो है रोमांच चिन्ह कै विषे अरु वक्र तदुःख करि या

व प्रियपरिरंभणरभसवलितमिव पुलकितमतिदुरापं मदुरसि कुचकलशं विनिवेशय शोषय मनसि
जतापं ॥४ अधरसुधारसमुपनय भामिनि जीवय मृतमिव दासं त्वयि विनिहितमनसं विरहानलदग्धं वपुषमवि
लासं ॥५॥

दृषत है॥४॥ अब श्रीकृष्ण कहत हैं भामिनि कहै कामकला विषे चतुर ऐसी राधा तू आपनो अधरामृत मोहि देक
रि जिवाइ हो कैसो हौं तेरो दास हौं अरु तेरे वियोग तैं मृतक सो ह्वै रह्यो हौं वकुरि कैसो हौं हौं तो विषे राख्यो है म
न जिन अरु विरहाग्नि करि दग्ध भयो है वपु जाको ताही तैं निश्चल ह्वै रह्यो हैं ५ श्रीराधागोपीनाथजी सहाय

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गी०गो० वऊ श्रीकृष्ण कहत है शशि चंद्रमा समान है मुष जाको ऐसी श्री राधा मणि जटित जो है रसना गुण क्षुद्र घंटिका के समा
७२ न कंगनि पाद जो रति समय के शब्द तिन्है हिं करि अरु मेरे जो दोऊ कर्ण तेरे विरह तैं अति दुःखित होर है हैं तिनहि र
ति समय को शब्द सुनाइ करि सुष देहि कैसे हैं मेरे दोऊ कर्ण पिक जो है कोकिला तिनको जो रुतशब्द ताहि सुनि करि अ

शशिमुखि मुखरय मणि रसना गुण मनुगुण कंठ निनादं श्रुतियुगले पिकरुत विकले मम शमय चिराद व पुर
साद ॥ मामति विफल रुषा विफलीकृत मवलोकित मधुनेदं मीलित लज्जित मिव नयनं तव विरम विसृज र
तिखेदं ७

तिहि के लक्षण हैं ह श्रीकृष्ण कहत हैं श्री राधा ए जो तेरे नेत्र ते अब हि देषत लाज करत हैं हो कैसो हौं अति निः
फल जो तेरो क्रोध ताकरि तदु खिही पावतु हो तातें या रूठे क्रोध तें रहित होऊ अरु रति समय विषें जो दीनता कृष्ण
ताहि छोडि अरु सावधान होऊ अरु तेरी बाल अवस्था ताको जो बुद्धि ताहि तु तजि ७ श्रीकृष्णाय नमो नमः ७२

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीकृष्ण कहत है। अरी राधा तू मेरे वक्षस्थल विषै आपने कुचकलशनि राषि अरु मेरे उपज्यो जो कामजनित संतापहि
दूरि करि सु जहां संताप है। कहत हो कलशनि धरि शीतलता होइ यह जु है। कैसे है तेरे कुचकलश। परिरंभण ऐसो जो है आ-
लिंगन ताके निमित्त जो उत्साह ता करि सन्मुख कै रहे हैं। अरु भयो है रोमांच चिन्ह के विषै अरु बड़े दुःख करि पा-

व प्रियपरिरंभणरभसवलितमिव पुलकितमतिदुरापं मदुरसि कुचकलशं विनिवेशय शोषय मनसि-
जतापं ध अधरसुधारसमुपनय भामिनि जीवय मृतमिव दासं त्वयि विनिहितमनसं विरहानलदग्धं वपुषमवि-
लासं ५

इयत है। ४ अब श्रीकृष्ण कहत हैं भामिनि कहै कामकला विषै चतुर ऐसी राधा तू आपनो अधरामृत मोहि देक-
रि जिवाइ हो। कैसो हों तेरो दास हो अरु तेरै वियोग तैं मृतक सौं ह्वै रह्यो हो। बहुरि कैसो हौं हो तो विषै राख्यो है म-
न जिन अरु विरहाग्नि करि दग्ध भयो है वपु जाको ताही तैं निष्फल ह्वै रह्यो हैं ५ श्रीराधागोपीनाथजी सहाय

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गी॰गो॰ वऊश्रीकृष्णकहतहैशशिचंद्रमासमानहैमुषजाको ऐसीश्रीराधामणिजटितजोहैरसनागुनछुद्रघंटिकाकेसमा
७२ नकंगनिपाइजोरतिसमयकेशब्दतिन्हहिंकरिअरुमेरैजोदोऊकर्णतेरेविरहमेंअतिदुःखितकेरहैहैंतिनहिंर
तिसमयकोशब्दसुनाइकरिसुखदेहि कैसेहैंमेरेदोऊकर्ण पिकजोहैकोकिलातिनकोजोरुतशब्दताहिसुनिकरिअ

शशिमुखेमुखरयमणिरसनागुणमनुगुणकंठभिनादं श्रुतियुगलेपिकरुतविकलेममशमयचिरादव पुट
सादं मामतिविफलरुषाविफलीकृतमवलोकितमधुनेदं मीलितलज्जितमिवनयनंतवविरमविसृजर
तिखेदं ७

तिबेकलनएहै ह श्रीकृष्णकहतहैं श्रीराधाएजोतेरेनेत्रतेअबहिदेषतलाजकरतहैं होकैसोहों अतिनिः
फलजोतेरोक्रोधताकरितदुखिहीपावतुहो तातेयारूठेकोधतेरहितहोऊ अरुरतिसमयविषैजोदीनता कृष
ताहिछोडिअरुसावधानहोऊ अरुतेरीबालअवस्थाताकीसोबुद्धिताहितुतजि ७ श्रीकृष्णायनमोनमः ७२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पदपद्यप्रतिकह्यो है मधुरिपु श्रीकृष्णकोविनोदहर्षजाविषैं ऐसोयह श्रीजयदेवकरिकह्योजोगीतसोरसिकजनन्तु
देखिकैजनतिन्हंहि रतिरसजनितजो आनंदताहिउपजायो ८ कविकहतुहैं श्रीराधाकृष्णकौंपरमसुषदसुरता-
को आरंभहोतुभयो जासुरतारंभविषैदृढ आलिंगनमैंरोमांचकरि विघ्नकीनोकहाहूतनोरोमांचभयोजो आलिं

श्रीजयदेवभणितमिदमनुपदनिगदितमधुरिपुमोदं जनयतुरसिकजनेषुमनोरमरतिरसभावविनो
दं ८ प्रस्रूहः पुलकांकुरेण निविडाश्लेषेनिमेषेणच क्रीडाकूतविलोकितेधरसुधापानेकथानर्मभिः ॥१०॥
आनंदाधिगमेनमन्मथकलायुद्धेपियस्मिन्नभूदुद्भूतः सतयोर्वभूवसुरतारंभःप्रियंभावुकः १ श्रीकृष्ण

गनको अंतरभयो अरुजासुरतारंभमैंकटाक्षपूर्वकचितवनिकौंपलकनिकीलगनि अंतरपारतिभई अरुजा
सुरतारंभमैं अधरपानकौंकथाकेलिकरि अंतरहोतभयो अरुजासुरतारंभमैकामकलामहितसुरतजुद्धको आन
दप्राप्ति अंतरकरतिभई १

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कविकहतुहै॥ कांतज्योश्रीकृष्णअधिकसंतोषपावतहै॥ कैसेहै श्रीकृष्ण राधाजीकरिहाथसौंबांधेअरुपयोधर
निकेभारसोंपीडितकीनेहैं॥ अरुकटितटकरिताडनकीनोअरुकेशगहिहाथसौंनवाए अरुअधरमधुपानक
राइकरिमोहेतथापिसंतोषपावतभए तातेकामकीगतिबामउलटीहै २ कविकहतहै जोराधाजीतिनैंश्री कृ

दोर्भ्यांसंयमितःपयोधरभरेणापिडितःपाणिजै राविद्धोदशनैःक्षताधरपुटेश्रोणीतटेनाहतः॥ हस्तेनान
मितःकचेधरमधुस्यंदेनसंमोहितः कांतःकामपितृप्तिमापतदहोकामस्यवामागतिः २ मारांकेरतिकेलि
संकुलरणारंभेतयासाहस प्रायंकांतजयायकिंचिदुपरिप्रारंभियत्संभ्रमात् निःस्पंदाजघनस्थलीशिथि २

कृष्णजीतिदेकोंकामसंग्रामकेआरंभविषैंसाहसकरिअधिकजोविपरीतसुरतसंभ्रमकेवेगतैंआरंभकीनो त कृष्ण
वजपतोनिश्चलभए अरुबाहुशिथिलभए वक्षस्थलकांपतभयोनेत्रमूंदेतातैंस्त्रीनुकोंपुरुषरसकहांतैंसिद्ध ७४
होय ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

कविकहतुहैं एजोकामकेपांचशरअतितीक्ष्णएतेपतिजोहैंश्रीकृष्णतिन्हकेनेत्रमेंलगे अरुवेध्योमनुयहआश्च
र्यहोतभयो (एपांचशरकोनेत्रमेंलगेअरुबेध्योमनुयहआश्चर्यहोतभयो) सुपांचशरकौंनतेकहतहैं एकतो
नखक्षतनतुकराधाजीकोवक्षस्थलदूसरोनिद्राकरिआरक्तनेत्र तीसरोपानतेंगईहैंललोहीजिन्हकीऐसे

लिद्दोर्वक्षिरुत्कंपितं वृद्धोमीलितं मज्ञिपोरुषरसः स्त्रीणांकुतः सिद्धतिः ३ तस्याःपाटलपाणिजांकि
तमुरोनिद्राकषायेदृशौनिर्धौताधरशोणिमाविलुलितस्रस्तस्रजोमूर्द्धजाः कांचीदामदरश्लथांचल
मितिप्रातर्निबातैर्दृशोरेभिःकाममशरैस्तदद्भुतमभूत्पत्युर्मनःकीलितं ४ श्रीराधागोविंदायनमोनमः

अधर चोथोकंपतभएताहीतेंगिरतहैंफूलजिन्हतें ऐसेकेश पंचमकछूयकशिथिलहैअंचलजाविषे
ऐसोवस्त्रएपांचशरतेंश्रीकृष्णजीनेत्रनिमेंलगेअरुवेध्योमनयहअचिरजुहोतुहै ४ श्रीराधागोपीनाथजी

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

गी०गो० ७५

कविकहतुहैं ऐसेजोहरितेतुम्हारीरक्षाकरऊ॥ कैसेहैंहरिराधाजीकोजोअंगतिनकोजोअग्रतिन्हपरचंचलहैं नेत्रजिनके॥ कैसीहैंराधाजी इहिभांतिपूर्वकथानिसु कैसीहैंपूर्वकथा श्रीकृष्णकहतहैं अहोसुंदरीराधाजी

त्वाम प्राप्यमपिस्वयंवरपरांक्षीरोदतीरोदरे शंकेसुंदरिकालकूटमपिवन्मूढोमृडानीपतिः इत्थंपूर्वक थाभिरन्यमनसोविक्षिप्यवामांचलंराधायास्तनकोपरिचलंनेत्रोहरिपातुवः ५ श्रीमद्राधागोविंद २

रससमुद्रकेतीरमेरोवरणकरिवेकोंउद्यतभईजोतुम्हतिन्हहिविनुपाएबिझिकरिमहारुद्रविषपानकरतभएय हजोपूर्वकथाताहिसुनिकरिडुचितिभईतबअंचलदूरिकरिकैराधाजीकेअंगनिदेषतभए ५ श्रीकृष्णाय॥ कृष्ण ७५

श्रीः कविकहतुहे ऐजोराधातथापिश्रीकृष्णकेमनहिंसंतुष्टकरतिहै कैसीहैराधाजी हस्तकरिअंगअरुजघ
नतकोलद्यपिकरिआपुनोरूपदेषतिहै सोरूपकैसोहै केशछूटेहै अरुजोघूघरवारेकेशज्योंछिटकिरहे

आलोलः केशपाशस्तरलितमलकैः स्विद्लोलौकपोलौ स्पष्टादष्टाधरश्री कुचकलशरुचा हारिताहा
रयष्टिः कांचीकांचिद्गताशांस्तनजघनपदंपाणिनाछाद्यसद्यः पश्यंतीमात्मरूपं तदपिविलुलितस्रग्धरे
यं धिनोति ६

हे कपोलनपै अरुश्रमकरिकैकोपलनपै प्रस्वेदसोपसीजेहै अरुषंडितजेअधरतेप्रगटदेषियतहै स्तनकीकां
तिकरिमोतिनकेहारदूरिकीएहै जद्यपिकांचीजोरसनासोकामकूंओरगहीहै तथापिकृष्णकेमनहीहरैतुहैराधा
६

गी॰गो॰ ७६ कविकहतुहैं हरिणीके शैनेनजाके ऐसीहैनाइकाताकेमुषकोधन्यपुरुषपानकरतुहै कैसीहैनाइका का
मूर्तिउपजीजोउत्साहताते चंचलजोकुचतिन्हकोजो आलिंगनताते नयोजो हर्षकोउत्कर्षताते आलसउपज-
ज्योताकरि अतिशिथिलशरीरजाको मुषकैसोहै कछूकमूंदैहैनैनजाविषै बक्रअरिसुंदरहैहास्यजाविषै

ईषन्मीलितदृष्टिमुग्धहसितंसत्कारधारावृशाद्व्यक्ताकुलकेलिकाकुविकशद्दंतांशुधौताधरं स्वासो
न्नद्धपयोधरोपरिपरिष्वंगात्कुरंगीदृशो हर्षोत्कर्षविमुक्तनिःसहतनोर्धन्यो धयस्याननं ७ कृष्ण

वक्रअरिमुखकमलकैसोहै कामकोजोआधिक्यताकेवशतेजो अतिआकुलकेलिताकेलिमेंजोकाकुकहियै कृष्ण ७६
चतुराईकेवचनभयेतिन्हतैंप्रगटभईजोदंतनिकीकिरणितिन्हकरिशोभितहैअधरजाविषै ७ श्रीकृष्ण

अबराधाजीसुरतकेअंतविषैंआदरजुक्तआनंदसहितगोविंदजीसौंआगिलीअष्टपदीकरिकहतिहैं गोविंदजी
कैसेहैं अतिसंतुष्टहैं राधाजीकैसीहैं अतिषेदजुक्तहैं अंगजिन्हके ८ हृदयकौंआनंदकेदेनहारं ऐसेजोजदु
नंदनश्रीकृष्णजीतिनकेक्रीडाकरतसमतश्रीराधाजीकहतिहैं अहोजदुनंदनश्रीकृष्णचंदनसमानअतिशीत

अथसहसासुप्रीतं रतातेनितान्तखिन्नांगी राधाजगादसादरमिदमानंदेनगोविंदं ८
कुरुयदुनंदनचंदनशिशिरतरेणपयोधरे मृगमदपत्रक
मत्रमनोभवमंगलकलशसहोदरे निजगादसायदुनंदने क्रीडतिहृदयानंदने

लजोतुम्हारेहस्ततिन्हकरिमेरेपयोधरतिविषैंमृगमदजोहैकस्तूरीताकेपत्रककहिजेचित्रतिन्हहिलिषेकै
सेहैंमेरेपयोधरमनोभवजोहैकामताकौंमंगलकरिवेकौकलशसमानहैं १ श्रीराधागोविंदोदेवोविजयति

गी०गो० ११ श्रीराधाजी कहति है॥ अहो कृष्ण तुम्हारे चुंबनते फैल्यो है कज्जल जिन विषें ऐसे जो मेरे नेत्र तिन हि तुम्ह आपने
हस्तकरि सुधारहु कैसे है मेरे नेत्र अलि जो है भ्रमर तिन की शोभा हि जीती है वहुरि कैसे हैं नेत्र रतिनाय
क जो है कामता के जो सायिक बाण तिन्हहि प्रेरत हैं सो कहा जिनकी आज्ञा तें काम बाणनि छोडरत है २

अलिकुलगंजनसंजनरतिनायकसायकमोचने त्वदधरचुंबनलंबितकज्जलमुज्ज्वलय प्रियलोचने
२॥ नयनकुरंगतरंगविकाशनिरासकरश्रुतिमंडले मनसिजपासविलासधरेशुभवेशनिवेशयकुंडले
२

श्रीराधाजी कहति हैं परमसुंदर है जे पजिनको अहो ऐसे कृष्ण मेरे कर्णनि विषैं कुंडल पहरावहु कैसे हैं मेरे क
र्ण मनसिज जो है कामता को जो पाश ता के विलास हि करै हैं सु कहा कर्णनते होइ काम की प्राप्ति है मानहु ताही कृष्ण
ते नेत्र जो भए कुरंग हरण तिनके जो तरंग कटाक्ष तिन्हहि रोकि राखत हैं २ श्रीमदनमोहनलाल देवो विजय ७१

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राधाजीकहतिहै अहोकृष्णमेरोअतिसुंदरजोमुखतापरविथुरेजोअलकतिन्हहिसंवारऊ सोकैसेहैअलकमेरे
जोमुखपरजिनहिदेषिकरिभ्रमरआवतहै सोकाहेतेस्यामअलकहैतिन्हहिभ्रमरआपनीजातिजानिकेआ
वतहै कैसोहैमेरोमुख जीतीहैकमलनिकीशोभाजाकरि अरुनिर्मलहै। वक्रकैसेहैअलकारतिश्रीअको

भ्रमरचयंरचयंतमुपरिरुचिरंसुचिरंममसंमुखे जितकमलेकमलेपरिकर्मयनर्मजनकमलकंमुखे ४
मृगमदरसवलितंललितंकुरुतिलकमलिकरजनीकरे विहितकलंककलंकमलानमविश्रमितश्रमज
लशीकरे ५

प्रगटजनावतहैं ४ राधाजीकहतिहैं कमलसमानहैमुखजिनको ऐसेअहोकृष्णमेरोललाटजोचंद्रमाताविषै
षैमृगमदजोकस्तूरीताकरितिलककरऊ कैसोहैतिलक ललितकहैमनोहरजोहै वक्ररिं कीयोहैकलंककी
शोभाजाकरि सोकहा ललाटचंद्रमाताविषैकलंकचाहिजैसोकस्तूरीकोतिलकहैमानऊ कैसोहैललाट दूरिभए
हैप्रस्वेदकणजाते ५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राधाजी कहति है। मानके देन हारे ऐसे अहो कृष्ण मेरे अति रुचिर जो है चिकुर केश तिन विषे फूल निगु हे है कैसे है के
श काम की जो धुजा ता के चवर है। मानकुं वक्रि कैसे है केश रति केलि विषे बूटे है अरु अति शोभा हि पावत
है वक्रि कैसे है केश शिखंडी जो मयूर तिन की जो पिछ ताकी शोभाहि जीतत है ६ राधाजी कहति है अति उ

ममरुचिरे चिकुरे कुरु मानद मानसजो धुजचामरे रतिगलिते ललिते कुसुमानि शिखँशिखंडकडामरे ६ ३
सरस घने जघने मम शांबर दारण वारण कंदरे मणि रसना बसना भरणानि शुभाशय वासय सुंदरे ७॥

दारहे चित्तजित को ऐसे अहो कृष्ण मेरे अति सुंदर जो घन कटि स्थलता विषें मणि जटित छुद्र घंटिका अरु बस
न वस्त्र अरु और आभूषण तिन हि पहरावकु सो कैसे है मेरे जघन अति सरस अरु अति स्थूल है वक्रि कै
से हैं मेरे जघन सबल दारुण जो है काम सेई जो जयो वारण हस्ती ताको है वास जा विषें ७ श्रीमद्राधागोविंददेवो: कृष्ण ७८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीजयदेवकबिकथितज्योयहगीतसोंकसोहैरूपबचनताबिषैदयाजोक्तमनुराषक्र केसोहैवचन श्रीहरिके
चरणनिकोजोस्मरणसोईजोजयोअमृतताकरिकलिजुगकेबिषाहदूरिकरैहै अरुभक्तिनिकौजयकोदेन
हारोहैं अरुआनन्दघनहै ८ कविकहतिहैराधाजीकहतिभईअहोरुस्ममेरेकुचनिपरचित्रलिषक्रु अरु

वे श्रीजयदेवभणितजयदेसदयंहृदयंकुरुमंडने हरिचरणस्मरणामृतनिर्मलकलिकलुषैज्वरखंडने
८ रचयकुचयोश्चित्रंपत्रंकुरुष्वकपोलयोर्घटयजघनेकांचीमंचस्रजाकवरीभर कलयवलयश्रे
णीपाणौपदेकुरुनूपुराबितिनिगदितःप्रीतःपीतांवरोपितथाकरोतु १ श्रीमद्राधागोविंदायनमः

कपोलनिकस्तूरीपत्रलिषक्रु अरुजघननिक्षुद्रघंटिकाबांधक्रु अरुफूलनिकीमालानिकरिमेरेकेशनिकरि
शोभितकरक्रु अरुहस्तनिकंकणपहिरावक्रु अरुमेरेचरणनूपुरनिकरिशोभितकरक्रु श्रीपीतांबरजीऐसेही
करतभये१

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गी०गो०
७९

कविकहतुहै उपजोकामजिनह्कैं ऐसेजोहरितेतुम्हारीरक्षाकरऊ कैसेहैहरि सेजकीओरकीनोजोशेषना
गताकेफणनिकीमणितिनमेप्रतिबिंबतभएहैं सुप्रतिबिंबनहोइहैंशणपलोटतजोहैलक्ष्मीजीतिन्हहि २

पर्यंकीकृतनागनायकफणाश्रेणीमणीनांगणे संक्रांतप्रतिबिंबसंवलनयाबिभ्रद्वपुःप्रक्रियां पादांभो
रुहधारिवारिधिसुतामक्ष्णांदिदृक्षुःशतैःकायव्यूहमिवाचरन्नुपचितान्कूतो हरिः पातु वः २ श्रीकृष्ण

बहुतनेत्रनिकरिकैबिबेकोंबहुतदेहधरेहैमानहुं सेसनागकेसोहै परमपरिपूर्णप्रभुताकोजोनामताहि
सहस्रमुखकरिशिवसनएरतहै ताकोंअजहुंलगिपारकोंपावतनभएहै ऐसेहैश्रीराधागोविंददेवसो
नाकनकीरक्षाकरहु २

हस्त
७९

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीजयदेवपंडितजेकवितिन्हंकेगाइवेमेचतुराईहै अरुजोश्रीभगवानजीकोस्मर्ण अरुजोशृंगारकोजिवि
वेकसंयोगवियोगकीरचनाहै अरुकाव्यकरिवेकोवलहै सोसबपंडित आनंदवर्द्धकयागीतगोविंदहिहै

यद्गांधर्वकलासुकौशलमनुध्यानंचयद्वैष्णवं यच्छृंगारविवेकतत्त्वरचनाकाव्येषुलीलायितं तत्सर्वंजयदे
वपंडितकवेः कृष्णैकतानात्मनः सानंदाःपरिशोधयंतुसुधियःश्रीगीतगोविंदतः ३

रिविचारिसुद्धकरहु कैसेहैजयदेवकवि श्रीकृष्णचरणनिमैंएकाग्रलाग्योहैमनजिन्हको

अपूर्ण
अन्त का थोड़ा अंश नहीं है

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पाण्डुलिपिः समाप्ता

MANUSCRIPT ENDS

ختم شد

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi